सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

• वर्ष : 12 • • अंक : 3 • • 5 जून : 2015 • • मूल्य : 20₹ •

इचलकरंजी

स्वर्णिम चातुर्मास

चातुर्मास विशेषांक

गच्छाधिपति चादर समारोह की स्वर्णिम झलकियाँ

गच्छाधिपति बनने पर बधाई देती विदुषी साध्वी सुलोचनाश्रीजी म. आदि श्रमणी मण्डल

'गणाधीश' पद की चादर ओढ़ाता अखिल भारतीय खरतरगच्छ महासंघ

स्वर्णिम चातुर्मास
इचलकरंजी २०१४

हमारे परिवार के गौरव
पूज्य गच्छाधिपति उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
कुल दीपक मनितप्रभसागरजी म.सा.
पर अभिनंदन कुल दीपिका श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. आदि
इचलकरंजी चातुर्मास पर
हार्दिक वंदन...अभिनंदन
गच्छाधिपति बनने
पर हार्दिक वंदन...

शुभाकांक्षी

बाबूलाल-कमलादेवी, रमेशकुमार-मधुदेवी
मंथन, मेहा
एवं समस्त लूंकड़ परिवार
इचलकरंजी–मोकलसर

हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें सम्पूर्ण चातुर्मास कि
साधर्मिक भक्ति का लाभ प्राप्त हुआ

भगवान महावीर

जो उ परं कंपंतं, दट्ठूण न कंपए कढिणभावो ।
एसो उ निरणुकंपो, अणु पच्छाभावजोएणं ॥

-बृहत्कल्पभाष्य १३२०

जो कठोर-हृदयी दूसरे को पीड़ा से पीड़ित देखकर भी प्रकंपित नहीं होता, वह निरनुकंप (अनुकंपा-रहित) कहलाता है । चूंकि अनुकंपा का अर्थ ही है- काँपते हुये को देखकर कंपित होना।

अनुक्रमणिका

1. इचलकरंजी चातुर्मास : एक अविस्मरणीय कालखण्ड	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	05
2. धरा धन्य हो गयी	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	07
3. एक स्वर्णिम दस्तावेज	साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.	09
4. चातुर्मास का रंग	माणकचंद ललवाणी	11
5. इचलकरंजी : स्वर्णिम चातुर्मास	साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.	12
6. एक पावन गंगा	रमेश बी. लुकंड़	57
7. कर्म निर्जरा से मोक्ष मार्ग पर	सम्पतराज संकलेचा	59
8. संघ का परम सौभाग्य	रमेश भंसाली, समदड़ी	61
9. वीराने में बहार	डॉ. प्रेमलता बाबूलाल ललवानी	63
10. जीम जनतदपदह चवपदज वि उिल स्पमि	च्तवर्णिूमजं चतमतां स्संूदप	65
11. स्वर्णिम चातुर्मास की स्वर्णिम झलकियाँ	मनन लुकंड़, मेहा लुकंड़	66
12. समाचार दर्शन	संकलन	68
13. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	78

दिव्य आशीष
आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

पावन निश्रा
पू. गच्छाधिपति उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

विशेषांक लेखन
पू. साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा.

विशेषांक संयोजन सम्पादन
प. पू. मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मन्दिर
मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 12 अंक : 3 5 जून 2015 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया
महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन	: 7,000 रूपये
रंगीन अन्दर आधा पृष्ठ	: 3,500 रूपये
सामान्य पूरा पृष्ठ	: 3,000 रूपये
सामान्य आधा पृष्ठ	: 1,500 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

स्वर्णिम चातुर्मास
इचलकरंजी २०१४

इचलकरंजी चातुर्मास : एक अविस्मरणीय कालखण्ड

इचलकरंजी महाराष्ट्र का जाना माना क्षेत्र है। वस्त्र उद्योग के कारण यह प्रसिद्धि को प्राप्त है। जैन समाज के घर यहाँ बडी संख्या में नहीं है। उसमें भी खरतरगच्छ की परम्परा के लोग तो कम ही संख्या में रहते हैं।

इस क्षेत्र में आज से लगभग 10 वर्ष पूर्व आना हुआ था। महावीर स्वामि जिनमंदिर एवं मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा का पावन अवसर था। लगभग 10 से 15 दिन हमारा प्रवास रहा था। प्रतिष्ठा के उन पावन क्षणों का स्मरण हृदय को परम आनन्द से भर देता है। जो भक्ति रही... जो व्यवस्था रही... जो उल्लास व आनंद देखा... कार्यकर्ताओं की जो निष्ठा देखी... आगेवानों का जो समर्पण देखा... अपने आप में अनुमोदनीय था। इस कारण चातुर्मास की सफलता में तनिक भी संदेह नहीं था।

दादावाडी संघ हमारा अपना संघ है। अधिकतर लोग सिवांची और बाडमेर क्षेत्र के हैं। इसलिये प्रवेश के दिन मैंने कहा भी था- यहाँ बाडमेर और सिवांची के लगभग बराबर बराबर घर है। हम साधु साध्वी भी बराबर बराबर ही लाये हैं। चातुर्मास में तीन साधु एवं एक साध्वीजी सिवांची के हैं तो तीन साधु और एक साध्वीजी बाडमेर के हैं। इचलकरंजी का यह चातुर्मास अपने आप में अद्‌भुत और आश्चर्यकारी रहा। यहाँ के संघ ने, कार्यकर्ताओं ने चातुर्मास को सफलतम बनाने के लिये रात दिन एक कर दिये।

मेरे सांसारिक चाचाजी का परिवार जो कि मेरे शिष्य एवं अनुज मुनि मनितप्रभ एवं साध्वी नीलांजना के माता पिता भाई हैं। वे यहाँ के प्रवासी हैं। साधर्मिक भक्ति का लाभ भी उनकी ओर से ही लिया गया था। हमारे मन में था कि मनित प्रभ एवं नीलांजना का गृहगांव होने के कारण एक चातुर्मास यहाँ होना जरूरी है। विनंती भी काफी समय से चल रही थी। पर जब यहाँ का प्रवेश देखा... लोगों का उत्साह देखा... बिना किसी गच्छ परम्परा भेद के भक्ति का प्रवाह देखा, तो मन अनुमोदना किये बिना न रहा।

यहाँ के चातुर्मास में हम सभी का एक दिन भी ऐसा नहीं बीता जब हमें पू. माताजी म. रतनमालाश्रीजी म., बहिन विद्युत्प्रभा की याद न आई हो। साथ होते तो शासन के नभ में उदित होने वाले चंद्रमाओं की गणना मुश्किल हो जाती। एक अलग ही माहौल होता... एक अलग ही फिज़ा होती।

बहिन विद्युत्प्रभा को अपने यश... अपने मान... अपने नाम की जरा भी चिंता नहीं है। उसकी सारी ऊर्जा, क्षमता, विद्वत्ता, योग्यता सब कुछ मुझे ही समर्पित है। उसका अपना कोई निर्णय भी नहीं होता। मेरे हर निर्णय पर वह केवल स्वीकृति की मुहर ही नहीं लगाती, अपितु उसे क्रियान्वित करने के लिये अपनी इच्छाओं का निरोध करती है। निश्चित रूप से एक बहिन के रूप में उसे पाकर मैं सदा सदा धन्यता का अनुभव करता हूँ।

आज मैं कलम हाथ में लेकर अपने इन भावों को कागज पर उतार रहा हूँ, संयोग से आज ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी का दिन है। आज उसका जन्मदिन है। वह आज 52 वर्ष को पूर्ण कर 53वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। मेरी शुभकामनाऐं सदा सदा उसके साथ है। इस चातुर्मास की सफलता में सबका अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मेरे साथी शिष्य मुनियों के पूर्ण सहयोग एवं साध्वी डॉ. नीलांजना आदि के पुरूषार्थ ने इसे सफलता के शिखर पर पहुँचाया है।

प्रवचन तो साधु हर क्षेत्र में देता है। लोग कम हो तो भी... अधिक हो तो भी! मैं भी प्रवचन देता रहा हूँ। पर यहाँ जो श्रृंखला का निर्माण हुआ.. जो प्रवाह की तीव्रता रही... जो भावों का स्पन्दन रहा... जो श्रोता-वक्ता की एकत्व मानसिकता रही, वह अनूठी थी। यहाँ के संघ व कार्यकर्ताओं का श्रद्धा भाव..... साधर्मिक भक्ति भाव... अहोभाव... वैयावच्च भाव.... सेवा भाव... हर दृष्टिकोण से सराहनीय... अनुमोदनीय रहा।

मैं कामना करता हूँ कि इचलकरंजी दादावाडी संघ हर क्षेत्र में खूब विकास करें... उन्नति को प्राप्त करें... चहुँमुखी विकास हो... धर्म भावना में अभिवृद्धि हो!

With Best Compliments from

स्वर्णिम चातुर्मास
इचलकरंजी २०१४
पर अभिनंदन

मांगीलाल छाजेड़

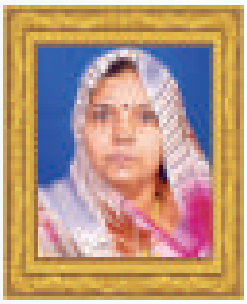

सौ. कमलादेवी

Mangilal Chajjer : 094220 44868
Mahaveer Chajjer : 097651 51305

MANGILAL LALIT KUMAR & CO.

M TEX INDIA

MAHAVEER TEX INDIA

Whole sale Cloth Merchant

12/172, Bunglow Road, behind ICICI Bank
ICHALKARANJI - 416 115

शुभेच्छुक
मांगीलाल–सौ. कमलादेवी, ललित–सौ. रुमा, सोनल छाजेड़ परिवार

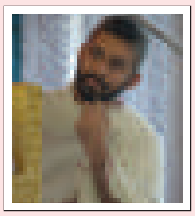

मुनि मनितप्रभसागर

धरा धन्य हो गयी

इचलकरंजी से मेरा काफी पुराना परिचय रहा है। यद्यपि यह न तो मेरी जन्मभूमि है, न कर्म भूमि और धर्म भूमि है तथापि मेरे परिवार से जुडी होने के कारण 'इचलकरंजी' नाम मैं बचपन से ही सुनता रहा हूँ। बाल्यावस्था के प्रारंभिक लगभग 2-3 वर्ष यही की सुखद, शीतल और शांत फिजाओं में बीते हैं। बाद में कभी गर्मी की छुट्टियों में मनोरंजन के लिये तो कभी व्यवसाय प्रशिक्षण प्राप्ति के लिये जब-जब आना-जाना होता रहा।

दीक्षा के दो वर्ष बाद पूज्यश्री के साथ दादावाडी की प्रतिष्ठा अंजनशलाका पर आना हुआ, उसके ठीक दस वर्ष बाद चातुर्मास के लिये आना हुआ।

इचलकरंजी का वातावरण जितना सुखद, ठण्डा, प्रशान्त और माधुर्य से परिपूर्ण है, यहाँ के लोग भी उतने ही सरल, श्रद्धासम्पन्न, धर्मप्रिय और अपनत्व से भरे हैं।

संवत् 2014 का यह स्वर्णिम चातुर्मास कहने भर को स्वर्णिम नहीं अपितु हकीकत में जीवन के धरातल पर स्वर्णिम संभावनाओं को लेकर अवतरित हुआ। पारस-रतन के नंदन 'मणि' जीवन कला की नयी प्रभा को लेकर आये और अंधेरे में ठोकर खाते जीवन को चिन्तन, सदाचरण और अनुभव की नयी उजास से भर गये।

भारत भर के कितने ही संघों का प्रश्न रहा कि शासन की उज्जवल मणि 'मणिप्रभ' का चातुर्मास जब बडे-बडे संघों को नहीं मिल जाता है, तब इचलकरंजी जैसे छोटे संघ को उनका बडा चौमासा कैसे मिल गया?

मैंने कहा-माना कि इचलकरंजी में मुम्बई महानगर जैसी चमक-दमक नहीं है, दिल्ली जैसी सरकारी हवेलियाँ नहीं है, कोलकाता और चेन्नई जैसी ऊँची मीनारे नहीं हैं पर यहाँ के लोगों की श्रद्धाभावना का कद आकाश की तरह असीम है। उनमें जीवन को जानने-समझने-जीने की तमन्ना और धर्म पर जो अखूट-अटूट विश्वास है, वह नगरों-महानगरों में देखने को नहीं मिलता। यहाँ एसल वर्ल्ड, वृंदावन गार्डन जैसे आकर्षक केन्द्र भले न हो परन्तु धर्म, प्रेम और विवेक का जो आकर्षण है, वह आह्लादकारी ही नहीं, आश्चर्यजनक भी है।

वास्तव में इस चातुर्मास का सभी ने भरपूर लाभ उठाया। किसी ने जीवन- दृष्टि को बदला-परखा तो किसी ने व्यवहार की खामियों का परिमार्जन किया। पूज्यश्री के प्रवचनों की आभा-प्रभा से इचलकरंजी का जन-जन ही नहीं, कण-कण भी आलोकित हुआ धर्म की गंगा में अन्तर्मन का ही नहीं, जीवन और चिन्तन भी अभिष्नात हुआ।

प्रतिवर्ष चातुर्मास होते हैं, आते और जाते हैं पर जीवन में परिवर्तन का प्रारूप न हो तो सब कुछ आधा-अधूरा रह जाता है।

यह चातुर्मास इचलकरंजी के लिये वरदान स्वरूप था। प्रवचन आगम वाचना, तत्त्वज्ञान शिविर में अपूर्व उपस्थिति रही तो संयम उपकरण वंदनावली, अठारह पाप स्थानक आलोचना, अमावस को चाँद उगायो की प्रस्तुति भी अविस्मरणीय रही। मेरा यह तेरहवाँ चातुर्मास था पर जैसे तत्त्वरसिक मैंने यहाँ देखे, वैसे कही भी नहीं देखे।

यहाँ चारों महिने भव्य उपस्थिति रही तत्त्वज्ञान की प्रारंभिक पोथियों के बाद श्रोताओं की जिज्ञासा यहाँ तक आगे बडी कि जीव विचार, नवतत्त्व, दण्डक प्रकरण, कर्म पदार्थ, गुणस्थानक तक का गहन अभ्यास सम्पन्न कर लिया।

यह चातुर्मास एकता का पैगाम था। प्रवचन पाण्डाल में, दर्शन-वंदन-चरण स्पर्श में न तो जैन-जैनेतर का भेद था, न दिगम्बर और श्वेताम्बर का फर्क था। न मंदिरमार्गी-तेरापंथी-स्थानकवासी का भेद था। पूज्यश्री 'अवढरदानी' की तरह बरसे और जीवन के मरूधर उपवन बना गये।

निश्चित ही यह चातुर्मास लोगों के लिये ही नहीं, हमारे लिये भी स्वर्णिम सिद्ध हुआ। संघ ने हमसे जितना लिया, इससे कई गुणा ज्यादा श्रद्धा, अपनत्व, प्रेम, वात्सल्य और संवेदना की फुहार में भिगोया।

सकल श्री संघ के प्रति पुनः पुनश्च यही अपेक्षा है कि इस चातुर्मास में उप्त बीज का स्वाध्याय, श्रद्धा और सदाचार के सुगंधित जल से सिंचन करके जीवन को बरगद का आकार देगा तथा परम शांति को प्राप्त करेगा।

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 6 एवं पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 10 चेन्नई से उग्र विहार कर रेनिगुण्टा, कडप्पा, आदोनी होते हुए सिंधनूर पधारे। विहार व्यवस्था श्री चेन्नई से लेकर कडप्पा तक श्री सुरेन्द्रजी कोठारी खजवाणा-चेन्नई वालों ने की। वे विहार में लगातार साथ रहे और सारी व्यवस्थाऐं की।

सिंधनूर में दीक्षा बडी दीक्षा, अंजनशलाका प्रतिष्ठा, चादर समारोह आदि कार्यक्रमों की संपन्नता के पश्चात् ता. 1 जून 2015 को सिंधनूर से विहार किया है। वे पार्श्वमणि तीर्थ की स्पर्शना करते हुए ता. 8 जून को रायचूर पधारेंगे। जहाँ नूतन दीक्षित साध्वी श्री प्रियसूत्रांजनाश्रीजी म. को बडी दीक्षा प्रदान करेंगे। वहाँ से विहार कर 17 जून तक हैदराबाद पधारेंगे। वहाँ दो दिवसीय स्थिरता के पश्चात् करीमनगर होते हुए चन्द्रपुर पधारेंगे। वहाँ से विहार कर 19 जून को राजनांदगांव होते हुए ता. 25 जुलाई 2015 को चातुर्मास हेतु रायपुर में प्रवेश करेंगे।

संपर्क :

पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

द्वारा श्री सुरेशजी कांकरिया

सुमीत ज्वेलर्स

मालवीय नगर, पो. रायपुर- 492001 छत्तीसगढ

संपर्क- मुकेश- 09784326130

स्वर्णिम चातुर्मास
इचलकरंजी २०१४

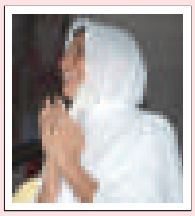

साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी

एक स्वर्णिम दस्तावेज

जहाज मंदिर के 'इचलकरंजी चातुर्मास विशेषांक' का लेखन-संपादन और प्रकाशन मेरे मन को अतीव आनंदित कर रहा है। इचलकरंजी मेरे बचपन की यादों से जुड़ी नगरी.... पैतृक पृष्ठभूमि से जुड़ी नगरी....।

एक सपना..... जो इचलकरंजी संघ ने देखा। पुण्य घड़ी आयी....., धर्म नगरी का सौभाग्य जगा और एक दशक से प्रतिक्षित वह सपना साकार हो उठा, जब पूज्य गुरूदेव उपाध्याय भगवंत श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. का साधु-साध्वी मंडल के साथ 6 जुलाई, 2014 को भव्य एवं ऐतिहासिक महामहोत्सव के साथ मंगल पदार्पण हुआ।

चातुर्मास की स्थापना के साथ ही पूज्य श्री की निश्रा में एक से बढ़कर एक अलौकिक आध्यात्मिक अनुष्ठान सम्पन्न होते गये और धर्मप्राण जनता प्रत्येक अनुष्ठान से अपने आपको सर्वात्मना जोड़ती गयी।

पूज्यवर की अमृतमयी वाणी का ऐसा अचूक प्रभाव था कि गच्छ-संप्रदाय-जातिभेद को भुलाकर हर व्यक्ति पूज्यश्री की ऊर्जामयी निश्रा में दौड़ा चला आता था। चातुर्मास के अंतर्गत सम्पन्न होने वाले जप-तप साधना-आराधना, प्रवचन-प्रभुभक्ति- स्वाध्याय आदि समस्त आयोजन इतने अनूठे थे कि उनकी एक स्वर्ण-शृंखला ही बन गयी और यह चातुर्मास 'स्वर्णिम चातुर्मास' के रूप में इतिहास का अमिट और अविस्मरणीय अध्याय बन गया।

संघ ने पूज्यश्री से निवेदन किया कि इस चातुर्मास की स्वर्णिम यादों को भविष्य के दस्तावेज के रूप में संजोकर रखना चाहिए तो गुरूदेव श्री इन्कार न कर सके और उन्होंने मुझे लेखन का आदेश दे दिया।

इन्कार का तो प्रश्न ही नहीं था। मैंने 'तहत्ति' कहकर स्वीकार करते हुए लेखन प्रारंभ किया, परंतु विहार की व्यस्तता से चाहकर भी मैं समय पर इसे पूरा नहीं कर पायी। फिर भी मुझे संतोष है कि आज यह लेखन, प्रकाशन की मंजिल पा रहा है।

इस लेखन में मुझे अनुज मुनि मनितप्रभसागरजी म. का भरपूर आत्मीय सहयोग प्राप्त हुआ है। जहाँ-जहाँ आवश्यकता हुई, उन्होंने अपना समय लगाकर इसे सजाया और संवारा है। उनके लिये आभार की अभिव्यक्ति कर मैं अपने स्नेह भाव को सीमित नहीं करना चाहती। गुरूभगिनी साध्वी श्री निष्ठांजनाजी ने भी आंशिक लेखन की फेयर कॉपी तैयार करने में अपना श्रम लगाया है। इसके अतिरिक्त भी लेखन-संपादन में जिन-जिन का सहयोग प्राप्त हुआ है, उनकी मैं हार्दिक रूप से कृतज्ञ हूँ।

लेखन में मेरे द्वारा यदि कोई त्रुटि हुई हो अथवा कुछ अन्यथा लिखा गया हो तो उसके लिये मैं अंत:करण से क्षमाप्रार्थी हूँ।

गणाधीश विशेषांक का प्रकाशन हो रहा है...

पूज्य आचार्य जिनकान्तिसागरसूरिजी म.सा. के शिष्य पूज्य गणाधीश उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के 'गणाधीश' पद अभिनंदन का एक विशेषांक जहाज मंदिर जनू अंक के रुप में प्रकाशित हो रहा है।

इस अवसर पर समस्त साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका से निवेदन है कि अपने मनोभाव, लेख, कविता आदि के रुप में 20 जून 2015 से पहले हमें भिजवावें।

इसके साथ जो अभिनंदन के रुप में विज्ञापन भिजवाना चाहते हैं, वे भी शीघ्र ही अपनी सामग्री भिजवावें।

- संपादक, जहाज मंदिर कार्यालय

स्वर्णिम चातुर्मास
इचलकरंजी २०१४
पर अभिनंदन

With Best Compliments from

Group of Textile

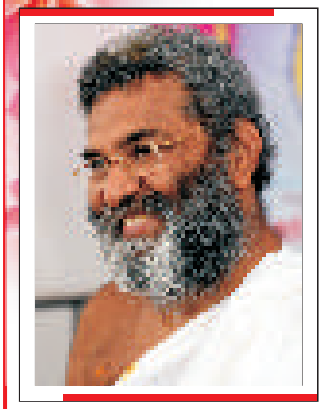

ओमप्रकाश छाजेड़ - 094224 12651

ओमप्रकाश सुनीलकुमार

10/471, आर. पी. रोड़,
इचलकरंजी-416 115,
जिला-कोल्हापूर

बाबूलाल छाजेड़
094141 23912

मरुधर मिनरल्स्

कवास बाड़मेर

पारसमल छाजेड़
093727 12306

केसरीमल बाबूलाल

20, शनिवार वार्ड,
तिलक रोड़
मालेगांव (नासिक)

स्वर्णिम चातुर्मास
इचलकरंजी २०१४

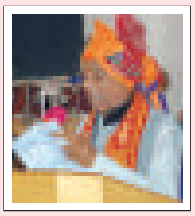

माणकचंद ललवाणी
(चातुर्मास संयोजक)

चातुर्मास का रंग

इचलकरंजी की धरा पर वर्ष 2014 का सूरज एक स्वर्णिम आभा के साथ स्वर्णिम चातुर्मास लेकर आया।

प.पू. उपाध्याय प्रवर मरूधर मणि श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. आदि ठाणा एवं प.पू. बहिन म.सा. डॉ. विद्युत्प्रभा श्रीजी की सुशिष्या साध्वी डॉ नीलांजना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का भव्य प्रवेश ता. 6.7.2014 को बडे उल्लास और हर्ष के साथ हुआ।

पूज्य श्री के पावन चरण कमल की रज से इचलकरंजी में मानो चातुर्मास में तप-साधना की और प्रवचनधारा की अनुपम लहर छा गई।

चार महीनों के अंतराल में गुरूदेव का प्रवचन बिना रूके निरंतर चला। उनकी आगम वांचना, प्रवचन शैली, और जटाशंकर तो मानो सबके दिलो-दिमाग पर सदा के लिये अंकित हो गये। चातुर्मास में तपस्या की ऐसी लहर चली जिसमें 2 मासक्षमण 7 सिद्धितप अट्ठाईयां, चिंतामणी तप, बीस स्थानक तप एवम् नवपदजी की ओलीजी की भव्य आराधना बडे ही व्यवस्थित ठंग से सुखशाता पूर्वक संपन्न हुई।

गुरूदेव के नित्य प्रवचन के दौरान सुनाया गया मलयासुदंरी चरित्र जिसमे अपने जैन धर्म के प्रति अपार श्रद्धा और कर्मो की गति न्यारी इस बारे में हमे बडे ही सुंदर ढंग से समझाया। ये स्वर्णिम चातुर्मास सच में इचलकरंजी के लिये सोने के समान चमका जिसमे दीक्षार्थियों का पदार्पण एवम् उनकी दीक्षा के मुहूर्त और प्रतिष्ठा के मुहूर्त गुरूदेव के मुखारबिन्द से प्राप्त किये गये। कई-कई जगहों से श्रद्धालु और गुरूदेव के भक्त दर्शनार्थ पधारे। संयम और जया बेन (मां और बेटे) की बेटे मुहूर्त भी इचलकरंजी संघ को प्राप्त हुआ।

लुंकड परिवार के दो फूल जो इचलकरंजी के ऐसे परम पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. एवम् प.पू. साध्वी डॉ निलांजना श्रीजी म.सा. ने अपनी भूमि पर शिविर की चार महिने अनुपम लहर चली। जिसमें कर्मग्रंथ, जीव विचार नव तत्व आदि ज्ञान दिया गया।

भक्ति गीतों से सभी को भावविभोर बनाया, गुरूदेव के सानिध्य में पर्युषण पर्व की आराधना, कल्पसूत्र वांचना, महावीर जन्म वांचना, सुंदर ढंग से तप भाव और साधना में परिपूर्ण हुआ।

चातुर्मास के अंत में पिस्तादेवी छगनराजजी छाजेड का जीवीत महोत्सव और छाजेड परिवार द्वार आयोजित छ:री पालित संघ इस स्वर्णिम चातुर्मास में स्मणीय रहा। पूरा सकलसंघ छ: री पालित संघ में चार दिन तक गुरूदेव के साथ रहा। इचलकरंजी में आयोजित गुरूदेव की बिदाई के कार्यक्रम में सकल संघ गमगीन हो गया।

श्री जैन श्वेतांबर मणिधारी जिनचन्द्रसूरी दादावाडी संघ में इस सम्पूर्ण चार्तुमास को ऐतिहासिक बनाने का जो बहुत बडा दायित्व सौपा उसको पूरी मेहनत व लगन से तन-मन-धन समर्पित होकर सबको साथ लेकर सब कमिटियों के सहयोग से सफल बनाने का पूरा प्रयास किया। फिर भी कोई गलती हुई हो तो सभ से दिल से मिच्छामि दुक्कडम।

गुरूदेव जिनशासन के सितारे,
सभी के आँखों के तारे,
इचलकरंजी की धरा फिर से पुकारे,
पुन: चातुर्मास करने आप जरूर पधारे।

इचलकरंजी : स्वर्णिम चातुर्मास

साध्वी डॉ. नीलांजनाश्री

दादावाड़ी का मनोरम दृश्य

चातुर्मास उद्घोषणा

शाश्वत तीर्थ श्री सिद्धाचल गिरिराज पर दादा आदिनाथ की छत्रछाया में श्री जिन हरि विहार में लूणिया एवं दायमा परिवार द्वारा आयोजित चतुर्विध संघ का 50 दिवसीय ऐतिहासिक चातुर्मास! प.पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की महामंगलकारी उर्जामयी निश्रा! परम पूजनीया बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. की पुनीत पावनी प्रेरणा। विशाल साधु-साध्वी मंडल। सात सौ की संख्या में आराधकों का ठाट। अनेक संघों का प्रतिष्ठा, दीक्षा एवं चातुर्मास आदि निवेदन हेतु आगमन!

इसी श्रृंखला में इचलकरंजी से शताधिक सदस्यों का चातुर्मास की विनंति हेतु आगमन। पूज्य उपाध्याय भगवंत के प्रवचन से पूर्व श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी जिनचंद्रसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट की ओर से संपूर्ण इचलकरंजी संघ द्वारा पुरजोर विनंती की गयी। तेरापंथी, स्थानकवासी, तपागच्छ, सभी

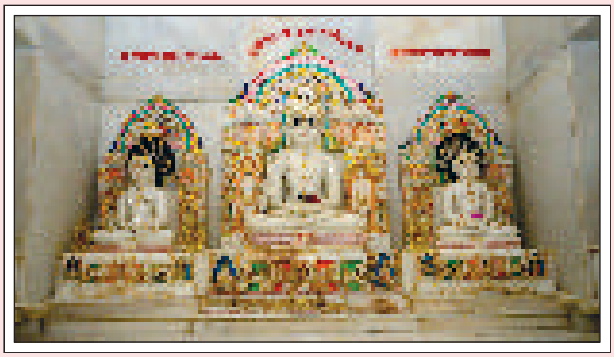

दादावाड़ी में विराजमान परमात्मा महावीर

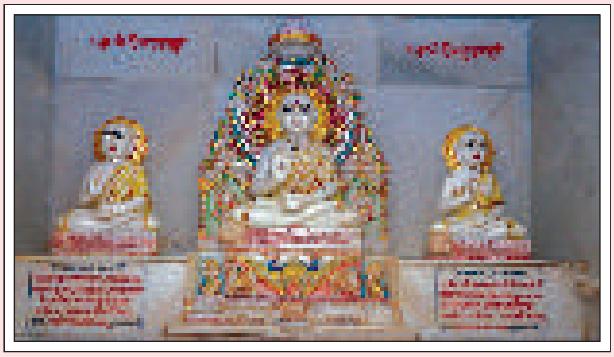

दादावाड़ी ने विराजमान मणिधारी जिनचन्द्र सूरि

संघों के प्रतिनिधियों ने भी स्वर में स्वर मिलाया। उनके स्वरों से केवल जोश ही नहीं, अपितु एक प्यास, एक तडप भी प्रकट हो रही थी! माईक पर आनेवाला हर व्यक्ति अनूठे उल्लास और उमंग के साथ अपनी भावनाओं को शब्द दे रहा था! कोई गीत से तो कोई संगीत से, कोई काव्यात्मक रूप से तो कोई उद्बोधन से। समय की सीमा थी, पर बोलने वालों की श्रृंखला लंबी होती जा रही थी। कोई प्रार्थना कर रहा था, तो कोई उपालंभ भी दे रहा था।

चातुर्मासिक निश्रा

पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य-प्रशिष्य

पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

प. पू. मुनिश्री मयंकप्रभसागरजी म.सा., प. पू. मुनिश्री मनीतप्रभसागरजी म.सा.,
प. पू. मुनिश्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा., प. पू. मुनिश्री समयप्रभसागरजी म.सा.
प. पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा., प. पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा.

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या

पू. साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म.सा.
पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रजी म.सा., पू. साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म.सा.,

वक्ताओं की कड़ी में संघ सचिव रमेश लुंकड़ भी उपस्थित हुआ। वह संपूर्ण लुंकड़ परिवार की ओर से विनंती करने के साथ अधिकार भी प्रकट कर रहा था। लुंकड़ परिवार से पांच-पांच दीक्षित रत्न संयम की साधना में गतिमान जो हैं। संपूर्ण इचलकरंजी संघ की विनंती ने गुरूदेव श्री को जैसे अंदर तक हिलाकर रख दिया था।

प्रवचन के पश्चात् सभी सदस्य पूजनीया बहिन म.सा. के पास पहुँच गये। एक ही स्वर... एक ही आवाज... आप हमारे संघ पर उपकार कीजिए और यह चातुर्मास हमें दिलाने में मदद कीजिए। मणिधारी दादावाड़ी ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री पुखराजजी ललवानी, उपाध्यक्ष श्री गौतमचंदजी वडेरा एवं सचिव श्री रमेश लुंकड़ सहित सभी ट्रस्टी बहिन म.सा. से आश्वासन हेतु निवेदन कर रहे थे। पारिवारिक अथवा हार्दिक संबंध होने से वे विशेष अधिकार भी जता रहे थे। यद्यपि बहिन म.सा. की इच्छा थी कि हमारा चातुर्मास साथ में न हो। यह चातुर्मास केवल गुरूदेव श्री आदि मुनिमंडल का ही हो, परंतु सम्पूर्ण इचलकरंजी संघ की यही भावना थी कि गुरूदेव श्री आदि मुनिमंडल एवं माताजी म.सा. बहिन म.सा. आदि संपूर्ण साध्वी मंडल के चातुर्मास की स्वीकृति हमें मिले। आखिर आश्वासन तो मिल ही गया। अब केवल उद्घोषणा शेष थी।

कार्तिक शुक्ल 6 को उपधान की माला के अवसर पर उद्घोषणा रूप स्वीकृति प्राप्त करने के लिये संपूर्ण इचलकरंजी संघ पुन: उपस्थित हुआ। संघ की भावना आसमान छू रही थी। उपधान माला के अवसर पर संघ की प्रबल भावना को देखकर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आदि बिंदुओं पर विचार करते हुए पूज्य उपाध्याय भगवंत ने मुनिमंडल व बहिन म. सहित साध्वी मंडल के चातुर्मास की उच्चस्वर से इचलकरंजी चातुर्मास की उद्घोषणा कर दी। उद्घोषणा के साथ ही संघ में उल्लास की लहर छा गयी। सभी इचलकरंजी वासी उठकर इस प्रकार नृत्य करने लगे, जैसे पांवों में घुंघरू बंध गये हों! सभी एक-दूसरे को बधाइयाँ देने लगे। एक-दूसरे को गले लगाकर, एक-दूसरे से हाथ मिलाकर अपने सौभाग्य को बधाने लगे। हर व्यक्ति के चेहरे पर चातुर्मास की प्राप्ति का आनंद सौ-सौ सूर्य की भांति दमक रहा था।

भगिनी साध्वी श्री शासनप्रभाश्रीजी म.सा. का चातुर्मास यद्यपि नंदुरबार निश्चित कर दिया गया था, परन्तु शारीरिक अस्वस्थता के कारण संभावना असंभावना में बदल गयी।

फिर वहाँ पर किसे भेजा जाये, यह प्रश्न अनेक प्रश्नों को जन्म दे रहा था।

मुझे नंदुरबार भेजने का निर्णय किया गया, परन्तु पू. बहिन म.सा. का निर्णय फिर परिवर्तित हो गया। उनका कथन था कि इचलकरंजी में तुम्हारे माता-पिता का निवास है। वे अब उम्र के अन्तिम पडाव पर हैं। अत: उनकी भावनाओं को ध्यान में रखना मेरा अपना कर्तव्य बनता है।... मैंने उनके इचलकरंजी चातुर्मास के पक्ष में अनेक तर्क प्रस्तुत किये पर

आखिरकार उनकी कर्तव्य निष्ठा ही विजयी हुई। अन्तिम निर्णय हो गया- माताजी म.सा. एवं बहिन म.सा. का नंदुरबार, शासनप्रभाश्रीजी म. का अहमदाबाद और मेरा इचलकरंजी।

पू. बहिन म.सा. के नंदुरबार चातुर्मास की सूचना से जहां नंदुरबार संघ झूम उठा, वहीं इचलकरंजी के संपूर्ण संघ में उदासी छा गयी। इचलकरंजी संघ का पू. बहिन म.सा के चातुर्मास हेतु पुनः आग्रह भरा निवेदन हुआ, परंतु स्थितियों की विकटता को जानते हुए उन्हें निरूत्तर होना पड़ा।

हम चार साध्वी जी का लक्ष्य अब इचलकरंजी था। परमात्मा, गुरूदेव एवं गुरूवर्याश्री की कृपा से लंबी दूरी निर्विघ्नता से तय करते हुए हम 5 जुलाई की शाम को इचलकरंजी की सीमाओं में पहुंच गये।

भव्य-प्रवेश

पूज्य मनितप्रभजी द्वारा मंच संचालन

Mind Management विमोचन संखलेचा परिवार द्वारा

डॉ. नीलांजना श्री जी द्वारा वक्तव्य

इचलकरंजी संघ में उल्लास का कोई पार नहीं था। अब तो प्रवेश की घड़ियां सामने ही उपस्थित थीं। मात्र एक रात बीच में थी।

6 जुलाई का मंगलमय प्रभात।

महकती फिजाएँ... जिस घड़ी... जिस क्षण का इचलकरंजी संघ को बेताबी से इंतजार था, वह चिरप्रतीक्षित घड़ी अब उनके दरवाजे पर दस्तक दे रही थी। आज का स्वर्णिम सूर्योदय पूरे नगर मे अनोखे उल्लास का संचार कर रहा था। आंखों में अनूठी चमक... होंठो पर छितरायी गुलाबी मुस्कान... चेहरे पर खिली चांदनी... हृदय में कल्लोल करती आनंद की तरंगें...। पांवों में तो जैसे नृत्य के घुंघरू ही बंध गये थे। पूज्य श्री के पदार्पण की खुशी में हर व्यक्ति तन्मय हुआ जा रहा था। इस स्वर्णिम घड़ी को निहारने के लिये न केवल इचलकरंजी अपितु विविध स्थानों से पधारे अतिथियों का भी मेला लग गया था।

चूंकि यह नगरी राजस्थान, गुजरात व दक्षिण भारत के मध्य में थी, अतः प्रत्येक क्षेत्र से भारी संख्या में संघों व लोगों का आगमन हुआ था। उन सभी के आवास-भोजन व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने के लिये संघ की ओर से अलग-अलग समितियाँ बनाकर उन्हें अलग-अलग व्यवस्थाओं का दायित्व सौंप दिया गया था। प्रवेश के अवसर पर पधारे समस्त अतिथियों की आवास व्यवस्था के लिये कई मंगल-कार्यालय, धर्मशालाएँ आदि... बुक करवायी गयी थीं।

भव्य प्रवेश का हिस्सा बनने के लिये जनता का भारी रेला उदय भवन की ओर चल पड़ा था। धवल परिधान में सुसज्ज पुरूषवर्ग, मस्तक पर राजस्थान की आन-बान-शान का प्रतीक पचरंगी साफा, और गले में झूलता जय-जिनेन्द्र का दुपट्टा प्रवेश महोत्सव में चार चांद लगा रहा था। महिलाएं चुनड़ी की साड़ी में मस्तक पर मंगल कलश धारण किये गुरूदेव को बधाने के लिये आतुर नजर आ रही थीं।

रमेश लूंकड़ द्वारा संचालन एवं उपस्थित श्रद्धालु

ललवानी परिवार द्वारा गंहुली एवं विराट शोभायात्रा

बैंड की मधुर झंकार, ढोल की कर्णप्रिय थाप और शहनाई की सुरीली स्वर लहरियाँ पूरे वातावरण को थिरकने के लिये मजबूर कर रही थीं। प्रवेश का शुभ मुहूर्त्त देखकर जैसे ही गुरूदेवश्री ने पहला कदम उठाया, पूरे जुलूस को हरी झंडी दिखा दी गयी। इन्द्र ध्वजा, अश्व के पीछे विविध प्रकार की झांकियाँ लोगों के मन को मोह रही थीं। उसके पीछे पूज्य गुरूदेव मुनिमंडल एवं विशाल श्रावक संघ के साथ धीर-गंभीर चाल में कदम आगे बढ़ा रहे थे। उसके पश्चात् क्रमशः परमात्मा का रथ, साध्वी मंडल, श्राविका संघ चल रहा था।

दादावाड़ी प्रवेश से पूर्व मणिधारी महिला मंडल, वासुपूज्य महिला मण्डल, आदर्श बहू मण्डल, अरिहंत महिला मण्डल, गुरू पुष्कर जैन बहू मण्डल, श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी प्राज्ञ जैन महिला मण्डल आदि अनेक स्थानीय मंडलों द्वारा कलश-श्रेणी बनाकर अद्भुत सामैया किया गया।

वरघोड़ा ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा था, सूरज की तपन भी बढ़ती जा रही थी। चढ़ती धूप में गुलाबजल की शीतल-सुगंधित बौछारें तन-मन को सुकून दे रही थीं। लाल गुलाल उड़ाकर हर व्यक्ति अपने हृदय के आनंद को अभिव्यक्त कर रहा था।

भव्य शोभायात्रा

नाचता जनसमूह

इचलकरंजी वासी ऐसे अद्‌भुत नजारे को आश्चर्यभरी निगाहों से निहार रहे थे। वरघोड़ा जैसे-जैसे शहर की गलियों में प्रवेश कर रहा था, मैं अपने सुदूर, सुमधुर बचपन की यादों में गोते लगा रही थी। इचलकरंजी छोड़ने के करीब 3 दशक बाद मेरा यहाँ आगमन हो रहा था। हालांकि मंदिर-दादावाड़ी की प्रतिष्ठा के अवसर पर भी आना हुआ था, परंतु वह प्रवास बहुत ही अल्पकालीन था; जब कि यह प्रवेश 4 माह की स्थिरता के लक्ष्य से हो रहा था।

एक तरफ गुरूवर्या श्री की जुदाई मन को गमगीन कर रही थी तो दूसरे ओर बहती हवाओं की महक में बिखरी बचपन की मधुर, निर्दोष अठखेलियाँ हृदय को कुरेद रही थीं।

मेरी जन्मभूमि तो नहीं, पर पैतृक भूमि इचलकरंजी में मैंने दो-दो विद्यालयों में व्यवहारिक शिक्षा के सोपान तय किये तो धार्मिक शिक्षा की ए-बी-सी-डी भी यहीं की पाठशाला में सीखी थी। यहाँ की गलियों में खेलने-कूदने के सारे दृश्य जैसे स्मृतिपटल पर उतर आये।

जुलूस आगे बढ़ते-बढ़ते जैसे ही रानीबाग के समीप पहुँचा, मेरा मासूम बचपन पलभर के लिए जीवंत हो उठा- ओह! यही तो वह उद्यान है, जहां मैं अपने छोटे-छोटे भाई-बहिनों के साथ 4 बजे मेन-गेट पर आकर बैठ जाती और ताला खुलते ही तेज रफ्तार से दौड़ती हुई सबसे आगे जाकर अपना झूला आरक्षित करती।

3 कि.मी. लंबा जुलूस मुख्य मार्गों से होता हुआ जैसे ही शॉपिंग सेंटर पहुँचा, मुख्य सामैया लाभार्थी परम गुरूभक्त श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़ परिवार की ओर से पुत्रवधू सौ. उषादेवी व पौत्रवधू कोमलदेवी छाजेड़ ने मस्तक पर मंगल कलश धारण कर पूज्य गुरूदेव एवं साध्वी मंडल को प्रदक्षिणा देते हुए भव्य स्वागत किया। जय जिनेन्द्र

का लाभ माणकचंद जी अरुण विवेक नेमीचंदजी ललवाणी-सिवाना ने, गहुंली करने का लाभ सिवाना वासी श्री सुमेरमलजी उगमजी ललवानी परिवार एवं संघ तिलक का लाभ श्री नेमीचंदजी मगराज जी रमेशजी भंसाली परिवार ने लिया था।

अब तेजकदमों से चलते हुए वरघोड़े ने श्री महावीर स्वामी मंदिर-दादावाड़ी परिसर में प्रवेश किया तो संपूर्ण इचलकरंजी संघ की भावनाओं में ज्वार सा उफान आ गया। मंगल उद्घोष और जयकारों की गूंज से नभमंडल गूंज उठा।

अपार जनमेदिनी

प्रवेश की झलकियाँ

विशाल एवं सुसज्जित सुखसागर प्रवचन - मंडप के द्वार पर अक्षतों से भव्य रंगोली सजायी गयी। इस मंडप के लाभार्थी दिपचंदजी नेमीचंदजी शांतीलालजी मगराजजी रमेशजी भंसाली परिवार ने फीता काटकर इसका उद्घाटन किया और अक्षतों से बधाकर जैसे ही पू. गुरूदेव को अंदर प्रवेश करवाया कि अपार जनता अपना स्थान सुरक्षित करने के लिये आतुर हो उठी। पूज्यश्री ने गंभीर चाल और मधुर मुस्कान के साथ मंडप में प्रवेश किया तो उनकी आंखें विस्मय की मुद्रा में फैल गयीं।

सुखसागर प्रवचन मंडप की छटा मनमोहक और निराली थी। विशाल स्टेज पर सुसज्जित पाट, एवं उस पर कलात्मक स्वर्णिम सिंहासन, स्टेज के दोनों तरफ खड़ी मुद्रा में पू. आचार्य भगवंत एवं पू. उपाध्याय श्री का विशाल चित्रपट्ट, मंडप के तीनों तरफ दीवारों पर आगम-वाक्य एवं प्रेरणात्मक सुभाषितों से सजे रंगबिरंगे बैनर-पट्ट, लंबा-चौड़ा-ऊंचा विशाल मंडप, बीचोबीच साधु-साध्वी मंडल के गमनागमन के लिये बनाया गया रैम्प। सारा नजारा निश्चय ही स्वर्णिम चातुर्मास की झांकी प्रस्तुत कर रहा था।

पूरा मंडप गुरूजी अमारो अंतर्नाद...की गूंज से झंकृत हो उठा। पू. गुरूदेव मुनिमंडल सहित सिंहासन पर

साध्वी मंडल एवं साध्वीजी को काम्बली अर्पण

भंवरलालजी छाजेड़ द्वारा कामली अर्पण एव लुंकड परिवार द्वारा सुवास वाटिका विमोचन

बिराजमान हो गये। साध्वीजी म. गुरूदेव के बायीं तरफ पट्टासीन हुए। विशिष्ट अतिथियों के बैठने की विशिष्ट व्यवस्था थी। संपूर्ण संघ गुरूदेव को आह्लादभरी नजरों से निहार रहा था।

श्री रमेश बी. लुंकड, सचिव, मणिधारी जिनचंद्रसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट माईक पर पू. उपाध्याय भगवंत, मुनिमंडल एवं साध्वी मंडल को भाव भरी वंदनाएं प्रेषित करते हुए अपनी अगणित खुशियों को जैसे-तैसे समेटने का प्रयास कर रहा था। प्रवेश महोत्सव पर पधारे समस्त अतिथियों का अभिनंदन-अभिवादन एवं औपचारिक सूचनाएं देने के बाद उसने भव्य प्रवेश महोत्सव का संचालन करने के लिये मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. को निवेदन किया।

अनुज मुनि मनितप्रभजी पिछले कई वर्षों से प्रवेश, दादा-जयंति आदि कार्यक्रमों का सुंदर, सफल संचालन करते हैं। सधी हुई बुलंद आवाज में जैसे ही उन्होंने बोलना प्रारंभ किया, सारी जनता शांतिपूर्वक मौन हो गयी। सभी की आंखें गुरूदेव की मुद्रा पर स्थिर थीं तो कान मुनिश्री के शब्दों पर।

आज इचलकरंजी की जनता धन्य-धन्य हो गयी थी। यहाँ का कण-कण अहोभाव से भरकर शत-शत प्रणतियाँ प्रस्तुत कर रहा था क्योंकि आज एक अनूठा कल्पवृक्ष चार महीने के लिये उनकी धरती पर अवतरित हुआ था। इस खुशी में हर होंठ पर मीठी मुस्कान नृत्य कर रही थी तो हर दिल में दिवाली सी रौनक बिखर रही थी। मुनिश्री जनता के भावों को यों शब्दांकित कर रहे थे, मानों वे उनके हृदय पट को खोल रहे हों। उनके शब्द हृदय में अमृत का संचार कर रहे थे तो भाव आस्था की अखंड धारा को प्रवाहित कर रहे थे।

इस स्वागत वेला में हर व्यक्ति अपने शब्द पुष्पों को माला में पिरोकर समर्पित करना चाहता था, पर समयाभाव में

कइयों ने मौन रहकर ही भाव-पुष्पों से अभिनंदन करना उचित समझा था। इस अवसर पर श्री मणिधारी जिनचंद्रसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट के संयोजक श्री माणकचंदजी ललवानी, अध्यक्ष श्री पुखराजजी ललवानी, उपाध्यक्ष श्री गौतमचंदजी वडेरा, पूर्व अध्यक्ष श्री संपतजी संखलेचा, सचिव श्री रमेश लुंकड़ ने अपने भाव अभिव्यक्त किये। सभी पूज्य गुरूदेव का स्वागत करते हुए भाव विभोर हो नतमस्तक हो रहे थे, तो साथ ही चातुर्मास प्राप्ति के लिये अपने भाग्य की सराहना भी कर रहे थे।

परंतु पू. माताजी म. एवं पू. बहिन म.सा. की कमी सभी को पीड़ित कर रही थी। रमेश का हृदय तो इतना भर गया था कि माईक पर वह बहिन म. का नाम लेते ही रो पड़ा था। वह क्या रोया, सारा जनसमूह भी रो पड़ा था। आज लुंकड़ परिवार में दिवाली जैसा माहौल था, परंतु उसमें दो दीयों की कमी सभी को उदास कर रही थी। शायद यह पहला अवसर था, जब दादाजी श्री आसुरामजी लुंकड़ का संपूर्ण परिवार एक स्थान पर एकत्रित था; परंतु लुंकड़ कुल की लक्ष्मी स्वरूपा माताजी म. एवं लुंकड़ कुलदीपिका बहिन म. की इस अवसर पर अनुपस्थिति सभी की आंखों में गीलापन ला रही थी।

स्वागत क्रम में मुमुक्षु संयम सेठिया, रमेश जी भंसाली टीम, मणिधारी महिला मंडल, शंखेश ललवानी, मेहा लुंकड, दिव्या बोथरा ने गीतिकाएँ प्रस्तुत कीं तो दुर्गा मेहता, फूलचंदजी छाजेड़, पूना ने भी अपने उद्‌गार अभिव्यक्त किये।

सांसारिक भतीजे मनन लुंकड़ ने चातुर्मास को हॉस्पिटल बताकर पू. गुरूदेव को विशिष्ट डॉक्टर के रूप में रेखांकित करते हुए सभी को भवरोग से मुक्त होने का आह्वान किया।

अब माईक मेरे सामने था। मैने अपनी संवेदनाओं के प्रचंड तूफान को रोका और ज्योंहि वंदना के लिये अंजलिबद्ध हुई, मेरा कंठ अवरूद्ध हो गया। आंखें अनराधार बह चलीं। जैसे-तैसे संयमित होकर मेरी भावधारा शब्दायित होने लगी- आज इचलकरंजी के सौभाग्य में चार चांद लगे हैं। यह चातुर्मास निश्चय ही स्वर्णिम इतिहास रचने का श्री गणेश कर रहा है, तथापि एक रिक्तता, एक शून्यता आज स्पष्ट दिखायी दे रही है। पू. माताजी म. व पू. बहिन म.सा. की कमी मुझे ही नहीं, पूरे संघ को कचोट रही है।

सपना तो यही देखा था कि पू. गुरूवर्या श्री के साथ बचपन की स्मृतियों से भरे नगर में जायेंगे, पर स्थितियों ने हमें जुदा कर दिया। यद्यपि इचलकरंजी आने की बहिन म.सा. की भी उत्कट भावना थी, पर गुरूदेव श्री के वचन को निभाने के

मंडल द्वारा वंदन

कलश द्वारा वर्धापना. ऊषादेवी छाजेड़ आदि

श्री वर्द्धमान जैन महिला मंडल

प्रवेश के क्षणों में पूज्य श्री

पूज्यश्री का प्रवेश

नगर नगर से आये गुरू भक्त

लिये उन्होंने परिवार जनों की इच्छा को भी दरकिनार कर दिया। काश! आज हम सभी यहाँ साथ होते!

पूज्यश्री को सुनने के लिये सभी उत्कंठित थे। इंतजार की घड़ियां अब खत्म हो गयी थीं। जनता प्यास से भरकर आशीर्वचन के लिये आतुर थी। गुरूदेव अपनी सधी हुई, प्रखर किंतु सौम्य आवाज में इस प्रकार शब्दायमान हो रहे थे, मानो बहता हुआ कल-कल झरणा हो। उनकी सिंहगर्जना भी मधुरता से परिपूर्ण थी। उन्होंने चातुर्मास को दिशा और दशा परिवर्तन का आध्यात्मिक यज्ञ बताते हुए तप-जप-आराधना-उपासना से यथाशक्ति जुड़ने की दिव्य प्रेरणा दी।

प्रवेश महोत्सव की नवकारसी का लाभ लुंकड़ परिवार ने लिया था, क्योंकि आज उनके परिवार के तीन-तीन रत्न उनकी कर्मभूमि में प्रवेश कर रहे थे। इस अवसर पर लाभार्थी श्री बाबुलालजी लुंकड़ परिवार का तथा सुखसागर प्रवचन मंडप के लाभार्थी भंसाली परिवार का श्री मणिधारी दादावाड़ी ट्रस्ट की ओर से बहुमान किया गया।

इसी कड़ी में पूज्य मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म. द्वारा लिखित पुस्तिका डपदक डंदंहमउमदज के विमोचन का लाभ श्री बाबुलालजी, तेजराजजी, प्रकाश, रमेश, गौतम लुंकड़ परिवार ने एवं 'सुवास वाटिका' के विमोचन का लाभ श्री संपतजी लूणकरणजी संखलेचा परिवार ने लिया।

पूज्य श्री को कामली बहोराने का लाभ परम गुरूभक्त श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़ परिवार ने एवं गुरूपूजन का लाभ चितलवाना निवासी संघवी श्री दलीचंदजी मिश्रीमलजी मावाजी मरड़िया परिवार ने लिया।

सम्पूर्ण चातुर्मास में पधारने वाले अतिथियों के तिलक, माला, श्रीफल, शॉल एवं मोमेन्टों से बहुमान का लाभ क्रमशः चंपालालजी गौतमजी वडेरा, जगदीशजी अशोकजी छाजेड़, पुखराजजी उदयचंदजी ललवाणी, ओमप्रकाशजी शिवलालचंदजी छाजेड़ एवं मैसर्स एम. रमेश फेब्रिक्स ने लिया।

इस प्रकार प्रातः 8.00 बजे प्रारंभ हुआ ऐतिहासिक भव्य नगर-प्रवेश 3:00 बजे समस्त अतिथियों के स्वागत के साथ स्वर्णिम चातुर्मास की प्रथम श्रृंखला के रूप में अमिट दस्तावेज बन गया।

दादा जयंति

भगवान महावीर की परंपरा में अनेक महाप्रभावशाली श्रुतधर महापुरूष हुए हैं, जिनकी दिव्य साधना से संपूर्ण जिनशासन आलोकित होता रहा है। इसी कड़ी में प्रथम दादागुरूदेव, युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरि का जीवन आज कई सदियां बीत जाने पर भी हमारे लिये प्रेरणा-पुंज बना हुआ है।

आज के दिन 8 जुलाई, 2014 आषाढ़ सुदि 11 को जिन्होंने अजमेर नगर में महाप्रयाण किया था, आज उन्हीं दादागुरूदेव की 860वीं पुण्यतिथि का पावन दिवस था। इस पुण्यपर्व के उपलक्ष्य में गुणानुवाद सभा का आयोजन था।

9.30 बजे सुखसागर प्रवचन मंडप में पूज्य उपाध्याय प्रवर मुनिमंडल एवं साध्वी मंडल के साथ पधार गये थे। श्रावक-श्राविका वर्ग भी भावांजलि अर्पित करने के लिये समय पर उपस्थित था।

पू. गुरूदेव के मंगलाचरण के साथ सभा का प्रारंभ हुआ। आज के समारोह का संचालन भी मुनि श्री मनितप्रभसागरजी के द्वारा हो रहा था। रमेश लुंकड़, संपतजी संखलेचा, सुरेशजी ललवानी, शांतिलालजी ललवानी, बाबूलालजी मालू तथा मैंने दादागुरूदेव के उपकारों का वर्णन करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वी श्री निष्ठांजना श्री जी, साध्वी श्री आज्ञांजना श्री जी, रमेशजी भंसाली, सौ. कविता ललवानी ने गीतिका के माध्यम से श्रद्धा पुष्प अर्पित किये।

मुनि मंडल

सुखसागर प्रवचन पांडाल का उद्घाटन- भंसाली परिवार द्वारा

श्रावको का समूह

पूज्य गुरूदेव ने खरतरगच्छ के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए दादा गुरूदेव के साधनामय जीवन को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि दादागुरूदेव ने अपने जीवन में मुख्य रूप से दो कार्य किये- 54 गोत्रों का निर्माण करके उन्होंने जहाँ जैन समाज का विस्तार किया, वहीं अनेक विध साहित्य सर्जना करके जिनवाणी का प्रचार किया। एक साथ 1200 दीक्षाएँ खरतरगच्छ की ही नहीं, संपूर्ण जिनशासन की प्रथम और आश्चर्यकारी घटना थी; जो गुरूदेव के साधकीय जीवन की ही परिणति थी।

12 जुलाई को मंत्र-दीक्षा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

10 सितम्बर, 2014 आसोज वदि दूज को अकबर प्रतिबोधक दादाश्री जिनचंद्रसूरि की 401वीं पुण्यतिथि मनायी गयी। इस अवसर पर पूज्य श्री ने फरमाया कि संपूर्ण जिनशासन में 4 ही महापुरूष दादागुरूदेव के नाम से विश्वविख्यात हैं। आचार्य श्री जिन माणिक्य सूरि की शिथिलाचार उन्मूलन की अंतिम भावना को चतुर्थ दादगुरूदेव श्री जिनचंद्रसूरि ने

साकार करते हुए विशुद्ध एवं सुविहित विधिमार्ग की पुर्नस्थापना की। मुस्लिम बादशाह अकबर सम्राट् को प्रतिबोध देने वाले आचार्य द्वय में दादा गुरूदेव का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। अमावास का चांद उगाना, बकरी का भेद बताना आदि अनेक चमत्कार उनके प्रचंड तप:पूत निर्मल चारित्र के परिणाम स्वरूप ही घटित हुए हैं।

इस अवसर पर मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म., रमेश लुंकड़, संपत जी संखलेचा, कविता ललवानी आदि ने भी अपनी भावांजलि अर्पित की।

इस कार्यक्रम का सफल संचालन मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म. ने किया।

दोनों ही पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में दोपहर में दादा गुरूदेव की बड़ी पूजा पढ़ायी गयी।

प्रवचन धारा

पूज्य श्री की मुस्कान

नीलांजनाश्रीजी द्वारा प्रवचन

जन समूह

सम्पूर्ण चातुर्मास की चमक-दमक कहें तो उसका नाम है प्रवचन! ऐसे प्रकृष्ट वचन, जो आचार की गरिमा से संयुत् हों, उसे प्रवचन कहते हैं। यह चातुर्मास प्रवचन की अपेक्षा से अपूर्व रहा, क्योंकि प्रवेश से आरंभ होकर विहार पर्यन्त प्रतिदिन श्रोता वर्ग के लिए धर्म बिन्दु ग्रन्थ की सरल व्याख्याओं पर विशिष्ट शैली में प्रवचन प्रस्तुत हुए तो बाद में आगम वांचना की अमीधारा प्रवाहित हुई।

धर्मबिन्दु ग्रन्थ वोहराने का लाभ श्री बाबूलालजी रमेश-मनन लुंकड़ परिवार ने लिया था तो महाबल-मलयसुंदरी के चरित्र ग्रंथ को वोहराने का लाभ श्री चंपालालजी गौतमचंदजी वडेरा परिवार ने लिया था। प्रवचन की पकड़ के कारण कुछ ही दिनों में प्रवचन पाण्डाल खचाखच भरने लगा। घड़ी 9.15 क्या बजाती, लोगों के पांव स्वत: प्रवचन पाण्डाल की ओर बढ़ जाते। एक श्राविका ने तो मुझे यहाँ तक बताया कि महाराजजी! क्या बतायें! इस बार जैसे प्रवचन तो कभी नहीं सुने। मेरे पतिदेव विलम्ब से नींद छोड़ते हैं। मैं तो उन्हें यह कहकर चल पड़ती कि चाय पी लेना, जो भाये, वह खा लेना। मैं प्रवचन किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ सकती।

हां! बिल्कुल सही बात थी! गुरूदेव श्री की प्रवचन पटुता स्तुत्य है। वे दार्शनिक, आशुकवि, ज्योतिर्विद और लेखक होने के साथ-साथ कुशल प्रवचनकार भी हैं। जब वे अपने चिन्तन की नूतन रश्मियाँ जन-जन में

उपदेश के रूप में बांटते हैं, तब तो जैसे एक नयी ऊर्जा रोम-रोम में व्याप्त हो जाती है।

उनकी वाणी में सागर की गंभीरता और गिरिवर सी धीरता टपकती है। कभी श्रोता वर्ग वैराग्य के रस में डूबता तो कभी जीवन की कलात्मकता से परिचित होता। सप्ताह में दो दिन के प्रवचन विशेष विषयों पर आधारित थे। शनिवार को प्रश्नोत्तरी प्रवचन, जहाँ लोगों के मन-मानस पर अवतरित विविध शंकाओं का सटीक समाधान होता, वहीं रविवारीय पारिवारिक प्रवचन से घर को स्वर्ग बनाने की कला का प्रसारण होता। रविवार को तो श्रोता संख्या 500 से बढ़ती हुई 1000 तक पहुँच गयी, जिनमें जैनेत्तर समाज, अग्रवाल माहेश्वरी ने भी भरपूर लाभ उठाया! कभी माँ की ममता आँखों में श्रद्धा के अश्रु ले आती तो कभी पिता का कर्त्तव्य बोध सही समझ देता! कभी बालक के भविष्य का चिन्तन तो कभी सास-बहू के सम्बन्धों में मधुरता का रसास्वादन! रक्षा बंधन, स्वतन्त्रता दिवस, श्री कृष्णजन्माष्टमी पर भी विशेष प्रवचनों की मंदाकिनी प्रवाहित हुई।

जब कभी चिन्तन की दुरूहता व गंभीरता से वातावरण दार्शनिक बनता तो तुरन्त जटाशंकर आता और होंठो को ही नहीं, दिल और दिमाग को भी हास्य-रंग से भर देता। महाबल-मलयसुंदरी की कथा तो ऐसे चलती कि सारे दृश्य नयन-पटल पर जीवंत हो उठते। 'फिर क्या हुआ, अब कल', कहते ही लोगों का कथा के प्रति उत्सुकता का भाव लगातार बना रहा।

पूज्य श्री के प्रवचनों से अनेक जीवन परिवर्तित हुए। परिवार में समत्त्व, मानस में धीरत्व, धर्माचरण में वीरत्व का बोध जगा। दिगंबर-श्वेतांबर, मंदिरमार्गी, स्थानकवासी, तेरापंथी, जैन-जैनेतर सम्पूर्ण इचलकरंजी की जनता ने पूज्य श्री के मधुर प्रवचनों का पूरा-पूरा लाभ उठाया। निश्चित् ही इचलकरंजी के लिये प्रवचनों की यह पावन-गंगा मन-मानस के कालुष्य को धोने में परिपूर्ण सफलतम् धारा के साथ बहती रही। विदाई के दिन लोगों का कथन रहा कि अब हम ऐसे अमृत प्रवचन कहाँ सुन पायेंगे!

श्रोता-समूह

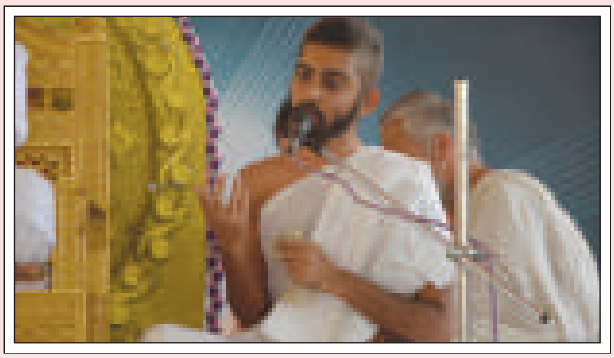

मनितप्रभजी द्वारा व्याख्या

प्रवचन प्लॉट के मालिक का बहुमन

अठारह पापस्थानक-आलोचना

पापस्थानक अर्थात् पाप का अनुबंध कराने वाले, नरक में ले जाने वाले स्थान। श्रावक प्रतिदिन प्रतिक्रमण में 18 पापस्थानकों की आलोचना करता है।

आलोचना जीवन का अनूठा पाथेय है। यह तो वह साबुन है, जो आत्मा के ऊपर लगी गंदगी और मैल को धोता है। ऐसा कोई जीवन नहीं,

जिसमें पापों का सेवन नहीं। आत्मा जब तक सम्यक्त्व का स्पर्श नहीं करता, तब तक पापकारी कठोर कृत्यों के द्वारा आत्मा को दुर्गति के गर्त्त में धकेलता रहता है। परंतु ज्योंहि मिथ्यात्व का अंधकार समाप्त होता है, आत्मा पापभीरू बन जाती है।

श्रावकों को 18 पापस्थान की आलोचना करवाने के लिये मुनि श्री मनितप्रभजी म. ने एक-एक पापस्थानक की कठोरता और भयंकरता का वर्णन 18 पद्यों में किया है। इन पद्यों का सामूहिक रूप से संगान हो, तदर्थ इन पद्यों को रंगीन मोटी शीट पर छपवाकर प्रवचन-मंडप में सभी को वितरित किया गया था।

पूज्यश्री के मंगलाचरण एवं आंशिक उद्‌बोधन के पश्चात् बंधुमुनि ने 18 पापों की विस्तृत विवेचना करते हुए सभी पापों के लिये मिच्छामि दुक्कडम् दिलवाये। वे बोल रहे थे और लोगों के आँखों से आँसू झर रहे थे। गंगा से भी मूल्यवान् पश्चात्ताप के पानी में भव-भव के पाप धुलकर विनष्ट हो रहे थे तो आत्मा के शुद्ध स्वरूप के प्रति सत्संकल्प जग रहा था। यह कार्यक्रम 21-22 जुलाई 2014 को सम्पन्न हुआ।

पात्रा लाभार्थी : ललवाणी परिवार

स्थापनाचार्य लाभार्थी- छाजेड़ परिवार

पूंजणी के लाभार्थी- बागरेचा परिवार

इन सभी पापों में प्रवृत्ति जहां संसार सागर में डुबाती है, वहीं इनसे निवृत्ति आत्मा को पंचम गति रूप मोक्ष सुख प्रदान करती है। इन सभी पापों का मूल है 18वां पापस्थानक मिथ्यात्वशल्य। यदि मिथ्यात्व का कांटा आत्मा में से छिन्न-भिन्न हो जाता है तो इन अनर्थकारी, पीड़ाकारी पापों की पूरी बारात अपने आप ही आत्मा से विदा हो जाती है।

दो दिन तक चली नौ-नौ पापस्थानकों की आलोचना का कार्यक्रम भी इस चातुर्मास की स्वर्णिम श्रृंखला की महत्वपूर्ण कड़ी था, जिसने सभी को पाप सेवन से निवृत्ति की ओर उन्मुख किया।

संयम उपकरण वंदनावलि

जो पाप कराये, हिंसा कराये, अधोगति में ले जाये, वह अधिकरण है। परंतु जो संसार सागर से तिराये, जिसके द्वारा जयणा धर्म का पालन किया जाये, वह उपकरण है। जिन उपकरणों को स्वीकार करके संयमी आत्मा वीतरागता के पथ पर गतिमान् अग्रसर होते हैं, सिद्धत्व को उपलब्ध होते हैं, ऐसे उपकरण भी परम वंदनीय हैं। संयम की साधना यद्यपि आत्मा करती है, परंतु उस साधना में सहयोगी बनने वाला श्रमण वेश भी उतना ही वंदनीय-पूजनीय और अर्चनीय है।

साधु के मुख्य एवं महत्त्वपूर्ण 14 उपकरण हैं। एक-एक उपकरण हमारे मन की मलीनता और आत्मा के कालुष्य को धोने के लिये बुहारी का काम करते हैं। इन उपकरणों का श्रृंगार करके संयमी आत्मा मुक्तिपुरी के राज्य को प्राप्त कर लेता है। देव-देवेन्द्र, चक्रवर्ती आदि के द्वारा पूजित इन उपकरणों की महानता और उपयोगिता पर बंधु मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने भावपूर्ण पद्यों की रचना की है।

संयम उपकरण वंदनावलि के कार्यक्रम की सूचनाएं कई दिन पूर्व ही दी जा चुकी थी। पूर्व निर्धारित दिन 29-30 जुलाई को 9:15 बजे मंडप खचाखच भर गया था।

सर्वप्रथम पूज्य गुरूदेव ने संयम और श्रमण वेश की महानता और महत्ता पर प्रकाश डाला।

पश्चात् इस कार्यक्रम का संचालन करते हुए अनुज मुनि ने एक-एक उपकरण की उपयोगिता को समझाया। मेरू पर्वत के भार को उठाना सरल है परंतु पंचमहाव्रत और श्रमण-वेश तो उससे भी अनन्तगुणा भारी है। परम शूरवीर, परम साहसी और परम करूणावान् आत्मा ही महावीरों के इस महान् पंथ पर चलने का पराक्रम कर सकता है। एक-एक पद्य का संगान मैंने किया और विवेचना बंधु मुनि ने प्रस्तुत की। सारा मंडप जैसे संयम और चारित्र की अनुमोदना और बहुमान के भावों से भर गया। सामूहिक संगान और विवेचन श्रवण करते हुए अनेक की आंखों से अश्रुधार बह चली।

समस्त उपकरणों की बोलियाँ लगायी गयीं। ये बोलियां पैसों से न लगाकर तप-जप, सामायिक, पूजा, स्वाध्याय, मौन आदि के द्वारा लगायी गयीं। त्रिलोक पूज्य श्रमणवेश न ले सके, परंतु उपकरणों को प्राप्त कर घर ले जाने की तो जैसे होड़ लग गयी थी। सर्वप्रथम संयम का मुख्य उपकरण, आत्मा की कर्मरज हरने वाले 'रजोहरण' वंदना प्राप्त करने का लाभ समदड़ी निवासी, मगराजजी, रमेशजी भंसाली परिवार ने 15555 सामायिक में प्राप्त किया।

इसी प्रकार क्रमशः अणगार वेश वंदना- 5 वर्ष में 7002 प्रतिक्रमण-संघवी, माणकचंद, शांतिलाल ललवानी गढ़सिवाना; मुंहपत्ति वंदना- 2 वर्ष में 10002 घंटा मौनव्रत रतनलाल बदामी देवी बोथरा, हैदराबाद; आसन वंदना- 5 वर्ष में 999 नीवी-शांतिलाल प्रेमचन्द भंसाली, असाड़ा; पातरा वंदना- 10 वर्ष में 6002 एकासन शिवलाल रिखबचंद ललवानी, सिवाना; स्थापनाचार्य वंदना-

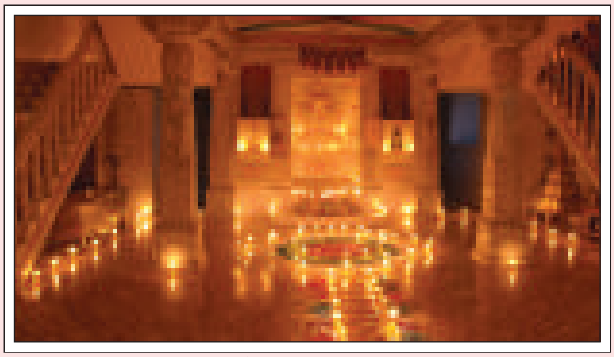

दादागुरुदेव का विहंगम दृश्य

मुनि मनितप्रभजी द्वारा संयम का विश्लेषण

पूज्यश्री का लोच-लाभार्थी झाबख परिवार

5 वर्ष में 16666 सामायिक हनुमानचंद भीमराज छाजेड़, समदड़ी; स्वाध्याय पोथी वंदना- 2 वर्ष में 5100 घंटा स्वाध्याय- सुरेशकुमार अशोककुमार मुथा, सिवाना; नवकारवाली वंदना- 2 वर्ष में 61000 पक्की माला छगनराज महेन्द्रकुमार लुंकड़, राखी; धर्म दण्ड वंदना 5 वर्ष में 15,004 पूजा दीपचंद नेमीचंद भंसाली, समदड़ी; दण्डासन वंदना- 2 वर्ष में 61000 गाथा स्वाध्याय दीक्षार्थी संयम सेठिया, चैन्नई; पूंजणी वंदना- 4 वर्ष में 6000 बियासना- हीराचंद मांगीलाल बागरेचा, सिवाना; संथारा वंदना- (दो लाभार्थी) 5 वर्ष में 14000 बार संथारे पर शयन कमलेशकुमार भीकमचंद छाजेड़, सिवाना तथा पुखराज उदयराज ललवानी, सिवाना आदि महानुभावों ने प्राप्त किया।

संयम उपकरण वंदनावलि का यह कार्यक्रम भी अपने आप में अनूठा और भाव-विभोर करने वाला था।

पर्युषण महापर्व

पर्युषण महापर्व पर्वों में उसी प्रकार शिरोमणि है, जैसे पर्वतों में सुमेरू, ग्रहो में सूर्य और मंत्रो में महामंत्र नवकार! सम्पूर्ण संघ का उल्लास क्रमशः प्रवर्धमान था, जिसे एक तरह से सम्पूर्ण चातुर्मास का हार्ट कहा जा सकता है, वह पर्युषण महापर्व अत्यन्त निकट था! तप, जप और साधना के शिखरारोहण की तैयारियाँ मानस के धरातल पर संकल्प का रूप धारण कर रही थीं।

आज पर्युषण पर्व का पहला दिन था। तारीख थी 22 अगस्त, 2014 और दिन था भाद्रपद शुक्ला द्वादशी का! आज के आसमान में तपन कम और बरखा की बौछारें अधिक थीं!

प्रवचन का समय ठीक नौ बजे का था! श्रावकों की अच्छी संख्या पूज्य गुरूदेव श्री के चरणों में निर्धारित समय के पूर्व ही उपस्थित थी।

'खरतरगच्छ के राजा पधार रहे हैं' इस मधुर गीत-संगीत की स्वर लहरियों के साथ पूज्य श्री ने सुखसागर प्रवचन मण्डप में प्रवेश किया। गुरूजी अमारो अन्तर्नाद... के उद्घोष के साथ वातावरण खिल उठा। अक्षतों से बधाया गया। इसमें अक्षत की भांति अजन्मा बनने की मौन प्रेरणा थी।

पूज्य का आभा मंडल

पर्युषण परिवार

आज तो पाण्डाल की हवा भी अलग लग रही थी। उसमें भी साधना आराधना की सुवास थी। पूज्यश्री का लगभग 9.15 पर प्रवचन प्रारम्भ हुआ। प्रवचन क्या था, भवभव के पापों को धोने वाली पवित्र गंगा, पर्युषण की महिमा, अहिंसा धर्म की व्याख्या के साथ वर्तमान में चल रहे सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री के त्याग के संदर्भ में पूरा प्रवचन था।

सम्पूर्ण मुनि मण्डल उच्च पट्ट पर आसीन था, पर पू. मुनिवर्य श्री मनितप्रभसागर जी म.सा. की अनुपस्थिति कुछ रिक्तता का अहसास करवा रही थी। इसका भी कारण था कि राजस्थानी मू.पू. संघ का आग्रह था कि हमारे संघ में भी पर्युषण पर्व की आराधना हो। पूज्य श्री का ही नहीं अपितु मणिधारी संघ का भी कथन

था कि एक साथ ही पर्युषण की आराधना की जाये। पूज्य श्री ने उदारता पूर्वक कहा भी था कि हम आपको आपकी विधि से प्रतिक्रमण करवायेंगे, पर उन्हें मंजूर न हुआ, कारण क्या रहा, वे ही जानें! बाद में विनंती स्वीकार करके अनुज मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. को राजस्थानी मू.पू. संघ में भेजा गया।

एक-एक दिन के प्रवचन क्या थे जैसे मधुरता का अमीरस पान! आज परमात्मा महावीर का जन्मवांचन था। पूरे संघ में आज का आनंद अद्‌भुत था। प्रवचन के बाद लगभग 12 बजे बोलियों का कार्यक्रम शुरू हुआ। सभी चढ़ावों में एक से एक बढ़कर उल्लास अभिव्यक्त हो रहा था। तन-मन के साथ आज धन के द्वार भी खुल गये थे। बोलियों का संचालन करने में रमेश लुंकड़ का अंदाज भी अनूठा था। मंच संचालन में रमेशजी भंसाली एवं अरुण ललवाणी का सहयोग भी सरहानीय था।

लगभग 5 बजे प्रभु का जन्मवांचन सम्पन्न हुआ। पालना जी को घर ले जाने का लाभ श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़ परिवार ने लिया था। मुनिमजी बनने का लाभ अशोकजी वडेरा परिवार ने लिया था।

छठें दिन क्रमशः परमात्मा महावीर का समग्र पावन जीवन पूज्य श्री ने जो फरमाया, वह अपने आप में दिव्यता से परिपूर्ण था। लगभग 3.30 घण्टे का लगातार एक धार प्रवचन सुनते हुए सारे श्रोता कुतुहल, श्रद्धा, रोमांच, आनंद और आंसुओं की धारा में अभिस्नात होते रहे।

सातवें दिन पट्ट परम्परा का विवेचन हुआ। आज इतिहास के पन्ने खोले गये। गौतम स्वामी से लगाकर आज तक की सारी परम्पराओं को जानकर श्रोता वर्ग आनंदित होता रहा।

सात दिनों की आराधना के मंदिर के शिखर पर क्षमा के स्वर्ण-कलश की प्रतिष्ठा का दिन था- संवत्सरी महापर्व! आज तो पौषधोपवास व्रत लेने में श्रावकों में होड़ लगी थी! जिन्होंने कभी उपवास तक नहीं किया था, वे भी आज इस पौषधव्रत से जुड़े थे। छोटे संघ में 54 की संख्या में श्रावकों ने पौषध किया था! श्राविकाएं भी बड़ी संख्या में थीं। कल्पसूत्र एवं बारसासूत्र वोहराने का लाभ क्रमशः चंपालालजी गौतमजी वडेरा तथा सूरजमलजी जगदीशजी छाजेड़ परिवार ने लिया था।

ठीक 9 बजे मूल कल्पसूत्र (बारसा सूत्र) के मूल पाठ का प्रारंभ हुआ। लगभग 800 गाथा प्रमाण कल्पसूत्र वांचन का दिव्य सौभाग्य मुझे

दादागुरू महायंत्र अर्पण

सुमेरमलजी

तपस्या वरघोड़ा

प्राप्त हुआ। वांचन से पहले उन क्षणों में डूब गयी, जब मैंने जहाज मंदिर के पावन परिसर में इस सूत्र का कंठस्थीकरण 40 दिन में संपूर्ण किया था और पहली बार बिना देखे बोलने का अहोभाग्य दिल्ली चातुर्मास में पूज्य श्री की कृपा से प्राप्त हुआ था। अहा! परमात्मा का जीवन चरित्र! कितना प्रेरक, आदर्श और जीवंत। मेरे अनुज मुनि मनितप्रभजी ने तो कल्पसूत्र के साथ-साथ अंतगडसूत्र, आचारांग और नंदीसूत्र भी कंठस्थ किये हैं।

अवशिष्ट कल्पसूत्र पू. मुनि श्री मेहुलप्रभसागर जी म. ने पढ़ा तथा अन्तिम सौ गाथाएँ पूज्य प्रवर ने अपने सरस्वती कंठ से फरमायी।

पूरे कल्पसूत्र वांचन में पाण्डाल भरा हुआ था, पर कहीं कोई आवाज नहीं। सुई गिरे तो भी आवाज सुनाई दे जाय। यथाशक्ति लोगों ने खड़े-खड़े ही कल्पसूत्र सुना था। पूज्य प्रवर ने अनेक प्रकार के पापों के मिच्छामि दुक्कडम् दिलवाये, जो मानव के द्वारा स्वभावत: अथवा भूलवश हो जाते हैं।

घड़ी लगभग 12.30 बजा रही थी। इसी बीच पूज्य अनुज मुनि श्री मनितप्रभसागरजी भी राजस्थान भवन में सांवत्सरिक प्रवचन सम्पन्न कर पधार रहे थे। उनके पीछे-पीछे अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविका थे। वे राजस्थानी संघ में आराधना करवाकर पधारे थे। उनके प्रवचनों से सकल संघ प्रभावित हुआ था। अनुशासन पूर्वक लम्बे-लम्बे प्रवचनों में जबरदस्त संख्या में श्रावकों ने लाभ लिया था।

शाम को 3 बजे संवत्सरी का प्रतिक्रमण शुरू होकर लगभग 7 बजे परिपूर्ण हुआ। हर व्यक्ति के मुख पर एक ही चर्चा थी कि ऐसा समझपूर्वक प्रतिक्रमण हमने पहली बार किया है। एक-एक क्रिया का बोध, कारण, विवेचन और स्वरूप जानकर अत्यन्त श्रद्धा से प्रतिक्रमण किया गया। पूज्य श्री की निश्रा में जहाँ भी चातुर्मास होता है, वहाँ संवत्सरी प्रतिक्रमण अवश्यमेव चर्चा में रहता है। हैदराबाद में लगभग 3000 श्रावकों का एक निश्रा में एक समय प्रतिक्रमण हुआ। उसमें खरतरगच्छ, तपागच्छ और तीन थुई वाले थे। सभी को अपनी-अपनी विधि से प्रतिक्रमण करवाया गया था।

महापूजन पढ़ाते विमल भाई- कड़ी वाले

अर्हद महापूजन में अभिषेक

अगले दिन द्वारोद्घाटन का लाभ देवीचंदजी छोगालालजी वडेरा परिवार ने लिया था।

सांगली, पूना, मुम्बई, ऊंटी, हैदराबाद, चैन्नई, विजयनगर, अक्कलकुवां, नंदुरबार, सांचोर आदि अनेक स्थानों से पर्युषण पर्व करने वाले आराधक पधारे थे। इनमें से प्रकाश जी लोढ़ा के सिद्धितप चल रहा था। तेजराजजी कोठारी, चैन्नई एवं मेवारामजी संकलेचा ने 64 प्रहरी पौषध किया था। साथ ही साथ बाईजी पारसकंवर उत्तमराजजी सिंघवी विजयनगर ने अट्ठाई, चंचलदेवी बाबेल व मैनादेवी डूंगरवाल ने छट्ठ-अट्ठम की तपस्या की थी।

31 अगस्त, 2014 को सामूहिक क्षमापना

के निमित्त स्वामी वात्सल्य का लाभ श्री बाबूलालजी कमलादेवी लुंकड़ परिवार ने लिया।

पयुर्षण संवत्सरी महाप्रतिक्रमण से पूर्व जीव दया में बड़ी राशि एकत्रित हुई तो महाप्रतिक्रमण से पूर्व ज्ञान क्षेत्र में वृद्धि हेतु अभिनव योजना प्रारम्भ की श्रुत संरक्षक हेतु 51000/- रु. एवं श्रुत समाराधक हेतु 25000/- रु. नकरा तय किया गया। जिसमें संघ के सदस्यों ने दिल खोलकर इस योजना में पुण्य से प्राप्त लक्ष्मी का सदुपयोग किया।

पंचाह्निका महोत्सव

पर्युषण पर्व के बाद भी चातुर्मास की चमक और रौनक पूर्ववत् बनी हुई थी। तपस्या का जो भारी ठाट लगा, उसके उपलक्ष्य में 3 सितम्बर से 7 सितम्बर तक पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन हुआ। 3 तारीख को अठारह अभिषेक सम्पन्न हुए, जिसका सम्पूर्ण कार्यभार और विधि-विधान रमेश लुंकड़ ने बखूबी करवाया। इसमें बाबूलालजी मालू एवं रमेश छाजेड़ का भी सहयोग रहा। 4 सितम्बर को महावीर स्वामी षट्कल्याणक पूजा एवं 5 सितम्बर को वीस स्थानक पूजा पढ़ाई गयी। 6 तारीख को भव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ। सारे तपस्वी सजधज कर 9 बजे उपस्थित थे। उनके बैठने के लिये बग्घियों की व्यवस्था संघ के द्वारा की गयी थी। दादावाड़ी से प्रारंभ हुआ यह वरघोड़ा मुख्य मार्गों से गुजरता हुआ वासुपूज्य मंदिर पहुँचा। वहाँ जिनदर्शन कर सभी पुनः सुखसागर प्रवचन मण्डप में पधारे।

इसी दिन दोपहर में एक विशिष्ट अर्हद् अभिषेक महापूजन का आयोजन संपन्न हुआ। इसका लाभ मांगीलालजी खीमराजजी छाजेड़ यह पूजन खरतरगच्छीय आचार्य श्री वर्धमान सूरिजी म.सा. ने स्वलिखित आचार दिनकर नामक ग्रंथराज में प्रस्तुत किया है। इसे पढ़ाने के लिये मुम्बई से सुप्रसिद्ध साधक विमलभाई कड़ी वाले पधारे थे। उन्होंने शास्त्रीय संगीत के साथ अनूठी रीति से इसका विधि-विधान सम्पन्न करवाया।

अन्तिम दिवस उल्लास भाव से तपस्वी अभिनंदन समारोह सम्पन्न हुआ। दोपहर में एक विशिष्ट पूजन श्री वर्धमान शक्रस्तव पढ़ाया गया इसका लाभ ओमप्रकाशजी बाबूलालजी छाजेड़ उसे भी विमल भाई ने ही पढ़ाया। अत्यन्त नूतन, विशिष्ट और हृदय स्पर्शी विधि के साथ गीत-संगीत से सारा वातावरण परमात्ममय बन गया। पांचों ही दिन संगीतकार विनीत गेमावत ने रात्रि भक्ति में अपनी सुंदर प्रस्तुति दी।

महावीर स्वामी षट् कल्याणक पूजन का लाभ श्री सुमेरमलजी उगमराजजी ललवाणी परिवार, वीश स्थानक पूजन का लाभ मगराजजी रमेशजी भंसाली परिवार, अहर्द अभिषेक महापूजन का लाभ मांगीलालजी खिमराजजी छाजेड़ परिवार एवं वर्धमान शक्रस्तव महापूजन का लाभ ओमप्रकशजी शिवलालचंदजी छाजेड़ परिवार ने लाभ लिया।

तप पारणे के लाभार्थी- मीठालालजी लुंकड़

वरघोड़े का दिव्य दृश्य

पूज्यश्री द्वारा आगम वांचन

भगवती सूत्र अर्पण- छाजेड़ परिवार द्वारा

सामूहिक अठ्ठाई पच्चखावणी

आगम वांचना

जिसके द्वारा सम्पूर्णता की ओर गमन किया जाता है अथवा जो सिद्धपद की ओर जीव को गतिशील बनाता है, वह आगम है।

परमात्मा महावीर की वाणी को, जिन्हें पूर्वाचार्यों ने ग्रंथित / संकलित किया, वे जिनशासन में आगम के नाम से प्रसिद्ध हैं।

आगम वाणी के प्रति जिस श्रद्धा और रूचि का अनुभव हमने यहां किया, वह अन्यत्र प्रायः दुर्लभ होती है।

पर्युषण के बाद पूज्य श्री इन वर्षों में 45 आगमों पर प्रवचन फरमाते हैं। सबसे पहले नंदुरबार, फिर मुम्बई और अब इचलकरंजी की जनता आगम वाणी श्रवण से धन्यता का अनुभव करने वाली थी। इससे जहाँ संघ में आगम वाणी के प्रति अहोभाव का जन्म होता है, वहीं आगमिक तत्त्व का बोधामृत प्राप्त करके जीवन को जिन-वचनों के अनुरूप बनाने का संकल्प भी जगता है। प्रतिदिन एक आगम की वांचना का क्रम निर्धारित किया गया। प्रश्न यह था कि आगम कौन वोहराये?संपूर्ण संघ को श्रुतभक्ति का लाभ मिले, इस लक्ष्य से एक राशि नकरे के रूप प्रति आगम के लिये निश्चित कर दी। मात्र एक भगवती सूत्र वोहराने का चढ़ावा बोला गया, जिसका लाभ श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़ परिवार ने लिया।

प्रतिदिन आगम लाभार्थी परिवार अपने इष्टमित्रों सहित आता। श्राविकाएँ माथे पर आगम को बहुमान पूर्वक धारण करतीं और मंगल झालरी गूंजन के साथ प्रवचन पाण्डाल की ओर प्रस्थान करता। आगे आगे पूज्य गुरूदेव श्री, पीछे-पीछे लाभार्थी परिवार। तदुपरान्त अष्टप्रकारी पूजा का सुन्दर विधान संपन्न होता, जिसमें रमेश लुंकड़ मधुर उच्च स्वर से सारे मंत्रोच्चारण करते। तदुपरान्त जयकारों के साथ पूज्यश्री को आगम वोहराया जाता। इसके बाद लाभार्थी परिवार आगम वांचना की विनंती

करता।

अब सारे जिज्ञासु आगम वाणी के पीयूष रस का आस्वाद लेने के लिये श्रोता की मुद्रा में बिराजमान हो जाते। फिर व्याख्यान वाचस्पति के द्वारा आगमों का सुन्दर प्रस्तुतीकरण। मैंने देखा है कि अधिकतर स्थानों पर पर्युषण के बाद प्रवचन प्राय: बंद रहते हैं, पर पूज्यश्री के प्रवचनों में जो पकड़ और कलात्मकता है, वह अद्‌भुत है।

यद्यपि पूज्य श्री के प्रवचन चातुर्मास प्रवेश से लगाकर विदाई-विहार पर्यंत चारों ही महीने चलते हैं, संवत्सरी के पारणे के दिन भी अवकाश नहीं होता। श्रोता वर्ग चातुर्मास में पर्युषण के बाद प्राय: अनुपस्थित होता है, परन्तु यहाँ का ठाठ तो कुछ निराला ही था। इसके दो कारण रहे-एक पूज्य श्री के ओजस्वी प्रवचन, दूसरी आगमों को सुनने की तीव्र ललक।

पूज्यप्रवर आगमों की गहरी बातें इतनी सरलता से प्रस्तुत करते कि श्रोता उनकी प्रवचन शैली पर मुग्ध हुए बिना नहीं रह पाते।

आगमों के अलग अलग विषय। भूगोल, खगोल, ज्योतिष, विज्ञान, आचार, तत्त्व, साधना, जीवन कला, ऐसे अनेक विषय; और उनकी विवेचना की मजबूत पकड़! गंभीर भावपूर्ण मुखमुद्रा! व्याख्या में उतार-चढ़ाव। कहीं भी पिष्टपेषण नहीं, कही भी बोरियत नहीं।

आगम वांचना के दौरान भी जटाशंकर का आना तो अनिवार्य नियम था। जटाशंकर पूज्य श्री के प्रवचन का अत्यन्त आकर्षण भरा पात्र है। वह गंभीर बातों में भी इतनी सरलता से मन मानस पर चोट करता है कि कहीं कोई तनाव पैदा नहीं होता।

आश्विन ओली जी के दिनों में आगम वांचना को अल्प विराम दिया गया। श्रीपाल-मयणासुंदरी पर आधारित प्रवचन देने का लाभ पूज्य श्री ने पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी को दिया नवपदजी के प्रवचन कान्तिमणि प्रवचन हॉल में सम्पन्न हुए। ओलीजी करने वालों की संख्या लगभग 100 के आसपास थी। इस आराधना का

सिद्धि तप- कान्तादेवी छाजेड़

मासक्षमण- कु. अक्षु भंसाली

सिद्धि तप- पुष्पादेवी मेहता

मासक्षमण- मंजूदेवी बागरेचा

सिद्धि तप - भावनादेवी ढेलड़िया

सिद्धि तप- नितूदेवी ललवाणी

सिद्धि तप- कु. शीतल हिरण

पच्चखावणी वरघोड़ा

लाभ दीपचंदजी प्रवीणजी तलेसरा परिवार को मिला। तीन दिन दीपावली के प्रवचन एवं अन्तिम देशना रूप उत्तराध्ययन सूत्र का वांचन हुआ।

आगम वांचना के बाद पूज्य श्री एक दिन के लिए नाकोड़ा नगर पधारे। वहाँ पर भी इचलकरंजी की जनता दौड़ी चली आई! प्रवचन हॉल में पांव रखने को जगह नहीं थी। अत्यन्त विनंती एवं समयाभाव के कारण वहाँ से पूज्य श्री उसी दिन दोपहर में उदय भवन पधारे, जहाँ प्रवचन सम्पन्न हुआ। अनेक घरों में पूज्यश्री के पगलिये भी सम्पन्न हुए।

तपाराधना

तप जीवन का अमृत है। तप आत्म-शोधन की एक दिव्य प्रक्रिया है। चातुर्मास में चार चाँद लगाने में तप की अपनी एक अहम् भूमिका होती है! जहाँ बड़े-बड़े योगाचार्य 4-6 दिनों के उपवास में पारणे में बैठ जाते हैं, वहीं जैन धर्म की यह विशिष्टता है कि मासक्षमण जैसे तप प्रतिवर्ष पूरे भारत में हजारों की संख्या में सम्पन्न होते हैं। सिद्धितप जैसा महान् तप 8-10 वर्ष के बालक आराधना पूर्वक सम्पन्न करके गिनीज बुक में अपना नाम दर्ज करवाने जैसे अनुत्तर कार्य कर लेते हैं।

इस चातुर्मास में सभी को तप से जोड़ना था। अत: अलग-अलग तप की साधनाएं करवानी थीं। एक तरह से तप का मौन आगाज पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. ने अट्ठाई तप से किया। सबसे पहले छह दिवसीय चिन्तामणि तप का प्रारंभ हुआ। इसमें लगभग 80-90 लोग सानंद जुड़े! इसके पूर्ण होते ही दो दिन बाद ही बीसस्थानक तप का आयोजन शुरू हुआ, जो 40 दिन का था। इसमें पंचपरमेष्ठी के गुणसंख्यानुरूप 108 व्यक्ति जुड़े! इन दोनों तप में बाल, युवा, वृद्ध तीनों पीढ़ियों ने भरपूर लाभ उठाया। पारणे की व्यवस्था में जिन कुशल युवक मण्डल आदि का योगदान सराहनीय रहा।

दो बड़े-तप आयोजित थे, एक

मासक्षमण, दूसरा सिद्धितप। मासक्षमण में कु. अक्षु मगराजजी भंसाली और सौ. मंजू देवी मांगीलालजी बागरेचा ने जुड़कर अपनी अत्यधिक शक्तियों का परिचय दिया! अक्षु की उम्र 20-22 के आस-पास थी पर संकल्प मजबूत था। मंजू जी तो मुझसे अत्यधिक निकटता से जुड़े हुए थे। उनसे मिलना, शाता पूछना, उल्लास बढ़ाना जैसे मेरी दिनचर्या के अंग हो गये थे। उनको प्रेरित करने और चिन्तामुक्त रखने में उनकी सुपुत्री खुश्बू और स्वीटी का पूरा-पूरा भावनात्मक सहयोग रहा।

सिद्धितप में पांच तपस्वी जुड़े थे- कान्तादेवी जगदीशजी छाजेड़, नीतू देवी शैलेशजी ललवाणी, भावना देवी मोहनलालजी ढेलडिया, पुष्पा देवी बाबूलालजी मेहता, शीतल बाबूलालजी हिरण की सिद्धितप की आराधना उल्लास पूर्वक चल रही थी! 'श्रेयांसि बहुविघ्नानि।' यद्यपि श्रेष्ठ कार्यों में विघ्न बहुत आते हैं, फिर भी गुरूदेव श्री के आशीर्वाद, अभिमंत्रित वासक्षेप एवं जल से सभी की तप साधनाएं शातापूर्वक सम्पन्न हुईं।

इन तपस्याओं के बीच में सामूहिक अट्ठाई तप प्रारंभ हुआ। इस तप श्रृंखला में लगभग 30 आराधक आराधना में पूर्ण प्राणपण से जुड़े थे। हमारे साध्वी श्री आज्ञांजना श्री जी म. स्वयं इस तप में आत्मा को तपा रहे थे। तप का प्रारंभ श्रावण सुदि अष्टमी से हुआ, जिसका पारणा भाद्रपद वदि द्वितीया को हुआ। एकम को तपस्वियों का सामूहिक वरघोड़ा तथा तपाभिनंदन समारोह सम्पन्न हुआ! पूज्य गुरूदेव श्री ने तप की महिमा गाते हुए कहा कि इचलकरंजी का वातावरण तप के अत्यन्त अनुकूल है! यह वर्षा का मौसम तप करके स्वयं को कुंदन बनाने की प्रेरणा देता है।

पू. मुनिश्री मनितप्रभसागर जी म. एवं मेरा भी उद्बोधन हुआ। हमारा एक स्वर से कथन था कि- एक सामान्य कम्बल को स्वच्छ करने के लिये जल की जरूरत पड़ती है पर रत्नकम्बल को तो आग से ही धोया जाता है। वैसे ही शरीर तो जल से स्वच्छ होता है पर आत्मा पर लगे पापों के मल को धोने के लिये तप रूपी आग की जरूरत पड़ती है!

पर्युषण पर्व के दौरान भी सामूहिक अट्ठाइयों का वातावरण उपस्थित हुआ, जिसमें लगभग 35-40 तपस्वी जुड़े। भाद्रपद वदि तृतीया को उन सभी के सामूहिक वरघोड़े का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। इसके साथ-साथ अन्य विविध तपस्याएँ भी सम्पन्न हुईं। हमारे साध्वी

दादागुरू महापूजन- छाजेड़ परिवार

दादागुरू महापूजन में भीड़

भैरव पूजनार्थी

मण्डल में मेरे तथा साध्वी निष्ठांजना श्रीजी के भी छट्ठ-अट्ठम् तप शातापूर्वक सम्पन्न हुआ।

एक तरह से सम्पूर्ण इचलकरंजी दो महीनों के लिये तपोमय बन गया था। हर एक के मुख पर शाता है?शाता में हैं?का प्रश्न था तो तपस्वी के होठों पर मुस्कान पूर्वक 'देवगुरू पसाय' का जवाब था।

तपस्वियों को पारणा करवाने का लाभ श्री मीठालालजी महावीरजी अरूणजी लुंकड़ परिवार ने लिया।

तप की श्रृंखला अभी तो और आगे बढ़नी थी। दीपावली पर परमात्मा महावीर के निर्वाण के छट्ठ तप आराधना में भी लगभग 60 आराधक जुड़े, जिसमें 5 साधु-साध्वी समाविष्ट थे।

निश्चित ही गुरूदेव की सन्निधि में तप का जो रंग बिखरा, वह अनुपम था। पूरे भारत भर से लोग तप समारोह में पधारे तो तपस्वियों की ओर से स्वामी वात्सल्य की तो जैसे झड़ी ही लग गयी थी!

भैरव महापूजन- लुंकड़ परिवार

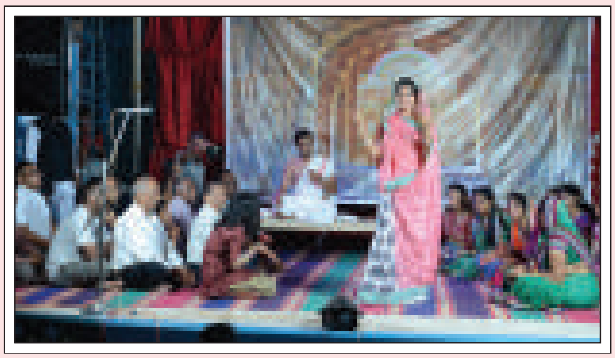

मयणासुदंरी का नाटक

श्री पाल-मयणा नाटक के पात्र

महापूजन

इचलकरंजी चातुर्मास में दो महापूजन सम्पन्न हुए।

पहला दादा गुरूदेव महापूजन। इस संपूर्ण महापूजन के लाभार्थी थे- श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़। इस परिवार की श्रद्धा जितनी दादागुरूदेव 'मणिधारी' में है, उतनी ही आस्था उपाध्याय श्री 'मणिप्रभ' गुरूदेव के प्रति है। पू. बहिन म.सा. के प्रति तो इतनी अनन्य भक्ति है कि उनके मात्र एक संकेत से ही उन्होंने कुशलवाटिका में कुशल गुरूदेव की प्रतिमा भरवाने का लाभ लिया तो गुणाया जी तीर्थ के मुख्य द्वार का लाभ भी इसी भाग्यशाली परिवार ने लिया।

दादा गुरूदेव के महापूजन में लगभग 108 जोड़ों में दादागुरू की भक्ति का लाभ लिया। पूज्य उपाध्याय श्री द्वारा रचित यह महापूजन देश में ही नहीं, विदेशों में भी अनेक बार पढ़ाया जा चुका है। 3 घण्टे तक दादागुरूदेव की भक्ति सरिता बहती रही। पूज्य श्री एवं मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ने दादा गुरूदेव के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्रावण शुक्ला पूर्णिमा, रक्षा बंधन को सम्पन्न हुए इस महापूजन में लवेश बुरड़ के भक्ति गीतों से संपूर्ण पूजन मंडप जैसे झूम उठा था।

महापूजन के पश्चात् स्वामी वात्सल्य एवं रात्रि में भक्तिसंध्या का लाभ भी छाजेड़ परिवार ने ही लिया।

दूसरा महापूजन था खरतरगच्छ के अधिष्ठायक देव श्री नाकोड़ा भैरूजी का। कार्तिक सुदि 8 को सम्पन्न हुए इस महापूजन के लाभार्थी थे श्री मीठालालजी, महावीरजी, अरूणजी लुंकड़ परिवार। पूज्य श्री ने बताया कि नाकोड़ा तीर्थ की जिन्होंने स्थापना की, उन खरतरगच्छाचार्य श्री कीर्तिरत्नसूरि जी म.सा. ने नाकोड़ा भैरव की प्रतिष्ठा करवायी थी। दोनों महापूजनों में सभी आराधकों को पूजन सामग्री लाभार्थी परिवार की ओर से समर्पित की गयी।

'अमावस को चांद उगायो' एवं 'श्रीपाल-मयणा' नाटिका का अद्‌भुत मंचन

इचलकरंजी वासियों की रूचि जितनी तप-जप आराधना, प्रवचन श्रवण और तत्वज्ञान में थी, उतनी ही उमंग किसी धार्मिक प्रोग्राम का मंचन करने की भी थी। पर्यूषण के पश्चात् तो यह मांग और अधिक बढ़ गयी थी।

मैने पू. गुरूदेव एवं मनित म. से चर्चा करके जंबूकुमार का नाटक मंचन करने का मानस बनाया था, परंतु उन्ही दिनों में 'अमावस को चांद उगायो' भारी चर्चा का विषय बना हुआ था। रमेश लुंकड़ ने चारों दादागुरूदेव के साधकीय चमत्कारिक जीवन का मंचन करवाने वाले गुंटूर निवासी श्री रमेशजी पोरवाल से संपर्क किया एवं समय निकालने का आग्रह भी।

नवपद ओली की आराधना भी नजदीक ही आ रही थी। रमेश जी ने चतुर्दशी को 'श्रीपाल मयणा' व पूर्णिमा को 'अमावस को चांद उगायो' कराने का निर्देश दिया।

संवाद की कॉपी आ चुकी थी। 20 दिन पूर्व ही सभी की सामूहिक मीटिंग करके पात्रों का चयन करते हुए अपने-अपने संवाद याद करने के लिये दे दिये गये थे।

यद्यपि संवाद रमेशजी ने अच्छे बनाये थे, परंतु उसमें भी काफी जोड़-तोड़कर करके और अधिक रोचक बनाने के लिये मेरा भी समय लग रहा था। इस कार्य को व्यवस्थित रूप से सम्पन्न करने में साध्वी विभांजना श्रीजी एवं आत्मीया श्राविका भी प्रेमलताजी ललवानी का भी भरपूर सहयोग रहा था।

20 दिन तक लगातार सभी पात्रों को प्रवचन मंडप में शाम 7:00 बजे बुलाकर 2 घंटे प्रैक्टिस करवाना, संवाद के अनुरूप एक्शन सिखाना जैसे एक सूत्रीय कार्यक्रम बन गया था। बड़ी-बड़ी बालिकाओं से लेकर छोटे-छोटे बच्चे भी इस नाटक में भाग लेने के लिये अतीव उत्कंठित थे। सभी की एक ही अपेक्षा थी कि उन्हें नाटक में

नाटक में उल्लासित दर्शक

अमावस को चांद उगायो के पात्र

क्रिया साधना

अच्छा रोल मिले। इस कारण हमने कई पात्र काल्पनिक रूप से ही जोड़ दिये थे।

दादागुरूदेव का जीवन जितना साधना से ओतप्रोत है, उतना ही चमत्कारों से भरपूर। इस नाटिका में अंधे को आँखें देना, 64 योगिनियों को स्तम्भित करना, बिजली को पात्र में बंद करना, विक्रमपुर नगरी को महामारी के रोग से मुक्त करना, अंबिका देवी द्वारा गुरूदेव को युगप्रधान घोषित करना, सुल्तान पुत्र को विषमुक्त करना, अमावस्या का चांद उगाना आदि अनेक चमत्कारपूर्ण घटनाओं का सजीव चित्रण करना था। अत: सभी पात्र जी-जान लगाकर, जोश से भरकर अपनी तैयारी कर रहे थे।

निर्धारित दिनांक से 3 दिन पूर्व ही गुंटूर से श्री रमेशजी पोरवार सपत्नीक इचलकरंजी आ गये थे। यद्यपि हमने तैयारी करवाने में पूरा श्रम और समय लगा दिया था, फिर भी रमेशजी इस नाटक को सफल तक बनाने के लिये प्राणप्रण से जुट गये थे। सिखाने की उनकी कला भी अनूठी थी। अत: हर पात्र उन्हें अनुसरण करने का प्रयास कर रहा था।

बाबूलालजी ललवानी का बहुमान

गौतमजी वड़ेरा, चंपालालजी वडेरा का बहुमान

सयंम एवं जयाबेन का बहुमान

श्रीपाल-मयणासुंदरी के नाटक की पूर्व-तैयारी भी उतनी ही जोश से भरकर हो रही थी। सभी पात्र अपना मंचन उत्तम रूप से प्रस्तुत करने की तैयारी कर रहे थे।

साथ ही साथ 'अमावस को चाँद उगायो' की भी तैयारी चल रही थी। दोनों नाटिकाओं के लिये अलग-अलग समय निर्धारित कर लिया गया था, ताकि पात्रों को न इंतजार करना पड़े, न समय व्यर्थ गंवाना पड़े।

इन दोनों नाटिकाओं में भाग लेने वाले लगभग सभी पात्र व्यस्ततम व्यवस्थाओं से जुड़े हुए थे। कई श्रावक ऐसे थे, जो ऑफिस व दुकान से समय बचाकर आ रहे थे। कई श्राविकाएं ऐसी थीं, जो छोटे-छोटे बच्चों को एवं पारिवारिक दायित्त्वों को नजरअंदाज करके संवाद की प्रैक्टिस के लिये आ रही थीं। छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं की तो परीक्षाएं एकदम सिर पर थीं। कई कॉलेजियन स्टूडेण्ट भी छुट्टियाँ लेकर आ रहे थे। कुल मिलाकर सभी अत्यंत उत्साह व जोश से भरकर जैसे-तैसे भी अपनी सफलतम प्रस्तुति के लिये जी तोड़ मेहनत कर रहे थे।

मंचन करने की घड़ी ज्यों-ज्यों नजदीक आ रही थी, सभी की तैयारी भी जैसे पूर्णता का स्पर्श कर रही थी। आसोज सुदी चतुर्दशी की

शाम 'श्रीपाल-मयणासुदंरी' के नाटक का मंचन किया गया। आशा से अधिक सफलता बटोरने से हर पात्र जैसे आनंद से झूम रहा था।

दूसरे दिन आसोज पूर्णिमा को 'अमावस को चाँद उगायो' का मंचन होना था। प्रैक्टिस को अंतिम रूप दिया जा चुका था। आज प्रात: से ही इंद्र महाराज मेहरबान हो रहे थे। बरसती बारिश से सभी के ललाट पर चिंताओं की लकीरे उपस रही थी। पर मन में एक विश्वास भी था कि जो गुरूदेव अमावस्या को पूर्णिमा में बदल सकते हैं, क्या वे गुरूदेव आज हमें निराश करेंगे?हमारी श्रद्धा और आस्था अवश्यमेव रंग लायेगी।

और ऐसा ही हुआ। दिन भर बरसती बारीश संध्या होते-होते स्वत: ही रूक गयी। सभी पात्र अपनी-अपनी वेशभूषा में सजधज कर सुखसागर मंडप की और दौड़ लगा रहे थे। आज तो बड़े-बूढ़ो से लगाकर छोटे-छोटे बालक भी अपने-अपने संवाद बार-बार याद करते हुए नजर आ रहे थे।

ठीक 8:00 बजे नाटक प्रारंभ हो चुका था। अंबिकादेवी की आराधना करके पुत्र रत्न की कामना, पुत्र का जन्म, बधाई आदि गुरूदेव के जीवन के अनेक भावभरे दृश्य लोगों के हृदय में जहाँ आनंद की बरसात कर रहे थे, वहीं माता-पिता के इकलौते, लाडले, मंत्रीपुत्र सोमकुमार के लघुवय में ही दीक्षित होने के संवेदनशील दृश्य बहती आँखों से आस्था का अभिषेक भी कर रहे थे।

मंत्रीपुत्र सोमकुमार बने मनन लुंकड़ के प्यारे-भावभरे संवाद लोगों के हृदय को मोहित कर रहे थे तो बालमुनि सोमचंद्र बने मुमुक्षु संयम सेठिया की विनम्रता, गंभीरता और विद्वत्ता सभी को चमत्कृत भी कर रही थी। एक-एक चमत्कार पूर्ण घटना का सजीव चित्रण सभी दर्शकों को विस्मय से अभिभूत कर रहा था। अंत में रमेश लुंकड़ ने जब चतुर्थ दादागुरूदेव युगप्रधान जिनचंद्रसूरि के पात्र का मंचन करते हुए उच्च स्वर से मंत्राक्षरों का उच्चारण किया तो पूरे पांडाल की धड़कने ही जैसे थम गयी। 'कहाँ उगेगा चाँद..... कैसे उगेगा चाँद' यह प्रश्न सभी की आँखों में तैर रहा था। सभी चौंकन्ने होकर इस नजारे को अपनी नजरों में कैद करना चाहते थे। इतने में ही पांडाल में बिजली गुल हो गयी और मंत्रध्वनि के साथ ही पूर्णिमा का चांद प्रकट हो उठा।

सभी की करतलध्वनि गड़गड़ाहट से गूंज

पूज्यश्री की प्रसन्नमुद्रा

सात दीक्षार्थियों का बहुमान

रायपुर चातुर्मास विनती

उठी। हर्षतिरेक से झूमता हुआ पूरा पांडाल गुरूदेव के जयनाद गूंजायमान हो उठा।

इस संपूर्ण नाटक का संचालन रमेशजी पोरवाल ने ही किया। सभी पात्रों को दृश्य के अनुसार मैनेज करना था। बराबर ड्रेसिंग-मेकअप करवाना, आवश्यक समस्त सामग्री जुटाने में प्रेमलताजी ललवानी, मीनाजी बोथरा, संगीताजी ललवानी, रमेश छाजेड़, रमेश लुंकड़, दिनेशजी मालू व मदनजी सिंघवी आदि का भरपूर सहयोग रहा।

तत्वज्ञान शिविर

तत्वज्ञान से संपूर्ण समाज में धर्म, श्रद्धा और सदाचार का विकास संभव है। इचलकरंजी चातुर्मास में विहार पर्यन्त तत्वज्ञान की धारा बहती रही। भ्राता मुनि मनितप्रभसागर जी म. का तत्त्वज्ञान के लेखन, अध्ययन और अध्यापन; तीनों में प्रतिभा कौशल अद्‌भुत है। उन्होंने चारों ही महीने तत्वज्ञान का सुन्दर प्रैक्टिकल प्रशिक्षण दिया।

बाबुलालजी लुकंड को प्रतिमा अर्पण करते पूज्यश्री

स्वर्णिम चातुर्मास

वक्तावरमलजी नाहटा का बहुमान

पर्युषण से पूर्व नवकार से लगाकर जैनाचार, जैन भोजन पद्धति, जैन क्रिया पद्धत्ति आदि विषयों पर सुन्दर पद्धत्ति से विवेचना चली।

इधर मैंने भी दो कक्षायें प्रारंभ की थी- एक कर्मग्रन्थ और दूसरा पंचप्रतिक्रमण!

वैसे भी इचलकरंजी के क्षेत्र में तत्वज्ञान के प्रति अच्छी रूचि को देखा है। क्लास में दो श्रावक विशिष्ट थे। एक बाबूलालजी मालू एवं दूसरे रमेश लुंकड। बाबूलालजी मालू को तत्त्व का उत्तम बोध है तो रमेश का इतिहास के प्रति झुकाव है। संपतजी संकलेचा उदीयमान श्रावक हैं, जिनका मणिधारी भवन के निर्माण में विशेष योगदान रहा है।

बंधु मुनि मनितप्रभजी ने पर्युषण के बाद शिविरार्थियों को विशेष तत्त्वज्ञान परोसना शुरू किया! पहले जीव तत्त्व का गहरा विवेचन एवं उनके 563 भेदों की व्याख्या चली! बाद में तो गाड़ी जैसे पटरी पर तेजी से दौड़ने लगी! प्रथम कर्मग्रन्थ के आधार पर आठ कर्मों का विशेष वांचन। उसके बाद तो जिज्ञासुओं की रूचि यहाँ तक बढ़ी कि दण्डक प्रकरण जैसे विशेष ग्रन्थ के आधार पर 24 दण्डकों में 24 द्वारों की व्याख्या चली।

बंधु मुनि न केवल पढ़ाते हैं अपितु क्लास में ही तत्त्व में संगीत का रस भरते हुए सामूहिक रूप से पुनरावर्तन करवाते हैं और कण्ठस्थ करवाकर श्रुतज्ञान को स्थिर करते हैं। तभी तो इस क्लिष्ट विषय वाली दोपहर की क्लास में

35-40 श्रावक नियमित आते रहे। उसमें भी हनुमानचंदजी छाजेड़ के परिवार से 10-15 व्यक्ति होते। उन्होंने दो प्रश्नोत्तर पत्रों पर परीक्षा ली। पहली परीक्षा में प्रथम तीन स्थान श्वेता ललवाणी, प्रेमलता ललवाणी तथा रमेश छाजेड़ ने प्राप्त किये। दूसरे प्रश्न पत्र में प्रथम तीन स्थान रमेश छाजेड़, प्रेमलता ललवाणी तथा पायल मेहता ने प्राप्त किये।

एक प्रश्न पत्र मैने संयोजित करके घर बैठे भरने हेतु प्रस्तुत किया, जिसमें प्रथम मेहा लुंकड़, द्वितीय रमेश छाजेड़, खुशबू बागरेचा, तृतीय प्रेमलता ललवानी ने प्राप्त किये।

श्रावक-श्राविकाओं के रविवारीय शिविर में सुन्दर उपस्थिति रही तो बच्चों के रविवारीय शिविर में भी अच्छी चहल-पहल रही, जिसका संचालन साध्वी विभांजना श्री जी म. एवं निष्ठांजना श्री जी ने किया।

चार माह तक चले बालक संस्कार रविवारीय शिविर में सुवास वाटिका नामक अनुपम पुस्तक के आधार पर दो बार परीक्षा ली गयी, जिसमें प्रथम परीक्षा में प्रथम तीन स्थान मेहा लुंकड़, मनन लुंकड़, लब्धि छाजेड़ ने प्राप्त किये।

द्वितीय परीक्षा में प्रथम तीन स्थान क्रमशः मनन लुंकड़, यश बालड, सेजल छाजेड़ ने प्राप्त किये।

बंधु मुनि मनितप्रभजी द्वारा विवेचित आलेखित प्रत्याख्यान भाष्य विवेचन-प्रश्नोत्तर ग्रन्थ पर 'ओपन बुक एग्जाम' के प्रश्न-पत्र का संयोजन भी मेरे समय-सदुपयोग का एक हिस्सा बना! इसके पुरस्कार लाभार्थी बने गुरूभक्त नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़, हरसाणी वाले। अन्तिम तिथि रखी गयी 31 जनवरी, 2015। इसे इचलकरंजी के तत्त्वार्थी श्रावकों की पक्की पहचान कह सकते हैं कि विहार के अन्तिम दिन 8 नवम्बर तक क्लास चलती रही! इस दिन सभी की आँखें भरी हुई थीं! दो दिन तक जुदाई का गम विदाई गीतों के द्वारा चलता रहा!

अन्तिम दिन दीपक नाहर ने शिविर संचालक मुनि श्री पर एक लघु नाटिका प्रस्तुत की। बंधु मुनि ने एक तरह गुरू दक्षिणा के रूप में एक हफ्ते में एक घंटा मांगा और प्रति रविवार को ज्ञानवर्धन हेतु कान्ति मणि स्वाध्याय मण्डल की स्थापना की, जिसमें अभी 30-40 श्रावक-श्राविका तत्त्व अर्जन एवं पुनरावर्तन का लाभ ले रहे हैं।

बंधु मुनि ने कहा- इस चौमासे में गच्छ के अच्छे युवा श्रावकों में गजेन्द्र छाजेड़,

सांसारिक माता पिता को प्रतिमा अर्पण-नीलांजना श्रीजी द्वारा

जगदीशजी छाजेड़ का बहुमान

अशोक जी बोहरा द्वारा बहुमानः रतनजी बोथरा का

श्री जिनदत्तचन्द्र-कुशलचन्द्र गुरुभ्यो नमः
प. पू. आचार्य जिन कान्ति सागर सूरिभ्यो नमः

श्री आदिन

परम पूज्या पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणरत्ना गुरु

के प्रवेश पर ''श्राद्ध मणि'' पुस्तक की

बुक प्राप्त करने की दिनांक 25 अप्रेल 2015

Open Book

अविरल कृपा दृष्टि
परम पूज्या गुरुवर्या
श्री सुलोचना श्रीजी म.सा.

प. पूज्य गच्छ
श्री मणि

प्रश्न संयोजिका - परम पूज्या प्रीतिसुधा श्रीजी म.सा.

आज के मानव को मोबाइल, एल.सी.डी. और टी.वी. के भौतिक युग में समय नहीं मिल रहा हैं, लेकिन भौतिकता के साथ संजीवनी है, स्वाध्याय तप है। वह जीवात्मा को अपने अध्यात्म अध्याय का अभ्युदय करता है।
अत: सभी स्वाध्याय प्रेमियों के लिए ''**श्राद्धमणि**'' का स्वाध्याय का साधन बनकर साध्य तक पहुंचाये। **श्राद्धमणि** क का आलोक प्रगटावे यही शुभेच्छा।

आयोजक - श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ

रतनलाल संखलेचा (अध्यक्ष) 094141 06491
ओमप्रकाश भन्साली (उपाध्यक्ष) 094603 67146
केवलचन्द छाजेड़ (महामंत्री) 094142 69083

सम्पर्क

कैलाश छाजेड़-9845531007, रमणजी बैंगलोर-9945626554 नरेशजी पारख, बडोदरा-9825335117 सरोजजी कांकरिया, जयपुर-9
सुनीलजी चौरड़ीया, कलकता-9002826252 धरमचन्दजी दादानगर-9431301475 प्रेमजी गुलेच्छा, चैन्नई-9366610008 रमेश बरड़िया, चैन्न

बाड़मेर
रतनजी संखलेचा- 09414106491
भूरचन्दजी संखलेचा- 09414494084

कोलकाता
सुनीलकुमारजी चोरडिया-09434060429, 09002826252
सरस्वतीजी लोढ़ा-09330056767
चन्द्रकलाजी नाहटा-09331684755

नागपुर
पुखराजजी लूणावत-09372881118

सिकन्दराबाद
प्रकाशचन्दजी लूणिया-09391017554

आदोनी
धनराजजी-09440549346
डायालालजी-09701031006
तरुणकुमारजी-09849525444

बम्बई
प्रदीपजी श्रीश्रीमाल-09324242400
वसंतलालजी-099755130131
निहालचन्दजी गोलेच्छा-09444052498

हैदराबाद
पन्नालालजी नाहटा-09490942515

इन्दौर
कमलजी मेहता-09425029511, 09827522843

सोलापुर
आनदंजी बैद-09422647126

बालोतरा
अमृतलालजी पारख-09414108396

बैंगलोर
रमणलालजी-0994626554
कैलाशजी छाजेड़-098465331007

बल्लारी
मिठालालजी बालड़-09449644150

रायचूर
प्रकाशजी चोरड़िया-09448335767

ब्यावर
दीपचन्दजी कोठारी-09829512187

ाथाय नमः

पू. गणनायक सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः
प.पू. प्र. प्रेम तेज गुरुवर्यायै नमः

र्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. के 55 वें संयम जीवन
''खुली सम्यक ज्ञान परीक्षा'' अभियान
Examination

जमा कराने की
अन्तिम दिनांक
25 अगस्त 2015

आज्ञा प्रदाता
ाधिपति उपाध्याय भगवंत
प्रभसागरजी म.सा.

अविरल कृपा दृष्टि
तपोरत्ना गुरुवर्या
प. पू. श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा.

प्रश्न संसोधिका - परम पूज्या प्रीतियशा श्रीजी म.सा.

ा अध्यात्मिक प्रवृति की आवश्यकता है। इसी कारण स्वाध्याय परम आवश्यक हैं स्वाध्याय परम आलोक है, स्वाध्याय

ा नियमित रुप से स्वाध्याय कर जड़ व जीव, स्व और पर के भेद-विज्ञान को समझकर अन्तर तमस: को हटाकर ज्ञान

ा, आराधना भवन, हमीरपुरा, बाड़मेर-344001

र्क सूत्र

मदनलाल मेहता (मंत्री) 094143 02343
सम्पतराज बोथरा (कोषाध्यक्ष) 094141 06884
रमेश धारीवाल (चातुर्मास संयोजक) 099281 80366

314256542 कमलजी मेहरा, इन्दौर-9425029511 डायालालजी, आदोनी-9701031006 दीपकजी कोठारी, ब्यावर-9829512787
नई-9841526041 मिलापजी, खेतिया-9424055934 अनीलजी पटवा, जोधपुर-9828932171 प्रकाशजी लुणिया, सिंकद्राबाद-9391017554

रायपुर
कुशलचन्दजी गोलेच्छा-09826921253
संजयजी गोलेच्छा-094425207302, 09826807302

बड़ौदा
नरेशजी पारख-09825335117

टाटानगर
धर्मचन्दजी बैद-09431301475

दुर्ग
गिरिशजी गोलेच्छा-0903977664

खेतिया
मिलापजी भंसाली-094240559634

जोधपुर
अनिलजी पटवा-09928932171

देखो-पढो और लिखो

श्रुत विजेताओं को विशिष्ट रुप से प्रमाण पत्र एवं प्रोत्साहित पुरुस्कार से पुरस्कृत तथा सम्मानित किया जाएगा

प्रथम श्रुत रत्नाकर	15000/-	पंचम श्रुत समृद्धि	7000/-
द्वितीय श्रुत दिवाकर	13000/-	षष्टम् श्रुत वृद्धि	5000/-
तृतीय श्रुत प्रभाकर	11000/-	सप्तम् श्रुत महिमा	4000/-
चतुर्थ श्रुत ऋद्धि	9000/-	अष्टम् श्रुत अणिमा	3000/-
		नवम् श्रुत गरिमा	2000/-

मूल्य :- १५१/- पुस्तक व पेपर सहित

शैलेष-शंखेश ललवानी, दीपक नाहर, दिनेशजी बोहरा, अजय छाजेड़, रमेश छाजेड़, मुन्ना मंथन लुंकड़, रमेशजी भंसाली, जिन्होंने तत्त्वज्ञान का उत्तम अभ्यास किया है। भविष्य में भी स्वाध्याय की सरिता यों ही बहती रहे, जिससे हमारी आत्मा की कषाय-विषय वासना रूप अग्नि का शमन होता रहे।

इस क्लास में पूज्य मुनि ने श्री अनेक भावप्रवण स्तवन, गीतिकाएँ और स्तुतियाँ सिखायीं तथा संगीत प्रतियोगिता भी आयोजित की, जिसमें अनेक व्यक्तियों ने प्राचीन स्तवन अपने सुरीले कंठ से प्रस्तुत करते हुए जिन भक्ति का आनंद लिया।

मंगल मुहूर्त्त प्रदान

इचलकरंजी चातुर्मास में कितनी ही दीक्षाओं, प्रतिष्ठाओं और अंजनशलाकाओं के शुभ मुहूर्त्त प्रदान किये गये।

भारत के विशिष्ट श्रावक

छोगालाल वडेरा का बहुमान

मांगीलालजी छाजेड़ का बहुमान संपतजी संकलेचा द्वारा

मुहूर्त्त की विनंती का प्रारंभ प्रवेश के दिन से जो हुआ था, उसकी कड़ी चातुर्मास समापन के बाद विहार करने तक चलती रही।

हुबली, चैन्नई, कन्याकुमारी, तिरूपुर, कोयम्बतूर और ईरोड संघों को प्रतिष्ठा अंजनशलाका के मुहूर्त्त प्रदान किये गये।

पू. साध्वीरत्ना श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. एवं पूर्णप्रभा श्रीजी म.सा. की सान्निध्यता में जिन छः मुमुक्षु कुमारिकाओं ने 6 दिसम्बर 2014 को संयम मार्ग स्वीकार किया, उनकी दीक्षा का मुहूर्त्त भी इसी चातुर्मास के दौरान दिया गया।

इसके साथ पूज्य श्री की निश्रा में 25 अप्रैल, 2015 को चैन्नई में मुमुक्षु संयम सेठिया और उसकी माता जयादेवी सेठिया की दीक्षा का मुहूर्त्त तो विहार से ठीक एक दिन पहले ही दिया गया।

वास्तव में माँ हो तो जयादेवी जैसी, जिसने अपनी एकमात्र सन्तान को सन्तत्व के संस्कार दिये। इतना ही नहीं स्वयं भी प्रभु की आज्ञा को समर्पित हो रही हैं।

जयादेवी की सेवा-भावना एवं संयम के प्रति समर्पण की जितनी अनुमोदना करें, उतनी कम है।

संयम और जयादेवी की संयम-स्वाध्याय की भावना में अभिवृद्धि करने का पुरूषार्थ परम पूजनीया साध्वीरत्ना श्री सुलोचना श्रीजी म.सा., तपस्विनी पू. सुलक्षणा श्रीजी म.सा. एवं प्रियस्वर्णांजना श्रीजी म. का रहा है। संयम ने

अल्पकाल में ज्ञान का सुन्दर उपार्जन करके अपने उज्जवल भविष्य का परिचय दिया है।

उम्र से छोटा पर बुद्धि से प्रखर संयम का भाषण अपने आप में अत्यन्त संवेदनशील रहा। पूरे संघ ने उसकी भरपूर अनुमोदना की। शिल्पा बालड़ को बल्लारी में दीक्षा देने का मुहूर्त्त भी इसी चातुर्मास के दौरान दिया गया।

विदायी समारोह

संयोग तथा वियोग, इन दो किनारों में जीवन-धारा बह रही है। संयोग जितना सुखद है, वियोग उतना ही पीड़ादायी है। अनुकूल व्यक्ति का संयोग जीवन में जहाँ खुशियों के फूल खिलाता है, उसका वियोग उतना ही दु:ख और पीड़ा के कांटे चुभाता है।

6 जुलाई को पूज्य गुरूवर की पावन निश्रा का सुखद संयोग हुआ था, देखते-देखते वियोग की वेला भी दौड़ी-दौड़ी चली आयी थी। चार महीने जैसे पलक झपकते पूरे हो गये थे।

स्वर्णिम चातुर्मास अब समाप्ति के दौर से गुजर रहा था। ज्ञान पंचमी की आराधना के बाद तो जैसे दिन भागते जा रहे थे। पूरे संघ का पूज्य गुरूदेव एवं समस्त साधु-साध्वी मंडल से इतना अधिक जुड़ाव हो गया था कि विहार की बात सुनते ही हर व्यक्ति की पलकें गीली हो रही थीं। परंतु भगवान ने साधु के लिये 9 कल्पी विहार का विधान किया है; तदनुसार विदायी तो निश्चित् थी। 5 नवम्बर 2014, कार्तिक शुक्ला 13 को विदायी समारोह का आयोजन किया गया। 9:15 बजे पूज्य श्री के साथ साधु-साध्वी मंडल पाण्डाल में पहुँच गये थे। चार-चार महीने जिन्होंने जिनवाणी की अमृतमयी परम पावनी गंगा में नहलाकर हमारी आत्मा के कालुष्य को धोया था, आज उन गुरूदेव के प्रति अपनी कृतज्ञता, श्रद्धा, समर्पण, भक्ति और अनन्य प्रेम को अभिव्यक्त करने का अवसर था। सुखसागर प्रवचन मंडप खचाखच भरा हुआ था, परंतु सारी जनता इतनी मायूस और उदास थी कि जैसे सन्नाटा छाया हो। सभी की मुस्कान गायब थी। हृदय में दर्द का अपार सागर लहरा रहा था, जो रह-रह कर आंखों के किनारों से छलक रहा था। सभी की गमगीन सूरत, रोती आँखें मेरे संवेदनशील हृदय को तीव्रता से आंदोलित कर रही थीं। इन सबके बीच मैं बार-बार अपने आप को तटस्थ करने का असफल प्रयास कर रही थी।

अनुज रमेश लुंकड़, जिसने संपूर्ण चातुर्मास

पूज्यश्री की भाव मुद्रा

पिताश्री से वार्तालाप करते मुनि मनितप्रभजी

अरूण ललवाणी का बहुमान

में सचिव के रूप में सफल संचालक का दायित्व निभाया था, आज वह तो अत्यंत भावुक हो रहा था। 4 माह के लिये उसकी दुनिया केवल उपाश्रय थी, गुरूदेव का सान्निध्य था। घर-परिवार-व्यापार, सब कुछ जैसे भूल ही गया था। इचलकरंजी में वह भावी दीक्षार्थी के रूप में ही प्रसिद्ध है। आराधना, तत्वज्ञान, इतिहास में उसकी गहरी रूचि है।

इचलकरंजी में होने वाले हर चातुर्मास में उसकी सक्रिय कार्यकर्ता और एकनिष्ठ आराधक के रूप में पहचान है।

यह चातुर्मास तो उसके परिवार से जुड़े तीन-तीन भाई-बहिन म. का था अत: उनके बिछोह की कल्पना पलकों को सहज ही गीला कर रही थी। प्रतिदिन दबंग आवाज में मुखर होने वाला रमेश आज भरे हृदय से संचालन की भूमिका में प्रस्तुत था। ऐतिहासिक स्वर्णिम चातुर्मास की संक्षिप्त शब्द झांकी को रेखांकित करते हुए उसने कहा- एक इतिहास 6 जुलाई को रचा गया, जब पूज्य श्री का चातुर्मास हेतु इस धरा पर महामहोत्सव और भव्यता के साथ पदार्पण हुआ। उसके बाद तो एक से एक बढ़कर जो कार्यक्रम हुए, वे स्वर्णिम श्रृंखलाओं के रूप में ऐतिहासिक चातुर्मास के अमिट अध्याय बन गये। इसी मंच से मैने जिस अध्याय का पहला पृष्ठ प्रारंभ किया था, आज उसी अध्याय का समापन करने जा रहा हूँ। जिनका असीम वात्सल्य चार माह लगातार हम पर बरसता रहा, जिनके श्री मुख से बहती जिनवाणी की पावन धारा में हम अभिस्नात होते रहे, अब वह क्षण दूर नहीं, जब हम उस भागीरथी की शीतलता से वंचित हो जायेंगे। कौन हमें जिनवाणी का रसास्वादन करायेगा?कौन हमारी स्वाध्याय पिपासा को शांत करेगा?कहते-कहते उच्चारण अस्फुट हो गया।

पुखराजजी ललवाणी का वक्तव्य

नीलांजना श्रीजी का उद्‌बोधन

संघ के विशिष्ट युवाजन

निश्चय ही गुरू तो वह पावन गंगा है, जो हमारे जीवन के पाप-ताप-संताप को हर लेती है। इचलकरंजी वासियों के हृदय में बसा अनन्य प्रेम कभी आँखों से तो कभी शब्दों से अभिव्यक्त हो रहा था।

श्री मणिधारी जिनचंद्रसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट के संयोजक श्री माणकचंदजी ललवानी, अध्यक्ष श्री पुखराजजी ललवानी, उपाध्यक्ष श्री गौतमचंदजी वडेरा, भू.पू. अध्यक्ष श्री संपतजी संखलेचा, सचिव श्री रमेश लुंकड़, कोषाध्यक्ष श्री दिनेश मालू ने इस चातुर्मास को जीवन परिवर्तन का अमिट दस्तावेज बताते हुए पूज्यश्री के अनेक उपकारों का वर्णन किया।

इसी क्रम में राजस्थानी जैन श्वेताम्बर मू. पू. वासुपूज्य ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री पारसमलजी श्री

श्रीमाल, तेरापंथ समाज के भू.पू. अध्यक्ष श्री जवाहरजी भंसाली एवं दिगंबर समाज से श्री प्रकाशजी पहाड़िया ने भी पूज्यश्री के सहज-सरल व्यक्तित्व को रेखांकित किया।

अभिव्यक्ति की श्रृंखला में श्रावक-श्राविकाओं में कोई अपने भावों को गीतों में समेटकर प्रस्तुत कर रहा था तो कोई कविता में भरकर। कोई वक्तव्य के माध्यम से तो कोई मौन रूप से आंसुओं का अर्घ्य चढ़ाकर। उद्‌बोधन की कड़ी में श्री पुखराजजी उदाजी ललवानी, सुमेरमलजी ललवानी, संत श्रीजी महाराज, रामआशीषजी, बाबुलालजी मालू, जसराजजी छाजेड़, जगदीशजी छाजेड़, ऋषभजी छाजेड़, मांगीलालजी बागरेचा, खुशालचंदजी बागरेचा, शांतिलालजी ललवानी, गीतेशजी ललवानी, सुरेशजी ललवानी, विजयजी ललवानी, शिवलालजी ललवानी, अरूण ललवानी, शैलेश ललवानी आदि ने पूज्यश्री के व्यक्तित्व को महिमा मंडित करते हुए इस चातुर्मास को महान् आध्यात्मिक अनुष्ठान बताया। साथ ही पूज्यश्री के विहार हेतु गद्‌गद् हृदय से मंगलकामनाएं अर्पित की।

घड़ी का कांटा अपनी गति से चल रहा था, परंतु सभी की धड़कने जैसे थम गयी थी। जनता के हृदय का एक ही उद्‌गार था- काश! गुरूदेव हमारे सामने यूं ही विराजे रहें और हम उन्हें अपलक-अनिमेष नयनों से निहारते रहें। कुछ ऐसे ही भावों को गीतों की कड़ियों में भरकर श्री चंपाललजी वडेरा, रमेशजी भंसाली, दीपक नाहर-गजेन्द्र छाजेड़-राजेन्द्र गुलेच्छा, श्यामाजी ललवानी, कविता ललवानी, नेहा लुंकड़, लब्धि-सेजल छाजेड़, भावना लुंकड़, अंतिमा भंसाली, सुशीला देवी बोहरा, सुंदरदेवी कानूंगो, श्रण्थ्यब्ग महिला मंडल से मनीषा ललवाणी ग्रुप ने प्रस्तुत किया।

अंतस्थल से निकले इन विदायी गीतों की हारमाला ने पूरे पांडाल को आंसू बहाने के लिये मजबूर कर दिया। गीतों के भाव क्या थे, जैसे तड़पते हृदय की पुकार थी। शब्द केवल कंठ से नहीं बल्कि आत्मा की गहराइयों से उठती हुई संवेदनाओं की झंकार थे। भावातिरेक से भीगा हर शब्द आज पाषाण हृदय को भी झकझोर कर सिसकियां भरने को विवश कर रहा था।

जिस माली ने चार-चार माह तक इस गुलशन को अपने प्रेम-स्नेह-वात्सल्य का अमृतमय सिंचन देते हुए खिलाया है, वह माली अगर इस खिले-खिले महके-महके चमन को छोड़ जायेगा, तो ये फूल, खिलते पौधे खिलने से

मणिधारी युवा परिवार

साधर्मिक भक्ति लाभार्थी

संपूर्ण चातुर्मास साधर्मिक भक्ति लाभार्थी श्री बाबूलालजी लूंकड़ परिवार

पहले ही मुरझा जायेंगे। अत: हे जिनशासन की बगिया के माली! आप हम पर कृपारस बरसाते रहें। जहाँ भी जायें, आप अपनी इस बगिया को न भूलें... हमारी पुकार सुनकर फिर जल्दी ही लौटकर आयें। इन भावों को प्रेमलताजी ललवानी, श्वेता ललवानी, दिव्या बोथरा, खुश्बू बागरेचा, पायल मेहता आदि ने भावप्रवण अभिव्यक्ति के द्वारा उजागर किया।

पूज्य श्री के सरल-कोमल एवं स्नेहसिक्त व्यवहार से केवल श्रावक-श्राविका वर्ग ही नहीं, नन्हे-मुन्ने बाल भी उतना ही जुड़ाव महसूस कर रहे थे। उनके उपपात में आनेवाला हर व्यक्ति उनके प्रेम का भागीदार बन गया था। अत: आज बड़ों के साथ-साथ छोटे-छोटे बच्चों में भी, चाहे वह 4-5 वर्ष का हो या 8-10 वर्ष का, अपनी भावनाएं व्यक्त करने के लिये आतुरता और उत्कंठा थी। बहुत देर इंतजार के बावजूद भी जब उनका नाम नहीं पुकारा गया तो वे मंच के पीछे लाईन बनाकर खड़े हो गये और मौका देखकर अपने हाथों में माईक थामकर बहुत थोड़े किंतु मधुर शब्दों में अपने हृदय की प्रेम भरी प्रार्थनाएं प्रस्तुत कर दीं। बाल-गोपाल के रूप में मनन लुंकड़, जिसने गुरूदेव का सांसारिक रिश्ते से बेटा होने का गौरव पाया है, ने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया तो सारी सभा अभिभूत हो गयी। इसी कड़ी में नित्य ही गुरूदेव की गोदी में जाकर बैठने वाले धीरेन ललवानी की तुतलाती भाषा में रूकने की मनुहार, रीत ललवानी, आगम छाजेड़, भव्या छाजेड़ की गुरूमहिमा का संगान करती कविताओं ने संपूर्ण मंडप में गुरूभक्ति का रंग बिखेर दिया।

अमृत जी द्वारा माला धारण

अजयजी द्वारा माला धारण

केसरीमल जी छाजेड़ द्वारा माला धारण

आबाल-वृद्ध सभी के बोलने का क्रम जब थमा तो गुरूदेव ने मुझे आदेश दिया। यद्यपि समय का कांटा दो बजा रहा था, पर जनता तो हिलने का नाम नहीं ले रही थी। मैंने भी अपने आपको अभिव्यक्ति के लिये प्रस्तुत किया। निश्चय ही इचलकरंजी वासियों का सौभाग्य था कि उन्हें पूज्यवर का चार माह के लिये अमृतमय-ज्ञानमय-साधनामय सान्निध्य मिला। बधाई है पूरे संघ को, जिन्होंने इस चातुर्मास के यज्ञ में तन-मन-धन के द्वारा अपना संपूर्ण योगदान देते हुए इसकी यशस्कीर्ति को दिग्दिगंत में फैलाया। संपूर्ण संघ की एकजुट मेहनत, एकनिष्ठ श्रद्धा और एकलक्षी पुरूषार्थ से ही यह चातुर्मास स्वर्णाक्षरीय इतिहास बना है।

साधु का जीवन बहता हुआ निर्मल झरना है। प्रवाहमान रहना, गतिमान् रहना ही उसकी पवित्रता और स्वच्छता का परिचायक है। हम

भौतिक धरातल से ही आपसे जुदा हो रहे हैं। मानसिक रूप से तो सदैव आपके हृदय में अमिट याद बनकर तरंगित होते रहेंगे। ज्ञानपुंज गुरूदेव ने आपके जीवन में जो ज्ञान की ज्योति जलायी है, उसे मंद पड़ने या बुझने न दें। गुरूदेव के उपदेशों को जीवन में रूपांतरित करते हुए अध्यात्म की ऊँचाइयों का स्पर्श करें। इन्ही शुभकामनाओं के साथ मैंने अपने आप को विराम दिया।

जिन्होंने चार माह तक अविरत / अखंड स्वाध्याय और तत्वज्ञान शिविर के माध्यम से तत्त्व रसास्वादन कराया, उन अनुज मुनिश्री मनितप्रभजी म. के बोलने की बारी थी। उन्होंने अपने भावों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि चिंतामणि-पारसमणि लोहे को सोना तो बना सकता है, पर अपने ही जैसा बनाने का सामर्थ्य उसमें कहां?हमारे गुरूदेव तो वह मणि हैं, जो अपने सान्निध्य में आने वाले कंकर को भी शंकर बना देते हैं। पारस और रतन की यह मणि संपूर्ण जिनशासन की मुकुटमणि है, जिनका 4 माह के लिये सत्-समागम पाकर इचलकरंजी का यह चातुर्मास भी स्वर्णिम चातुर्मास के रूप में मील का पत्थर बन गया है। गुरूदेव ने जीवन जीने की जो कलाएँ सिखायी हैं, उसी के अनुरूप अपने जीवन को सजाने-संवारने का पुरूषार्थ करें।

योग, संयोग और विनियोग की व्याख्या करते हुए मुनिश्री ने कहा- चातुर्मास आपको मिला, यह योग है। आपने पूरा लाभ उठाया यह संयोग है, पर गुरूदेव के हितोपदेशों को आचरण में सजाकर जीवन को उपवन बनाना विनियोग है।

सूर्य मध्यान्ह वेला को पार करता हुआ तीव्र गति से आगे बढ़ रहा था, परंतु गुरूदेव के चेहरे पर किसी प्रकार की जल्दबाजी की रेखा नहीं उपसी थी। यहाँ तक की उन्होंने किसी भी वक्ता को रोक-टोक या समय-सीमा का निर्देश भी नहीं दिया था। परम शांत, धीर-गंभीर और स्मित मुद्रा में अपने भक्त समूह की अश्रुपूरित अभ्यर्थनाओं से रूबरू होते हुए वे भाव-विभोर हो रहे थे। बल्कि कह भी रहे थे- इस मंच पर मैं चार-चार माह बोला हूँ। आज तो इन सभी के ही बोलने का दिन है।

अब बोलने वालों की श्रृंखला में विराम लग गया था। पूरा मंडप प्यासी नजरों से पूज्यश्री को सुनने के लिये बेताब था। जनता के हृदय सम्राट् गुरूदेव ने पूरे मंडप में एक प्रेमपूर्ण दृष्टि और मीठी मुस्कान बिखेरते हुए अपने आपको शब्दायित किया- इचलकरंजी का चातुर्मास देखते-देखते पूरा

संघपति परिवार

मुहूर्त का निवेदन

ऋषभजी का बहुमान- मणिधारी संघ द्वारा

हो गया। हरा-भरा, कश्मीर सा खुशनुमा शीतल वातावरण, सभी के हृदय में धर्माराधना का अनूठा उल्लास, हिलोरे लेती भक्ति और आस्था की अपनत्व भरी तरंगें... यह चातुर्मास... यहाँ की तप-जप साधना, आराधना, प्रवचन श्रवण में रूचि और प्यास; सब कुछ अनूठी और विशिष्ट है।

जैसे आपको हमारी याद रूलायेगी, वैसे ही आप सभी आराधकों की याद हमें भी सतायेगी। आज इस अवसर पर मैं आपको एक सीख देना चाहता हूँ। आप घर का पौधा न बनकर जंगल का पेड़ बनना। जंगल के पेड़ को न कोई सजाता-संवारता है, न कोई खाद-पानी देता है, फिर भी वह बीज रूप में एक बार धरती के गर्भ में गया कि धीरे-धीरे अपने आप बड़ा होता जाता है।

इस चातुर्मास में जो धर्म-आराधना का बीजारोपण हुआ है, उसका जंगल के पेड़ की तरह स्वत: विकास करना है।

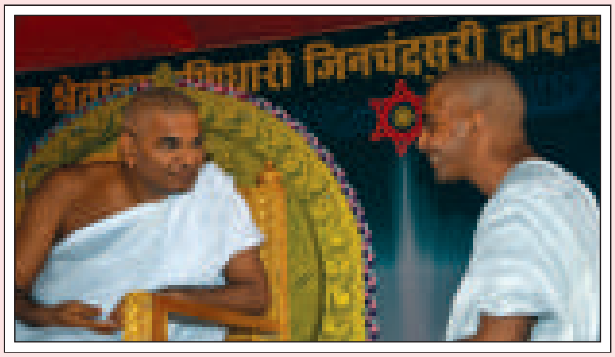

भाव यात्रा में भाविक

पूज्यश्री के साथ मुनिश्री मनितप्रभजी

ऋषभजी की विनती

हमारा बचपन श्री कृष्ण की भांति सरल, निर्दोष, नटखट हो, युवानी पुरूषोत्तम राम की भांति मर्यादित हो और वृद्धावस्था भगवान महावीर की तरह वैराग्य से परिपूर्ण हो।

इस चातुर्मास में खरतर-तपागच्छ, स्थानक-तेरापंथी, दिगंबर-श्वेतांबर, अग्रवाल-माहेश्वरी, सभी का अनन्य प्रेम हमें गच्छ-संप्रदाय या जाति के बिना किसी भेदभाव के मिला है; जो हमारे लिये अविस्मरणीय है। आपकी श्रद्धा और प्रेम भावना हमारे विहार का पाथेय बनेगी, जो कष्ट में भी हमें प्रसन्नता और आनंद से ओतप्रोत करेगी।

गुरूदेव फरमा रहे थे और जनता एक दृष्टि के साथ एक रसीभूत होकर बहने वाले अमृत को पी रही थी। कइयों की आंखों से फिर बरसात हो चली थी। उनके प्रेम को देखकर मेरी आँखे भी झिलमिलाने लगी थी।

हित शिक्षा और श्री संघ से क्षमापना के साथ में गुरूदेव ने जैसे ही 'ॐ शांति' कहा, कि सारी जनता पूज्यश्री के चरणों का स्पर्श करने के लिये दौड़ पड़ी। इसी के साथ डेढ़ प्रहर से चल रहे कार्यक्रम को भी विराम मिल गया।

शत्रुंजय महातीर्थ की भावयात्रा

आज एक महापर्व था। कार्तिक पूर्णिमा का दिन, जिस दिन 10 करोड़ मुनि शत्रुंजय की पावन भूमि पर निर्वाण पद को उपलब्ध हुए। सुबह की वायु में भी एक नया स्पंदन था। हृदय श्रद्धा रस से सराबोर था। भक्तामर, दादागुरू

इकतीसा एवं पांच चैत्यवंदन की विधि सुखसागर प्रवचन मण्डप में शत्रुंजय पट्ट के समक्ष सम्पन्न हुई।

ठीक 9:30 बजे पूज्य श्री शिष्यवृंद के साथ प्रवचन मण्डप में पधार गये। पूज्य श्री ने शत्रुंजय की महिमा की गाथा गाते हुए बताया कि जिस तिथि ने 10 करोड़ मुनियों का स्पर्श किया हो, वह तिथि कितनी महान् होगी।

इसके बाद भाई म. मनितप्रभसागरजी म. ने शत्रुंजय की भावयात्रा का प्रारंभ किया। उनके शब्द-शब्द में सिद्धाचल का गुणगान था। उनके होंठ ही नहीं, रोम-रोम भी आज शब्दायमान हो रहे थे। सच ही है कि ऐसे भव्य तीर्थ की महिमा गाते-गाते जो हृदय संवेदना से न छलके, वह हृदय नहीं, पत्थर दिल होगा।

उन्होंने बताया- यह वह तीर्थ है, जो पापी को पुण्यात्मा, कंकर को शंकर तथा जीव को शिव बनाता है। यह प्रतिमा अद्‌भुत है, जिसने अंजनशलाका के समय प्राणी की भाँति सात श्वासोच्छवास लिये।

खरतरगच्छ से जुड़ा इतिहास बताते हुए उन्होंने कहा- यहाँ पर दादा गुरूदेव श्री जिनकुशलसूरिजी म.सा. दिल्ली से संघ लेकर पधारे। पू. श्री जिन प्रबोधसूरिजी म.सा. , चतुर्थ दादा श्री जिनचन्द्रसूरिजी म.सा. , पूज्य श्री देवचन्द्रजी म.सा., पूज्य श्री क्षमाकल्याणजी म.सा., पूज्य श्री हरिसागरसूरिजी म.सा. पधारे। अनेक बार प्रतिष्ठाएँ करवायीं।

लगभग डेढ़ घण्टे तक चली यह भावयात्रा हृदय को छू लेने वाली थी! बीच बीच में मुनिश्री के द्वारा मधुर कण्ठ से स्तवन प्रकट होते रहे, जिससे वातावरण और अधिक शत्रुंजय भक्ति से ओतप्रोत हो गया।

इस बार चतुर्दशी का क्षय होने से चातुर्मासिक प्रतिक्रमण पूर्णिमा को ही सम्पन्न हुआ और दूसरे दिन चातुर्मास परिवर्तन हेतु पूज्य श्री आदि समस्त साधु-साध्वी मण्डल राजस्थानी मू.पू. संघ पधारे।

पूज्य श्री का भव्य सामैया सम्पन्न हुआ। जिनदर्शन के बाद पूज्यप्रवर ने प्रेरणात्मक प्रवचन फरमाया।

साधु बहता पानी। पानी निर्मल बहे तो, साधु निर्मल विहार करे तो। साधु का विहार चलता है पर साधना के सूत्र छोड़ जाता है। यह सब शांति प्राप्ति के सूत्र हैं। पूज्यश्री के प्रवचन में आज गंभीरता, हास्य, आत्मानंद; सब कुछ छलक रहा था। पूरा हॉल खचाखच भरा हुआ था।

सुबह की गोचरी ग्रहण कर पूज्यश्री आदि

छगनलालजी छाजेड परिवार

मणिधारी संघ के साथ संघपति

माँ के साथ बेटे

समस्त श्रमण-श्रमणी दादावाड़ी लौट आये, क्योंकि आज से पदयात्रा संघ के पूर्ववर्ती त्रिदिवसीय कार्यक्रम का प्रारंभ हो रहा था।

करे सेवा, मिले मेवा

इचलकरंजी का चातुर्मास अपने आप में विशिष्ट रहा। इसमें कंधे से कंधा मिलाकर काम करना और कदम से कदम मिलाकर चलना, ये दो कारण भी महत्त्वपूर्ण थे।

शास्त्रों में साधर्मिक भक्ति का विशेष महत्त्व फरमाया गया है। चातुर्मास की साधर्मिक भक्ति के लाभार्थी मेरे सांसारिक पिताश्री बाबूलालजी सा. लुंकड़ ने आगत मेहमानों की भक्ति करके परिपूर्ण लाभ प्राप्त किया। मनुहार, प्रेम और आदर के साथ जिमाना उनकी स्वभावगत विशेषता है। यद्यपि वे बचपन से ही श्रीमद् राजचंद्र के प्रति अटूट आस्थावान् होने से व्यावसायिक व पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त होने के बाद प्राय: चातुर्मास का पूर्वार्ध अगास तीर्थ में ही व्यतीत करते हैं, तथापि इस चातुर्मास में उनके भतीजे म. उपाध्याय श्री एवं पुत्र-पुत्री मनितप्रभजी तथा मेरी (नीलांजनाश्री) उपस्थिति में एकाध बार के अलावा इचलकरंजी छोड़कर कहीं बाहर नहीं गये। गुरूजनों को लाभ की विनंती और मेहमानों की भक्ति का भरपूर लाभ उन्होंने उठाया।

संघ में मुनि मण्डल

संघ में साध्वी मण्डल

संघ में उल्लास

भोजन व्यस्था में मांगीलालजी सा. बागरेचा ने भक्ष्य-अभक्ष्य आदि का पूरा विवेक रखते हुए अपनी विशिष्ट सेवाएँ दीं तो आवास व्यवस्था में विजय ललवानी का पूरा श्रम लगा।

श्री चंपालालजी वडेरा व प्रकाश जी छाजेड़ का योगदान भी विशेष रहा, जिन्होंने गोचरी में अपने घर दिखाने का पूरा-पूरा कर्तव्य निभाया। हमारे यहाँ वक्तावरमलजी नाहटा एवं भाभी बबीताजी की सेवाएँ भी विशेष रहीं।

पूज्यश्री के यहाँ मुमुक्षु आदि की सार-संभाल में, एवं अन्य कार्यों में परम आत्मीय श्री गौतम जी वडेरा की सेवाएँ और समर्पण तो गजब का ही रहा। इसके साथ-साथ परम आत्मीय जसराजजी छाजेड़ परिवार, जो मंदिर-दादावाड़ी प्रतिष्ठा के समय से ही पूज्य बहिन म.सा. के प्रति सर्वतोभावेन समर्पित हैं, उस श्रद्धाशील परिवार की भी सेवाएँ पूर्णरूपेण उपलब्ध थीं।

संघ के अध्यक्ष श्री पुखराजजी ललवानी

हर कामकाज में आगे थे। पूरे ट्रस्ट मण्डल ने सक्रिय भूमिका निभायी। कार्यक्रमों के संचालन में श्री रमेश लुंकड़ की महती भूमिका रही। हमारे यहाँ दवाई आदि किसी भी कामकाज में आत्मीय श्री मांगीलालजी छाजेड़, श्री मदनजी सिंघवी एवं दिनेश जी मालू का परिपूर्ण योगदान रहा। अरूण ललवाणी ने सुखसागर मण्डप डेकोरेशन में, गितेश ललवाणी सोहनलालजी गोठी ने पत्रिका प्रिंटिग आदि में सहयोग दिया।

बाबूलालजी मालू, रमेश छाजेड़ एवं रमेश जी भंसाली का 'ओपन बुक एग्जाम' के कार्य में परिश्रम लगा। गजेन्द्र छाजेड़, राजेन्द्र गुलेच्छा, दीपक नाहर, जितेन्द्र बालड, शैलेष ललवाणी, श्री जिनकुशल युवा मण्डल, मणिधारी महिला मण्डल का अनेक कार्यों में योगदान रहा।

श्वेताजी ललवानी ने समय निकालकर मुनिद्वय श्री विरक्तप्रभजी म. एवं श्री श्रेयांसप्रभजी म., दीक्षार्थी संयम सेठिया (मुनि मलयप्रभसागरजी) को पढ़ाने में अपना समय और योगदान दिया।

चारों ही महीने पूज्यश्री आदि द्वारा लिखित साहित्य डिस्काउण्ट पर उपलब्ध रहा, उसमें संघ के अनेकानेक सदस्यों का योगदान रहा।

कुल मिलाकर सकल जैन श्री संघ एवं दादावाड़ी ट्रस्ट के मिलेजुले समर्पण, श्रम, लगन और संकल्प से ही यह चातुर्मास यादगार चातुर्मास बना।

छह 'री' पालित पदयात्रा संघ

इचलकरंजी चातुर्मास के लगभग अन्तिम माह में इचलकरंजी से कुंभोजगिरी पदयात्रा संघ का निर्णय हो गया। संपूर्ण पदयात्रा संघ के लाभार्थी थे ऋषभचंदजी मांगीलालजी केसरीमलजी छाजेड़ परिवार। छाजेड़ परिवार ने अत्यंत उत्साह पूर्वक पूज्य श्री से पदयात्रा संघ का मुहूर्त प्रदान करने की विनंती की। पूज्यश्री ने 9-10-11 नवम्बर, 2014 का मुहूर्त प्रदान करते हुए उद्घोषणा की।

पद्यात्रा संघ से पूर्व मातुश्री पिस्तादेवी छगनलालजी छाजेड़ का जीवित महोत्सव 6-7-8 नवम्बर को सम्पन्न हुआ। भक्ति भावना, पूजा आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। 8 तारीख को दो कार्य एक साथ सम्पन्न हुए- श्रीमती पिस्तादेवी के द्वारा जीव राशि क्षमापना तथा मुमुक्षु माँ-पुत्र जयादेवी एवं संयम सेठिया के दीक्षा मुहूर्त की उद्घोषणा।

भाई म. श्री मनितप्रभसागरजी म. के मननीय उद्बोधन के बाद पूज्य गुरूदेव श्री ने संयमी जीवन

पूज्यश्री का निर्देश

विशाल संघ - शोभा

भगवान की आरती

तथा जीवित महोत्सव की अतीव सुंदर व्याख्या प्रस्तुत की। श्रीमती पिस्तादेवी को विविध प्रकार के मिच्छामी दुक्कडं दिलावाये।

नौ नवंबर का दिन खुशी और गम दोनो से छलक रहा था। चार-चार माह जिनके वात्सल्य और ज्ञान की धारा में नहाकर पूरी इचलकरंजी नगरी कृतार्थ हुई थी; वे ही गुरूदेव आज सबको छोड़कर जा रहे थे। अत: आँखों से तो आँसुओं के बादल बरस रहे थे तो दूसरी ओर पदयात्रा संघ की खुशी भी अनूठी थी।

विविध विधानों के साथ घर से छाजेड़ परिवार ने प्रस्थान किया। ढोल के थाप और बैण्ड बाजों से दादावाड़ी परिसर का कोना-कोना नाच उठा। सुखसागर प्रवचन मण्डप में मणिधारी संघ की ओर से संघपति के तिलक करने का लाभ मोकलसर निवासी श्रीमान् भंवरलालजी मोतीलालजी पालरेचा परिवार ने लिया।

युवाओं के साथ मनितप्रभजी

डॉ. नीलांजनाश्रीजी का उद्‌बोधन

एकासने की व्यवस्था

पूज्य श्री द्वारा प्रदत्त शुभ मुहूर्त में संघ प्रस्थान हुआ। आज तो गली-गली भरी-भरी लग रही थी।

संघ की जागरूकता स्पष्ट नजर आ रही थी।

पहला पड़ाव था तिलवणी। लगभग 10 किमी का विहार हुआ था। चूंकि आज पूज्य गुरूदेव श्री के स्वास्थ्य की अनुकूलता नहीं थी, अत: दोपहर में मेरा तथा श्री मनितप्रभसागरजी म. का कुशल गुरूदेव के पवित्र चारित्र पर भावभीना प्रवचन हुआ। आज कुशल गुरूदेव की 734वीं पुण्यतिथि थी।

10 नवम्बर, 2014 का पड़ाव शिरोळी नूतन तीर्थ सीमंधर धाम में था। सीमंधर स्वामी की भव्य प्रतिमा और कमलाकार मंदिर। दोपहर में पूज्य गुरूदेव श्री का प्रेरक प्रवचन हुआ। उससे पूर्व प्रभु पार्श्वनाथ के चमत्कारों के संदर्भ में मेरा 15 मिनट का संक्षिप्त प्रवचन हुआ।

11 नवम्बर को वडगांव में शान्तिनाथ के पावन दर्शन करके पड़ाव पर पहुँचे। आज पदयात्रियों का बहुमान सम्पन्न हुआ। पूज्यश्री के प्रवचन की खुश्बू से आकृष्ट होकर वडगांव वाले विशेष रूप से उपस्थित थे। अत: पूज्यश्री का भी प्रवचन सम्पन्न हुआ। आज सम्पूर्ण वडगांव संघ के स्वामी वात्सल्य का लाभ भी छाजेड़ परिवार ने लिया।

12 नवम्बर को कुंभोजगिरि की स्पर्शना का आनंद था। प्रात: 9 बजे प्रवेश का भव्य

जुलूस प्रारंभ हुआ। वहाँ से सीधे ही जगवल्लभ पार्श्व प्रभु के दरबार में पहुँचकर परमानंद का अनुभव किया। इसके साथ देव-देवी मंदिर के मुख्य द्वार का उद्घाटन सम्पन्न हुआ, जिसका लाभ संघवी माणकचंदजी ललवाणी परिवार, सिवाना को मिला था।

लगभग 11 बजे संघमाला का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। पूज्यश्री ने बताया कि भारत में दो जगवल्लभ पार्श्वनाथ हैं, एक कुंभोजगिरि में, दूसरे दादा जिन कुशलसूरि प्रत्यक्ष दर्शन स्थली ब्रह्मसर (जैसलमेर) में। यह तीर्थ 145 वर्ष प्राचीन है। ब्रह्मसर की जगवल्लभ पार्श्वनाथ प्रतिमा लगभग 200 वर्ष प्राचीन है, जो खरतरगच्छीय आचार्य श्री जिन मुक्तिसूरि द्वारा प्रतिष्ठित है।

संघ माला का कार्यक्रम अत्यंत भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। दीक्षा का हो या उपधान संघमाला का कार्यक्रम, पूज्यश्री के शब्द और संयोजन की ऐसी विशेषता है कि कहीं भी बोरियत महसूस नहीं होती। उनका अंदाज निराला है। तभी तो लगभग 3 बजे तक कार्यक्रम चला और पाण्डाल जनसमूह से खचाखच भरा रहा।

श्रीमती पिस्तादेवी छगनलालजी छाजेड़ को संघमाला पहनाने का लाभ अचलचंदजी बालड ने प्राप्त किया था। अत्यंत उल्लास से ऋषभचंदजी, मांगीलालजी, केसरीमलजी, अमृतजी, अभयजी, अजयजी की संघमाला भी सम्पन्न हुई।

परमात्म पूजित संघपति मालारोपण होते ही पूरा संघवी परिवार आनंद में झूम कर नृत्य करने लग गया। निश्चय ही आज मातुश्री पिस्तादेवी की भावना और पिताश्री छगनलाल जी का सपना उनके सुपुत्रों ने साकार किया था। इस खुशी में सभी की आँखें छलक रही थीं।

अभयजी ने संघ की निर्विघ्न पूर्णता के लिये तेला किया था।

ऋषभचंदजी, केसरीमलजी तथा परिवार के कई सदस्यों ने छःरी पालन करते हुए प्रभु-पार्श्व की यात्रा सम्पन्न की।

मणिधारी जिनचंद्रसूरि दादावाड़ी संघ, राजस्थानी जैन श्वेताम्बर मुर्तिपूजक संघ, अनेक मंडलों की ओर से छाजेड़ परिवार का भावभीना अभिनंदन किया गया। लगभग 400 यात्रियों ने इस यात्रा संघ में अपना स्थान अंकित करवाया। चारों तरफ छाजेड़ परिवार की उदारता की प्रशंसा थी। उन्होंने खुले दिल से पुण्य से प्राप्त लक्ष्मी का

कार्यकर्ताओं का बहुमान

पदयात्री

पिस्तादेवी छाजेड

With best compliments from

संघवी अशोक एम. भंसाली

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

सदुपयोग किया था।

शाम होते-होते लोग घर की ओर लौट रहे थे। आज उनकी आँखें जुदाई और विदाई के गम में सावन-भादो की तरह बरस रही थीं। इचलकरंजी विहार के बाद भी इचलकरंजी के संघ में रिक्तता नहीं थी, क्योंकि 4 दिन तो हम गुरूदेव-गुरूवर्या के साथ ही हैं। ऐसी हार्दिक अनुभूति होती रही। प्रतिदिन सैकड़ों श्रावक इचलकरंजी से आते जाते रहे। उनको गुरूदर्शन का लाभ प्राप्त होता रहा। पर अब लम्बी जुदाई की बेला आ गयी थी। सबकी आँखों से श्रद्धा, प्रेम और विरह के अश्रु बह रहे थे। जी नहीं कर रहा था कि विदाई दें, पर क्या करें।

श्री पुखराजजी ललवानी कह रहे थे कि हमें इस बार भरपूर साधर्मिक भक्ति का लाभ मिला। भारत के कोने-कोने से गुरूभक्त आये और साधर्मिक भक्ति के लाभार्थी लुंकड़ परिवार एवं संघ ने उनकी सेवा करके खूब आनंद पाया।

संघ माला का विधान

पिस्ता देवी द्वारा संघमाला धारण

मांगीलालजी द्वारा माला धारण

लगभग 15000 भक्त इस चौमासे में पधारे और देखा कि दादागुरूदेव के भक्त, जो इचलकरंजी में रहते हैं, उनका स्वधर्मी सेवा, भक्ति और सत्संग के प्रति रस कितना अनूठा है।

आगे चलते हुए उपाध्यक्ष गौतमजी वडेरा ने कहा कि जो चौमासा बड़े संघों को नहीं मिलता, वह हमें मिला। यह गुरूदेव की कृपा है। फिर इचलकरंजी ने मुनिश्री मनितप्रभसागरजी एवं साध्वी डॉ. नीलाजनाश्रीजी म. के रूप में दो-दो रत्न भी तो गुरूदेव को समर्पित किये हैं।

सकल संघ की छलकती आँखों को देखकर मेरे गाल पर भी अश्रु के दो बिंदु टपक गये। ये अश्रु नहीं थे अपितु इचलकरंजी वासियों की श्रद्धा और प्रेम का अभिनंदन था, अभिषेक था।

पदयात्रा संघ के उपलक्ष्य में मातुश्री पिस्तादेवी केसरीमलजी छाजेड़ परिवार द्वारा सुकृत में लाभ

जहाज मंदिर गौशाला में
1,08,000 रूपये

अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ में एक देवकुलिका
7,11,000 रूपये

कुंभोजगिरि में
1,21,000 रूपये

इचलकरंजी दादावाड़ी में
21,000 रूपये

राजस्थानी मू.पू. संघ, इचलकरंजी में
21,000 रूपये

With Best Compliments from

स्वर्णिम चातुर्मास
इचलकरंजी २०१४
पर अभिनंदन

गुरुभक्त

सौ. ऊषादेवी–जसराज, सौ. कोमल–रवि, सौ. रुचिका–गौरव

राहुल छाजेड़ परिवार (हरसाणी वाले)

बाड़मेर–इचलकरंजी

मणि विहार, 12/552/1 आर.पी. रोड़
इचलकरंजी-416115

फर्म

सौ. संपतराज बाबुलाल ॲण्ड कम्पनी

स्वर्णिम चातुर्मास
इचलकरंजी २०१४

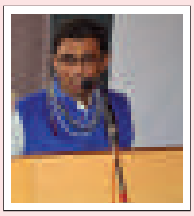

रमेश बी. लुंकड़

एक पावन गंगा

सिद्धाचल महातीर्थ की परम पावन पवित्र धरा पर हमें जो चातुर्मास का वरदान प्राप्त हुआ था, उस वरदान का फल स्वर्णिम चातुर्मास में अपेक्षा से अधिक प्राप्त हुआ।

पूज्य गुरूदेव श्री के हृदय-स्पर्शी प्रवचनों से ऐसा शमा बंधा कि जैन-अजैन गच्छ-मत, पंथ-संप्रदाय से उपर उठकर सभी अपने काम-काज छोड़कर आते। जन सैलाब सुखसागर प्रवचन पांडाल में उमड़ पड़ता।

गुरूदेव श्री ने अपनी अप्रतिम प्रवचन शैली द्वारा परमात्मा महावीर की आगम ज्ञान गंगा में डुबकी लगवाकर कषायों की कालिमा व अशांति की तपन से मुक्त करवाने का सफल भगीरथ प्रयास किया। सभी को हृदय शांत-निर्मल व धवल होने का एहसास हुआ। पर्युषण महापर्व की आराधना-साधना व उपासना, अर्थ सहित सांवत्सरिक प्रतिक्रमण द्वारा जीवन में धर्म का संचार हुआ; जिसके कारण कई नास्तिक भी गुरूभक्तों के रूप में जुड़ गये। इसके प्रभाव से दो क्रम में बड़ी संख्या में तपश्चर्याओं का ठाठ लगा। 45 आगमों की वांचना तो बहुत ही अद्‌भुत रही। अखंड प्रवचन श्रृंखला में धर्म से जीवन का विकास, परिवार कैसे बने मधुबन, व्यवहार व अध्यात्म का तालमेल, द्रव्य क्रिया व भावों में कैसे हो सांमजस्य, शनिवारीय शंका-समाधान आदि अनेक जटिल विषयों को इतनी सरलता व सहजता से समझाते कि सभी इसके हार्द्र को समझ जाते व प्रवचन शैली पर मंत्रमुग्ध हो जाते।

पूज्य गुरूदेव श्री ने शंकाओं को समाहित करके जहाँ प्यास बुझाई, वहीं चेतना के मूल्य को जागृत करके प्यास बढ़ाई। ये दोनो ही कार्य अनुपमेय रहे।

स्वाध्याय प्रेमी अनुज मुनि मनितप्रभसागरजी म. शिविर में अनुशासन, समय की पाबंदी रही। आप ने शिविर में जीव विचार प्रकरण, प्रथम कर्मग्रंथ, नवतत्व प्रकरण, दण्डक प्रकरण का स्वाध्याय करवाया एवं जैन जीवन शैली द्वारा जैनधर्म के करीब-करीब सभी विषयों को सरल भाषा में समझाने का सार्थक प्रयास किया; जिसका ये सुपरिणाम रहा कि यहाँ कान्तिमणि स्वाध्याय मण्डल की स्थापना हुई।

साध्वी विभांजना श्रीजी के रविवारीय शिविरों से बालकों में संस्कारो के बीजारोपण का कार्यक्रम हुआ।

मुनि मेहुलप्रभसागरजी के मार्गदर्शन में दादागुरूदेव महापूजन, नाकोड़ा भैरव महापूजन के आयोजन हर्ष व उल्लास से परिपूर्ण रहे।

बहिन म. साध्वी डॉ. नीलांजना श्रीजी म. के मार्गदर्शन में श्रीपाल मयणासुंदरी की नाटिका व दादागुरूदेवों के जीवन चरित्र को 'अमावस को चांद उगायो' नाटिका की प्रस्तुति अद्‌भुत रही। कई दिनों तक ये नाटक लोगों में चर्चा का विषय बने रहे।

मुनि मनितप्रभसागरजी द्वारा लिखित अठारह पाप स्थानक आलोचना व संयम उपकरण वंदनावली से लोगों में संयम जीवन के प्रति आस्था बढ़ी।

साध्वी डॉ. नीलाजंना श्रीजी की विशिष्ट प्रवचन शैली ने सभी के हृदय में विशिष्ट स्थान बनाया।

पूज्य गुरूदेव उपाध्याय श्री का प्रेम, वात्सल्य व अपनापन ही इस स्वर्णिम चातुर्मास का प्राण रहा।

यह स्वार्णिम चातुर्मास हर द्रष्टि से अनुपम, अद्वितीय, अलौकिक व अप्रतिम रहा।

पूज्य गुरूदेव श्री के दर्शनार्थ संघों व गुरूभक्तों के आगमन से हमारे संघ का गौरव बढ़ा। इचलकरंजी संघ व हमारे परिवार को साधर्मिक भक्ति का अनूठा लाभ मिला। सोने में सुहागा यह रहा कि दस दीक्षार्थियों को दीक्षा के मुहूर्त व 6-7 अंजनशलाका प्रतिष्ठाओं के मुहूर्त भी यहीं प्रदान किये गये। इसके साक्षी बनने का सौभाग्य भी हमारे संघ को मिला।

With Best Compliments from

Vivek Textile Agency

स्वर्णिम चातुर्मास
इचलकरंजी २०१४
पर अभिनंदन

Arihant Syncotex Mills Pvt. Ltd.

SUPPLIER OF GREY FABRICS
IN DOMESTIC & EXPORTS

HEAD OFFICE :

10/493, Hatti Chowk, Dambal Building,
ICHALKARANJI - 416 115

Off. Tel. : 2425779, 3090780, 3099882
Fax : 0230 - 2435363
Arunkumar : 93260-05831, 94224-14489
Email : info@arihantsyncotexmills.com

BRANCH OFFICE :

220, Mailya New Cloth Market,
AHMEDABAD - 380 002

Off. Tel. : 30941061, 22169474
Fax : 079 - 22169474
Manakchand : 93779 60390
Vivekkumar : 98250-09264, 93270-44443
Email : abd@vivektextileagency.com

Lalwanigroup

SANGHVI MANAKCHAND VARDICHAND LALWANI
SANGHVI ARUNKUMAR VIVEKKUMER LALWANI

स्वर्णिम चातुर्मास
इचलकरंजी २०१४

सम्पतराज संकलेचा

कर्म निर्जरा से मोक्ष मार्ग पर

परम पूज्य उपाध्याय भगवन्त श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा व परम पूज्य बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या डॉ. नीलाजंना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास इचलकरंजी के श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट के तत्वावधान में निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। चातुर्मास कमेटी व चातुर्मास के संयोजक संघवी माणकचन्दजी ललवाणी के दिशा निर्देश में चातुर्मास का नाम स्वर्णिम चातुर्मास रखा गया। भव्य प्रवेश, मासक्षमण, सिद्धितप, 15 उपवास, अठाइयां, अट्ठम, वीशस्थानक तप, चिन्तमणि तप और बहुत सी तपस्यायें काफी बड़ी संख्या में हुईं। दादागुरूदेव महापूजन, नाकोड़ा भैरव महापूजन, अर्हत अभिषेक महापूजन, वर्धमान शक्रस्तव महापूजन, अठारह अभिषेक आदि महापूजन, पंचाह्निका महोत्सव आदि धार्मिक कार्यक्रमों का सफलतम आयोजन हुआ। बाहर गांव से सैकड़ों संघों का आगमन निरंतर चातुर्मास के अन्तिम दिनों तक होता रहा। यहाँ 9 दीक्षार्थियों का दीक्षा मुहूर्त प्रदान किया गया तथा कई प्रतिष्ठाओं के मुहूर्त प्रदान किये गये।

प.पू. गुरूदेव उपाध्याय भगवन्त श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. का अतुलनीय वात्सल्य व निश्छल प्रेम पाकर लोग खिंचे चले आते थे। उनकी अति विशिष्ट प्रवचन शैली का प्रभाव गजब का था। प्रतिदिन नियत समय पर सुखसागर प्रवचन मण्डप खचाखच भर जाता था। शुरूआत के दिनों में प्रवचन धर्मबिन्दु ग्रन्थ पर आधारित था। व्यवहार और निश्चय से हमें कैसे जीना है! विवेक व विनय को कैसे जगाना है! क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष का कैसे दमन करना है! इन सब विषयों पर विस्तृत कथानक सहित प्रकाश डालते थे। जटाशंकर जैसे काल्पनिक पात्र के माध्यम से जीवन की गहरी बातों को हल्के-फुल्के अन्दाज से इस तरह फरमाते थे, जैसे हर एक व्यक्ति को लगता था कि यह घटना मेरे आसपास की है या मेरी स्वयं की है। हमारी कमियों को उजागर कर हमें ऊपर उठाने का मार्ग सिखाते थे। महापर्व पर्युषण की अनूठी अविस्मरणीय आराधना करवा कर हमारे जीवन पर बड़ा उपकार किया। पर्युषण उपरान्त 45 आगमों पर वांचना प्रारम्भ की। प्रतिदिन एक परिवार एक आगम की अष्ट प्रकारी पूजा करके गुरूदेव को वोहराता था और गुरूदेव से आगम वांचना की विनती करता था।

एक एक आगम की वांचना गुरूदेव ने अपने मधुर कंठ से फरमा करके इचलकरंजी वासियों का जीवन धन्य धन्य बना दिया।

अवसर अनुकूल हो या प्रतिकूल, हर पल हमें परिवार में रिश्ते मधुर कैसे बनाये रखने हैं; इस विषय पर प्रति रविवार होने वाले प्रवचन में जनसैलाब उमड़ पड़ता था।

कर्मसत्ता पर आधारित महाबल-मलयसुन्दरी के कथानक का एक-एक घटनाक्रम बड़े ही रोमांचक तरीके से बताते थे कि उस कहानी का अगला मोड़ जानने की उत्सुकता लिये हर व्यक्ति को दूसरे दिन आना ही होता था।

समय अपनी गति से चला रहा था। आखिर चातुर्मास अपने अन्तिम दौर में आ चुका था। गुरूदेव की विदाई होनी थी। विदाई शब्द ही अपने आप में बड़ा दुखदायी है।

(शेष पृष्ठ 61 पर)

With Best Compliments from
स्वर्णिम चातुर्मास
इचलकरंजी २०१४
पर अभिनंदन
" महालक्ष्मी "
MAHALAXMI GROUP OF TEXTILES
नारी का गौरव
गुरुभक्त
बाबूलाल, किशनलाल, चम्पालाल, भुरचन्द, गौतमचन्द,
संजय, महावीर, राजीव, दिपक, हरीश, कपिल, अंकित, रवि, सौरभ, भव्य,
जैनम्, धैर्य बेटा-पोता पीरचन्दजी हंजारीमलजी वडेरा (भानाणी) परिवार
प्रतिष्ठान
पीरचन्द बाबूलाल एन्ड कंपनी, बाड़मेर
महालक्ष्मी पोपलीन मिल्स प्रा. लि.
इचलकरंजी-मालेगांव-बालोतरा

स्वर्णिम चातुर्मास
इचलकरंजी २०१४

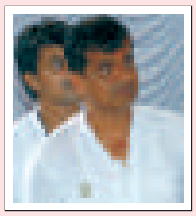

रमेश भंसाली (समदड़ी)

संघ का परम सौभाग्य

हमारे संघ का परम सौभाग्य है कि हमें ऐसे विरले महान राष्ट्रसंत गुरूदेव श्री व गुरूवर्या श्री का चातुर्मास मिला। इस चातुर्मास ने हमारे जीवन की दिशा ही बदल दी।

गुरूदेव श्री की प्रवचन शैली इतनी सरल है कि जनसामान्य भी सहजता से समझ जाते थे। प्रवचनों में 'जटाशंकर' की उपस्थिति जहाँ वातावरण को हास्य से परिपूर्ण बनाती थी, वहीं प्रस्तुत विषय को समझने में सहजता होती थी। प्रवचनों में जैनेतर लोगों की उपस्थिति अनुमोदनीय रही। इसमें विशेषता यह रही कि जैनेतर लोगों ने भी संघ पूजन का महत्व समझकर जैन विधि से संघ पूजन का लाभ लिया।

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. ने शिविरों के माध्यम से तत्व जैसे शुष्क विषय को इतनी सरलता से समझाया कि अनेक लोगों की जीवन शैली में जैनत्व का विकास हुआ, जीव-विचार, नवतत्व, जैन जीवन शैली के माध्यम से धर्म को विज्ञान की दृष्टि से समझने का अनुपम अवसर प्राप्त हुआ।

पहली बार हमने धर्म क्रिया संपूर्ण उपस्थिति के साथ संपन्न की। चार महीने का चातुर्मास मनाया। पर्युषण पर आराधना अभूतपूर्व रही। इस चातुर्मास की प्रशंसा न केवल संघ के सदस्यों ने की बल्कि संपूर्ण जैनसमाज, जिसमें दिगंबर, स्थानकवासी, तेरापंथी व आगंतुक संघों ने की।

कुल मिलाकर यह चातुर्मास इचलकरंजी के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित हुआ।

(पूर्व सचिव, मणिधारी जिनचंद्रसूरि दादावाड़ी संघ, इचलकरंजी)

(शेष पृष्ठ 59 का)

कर्म निर्जरा से मोक्ष मार्ग पर

गुरूदेव की मधुर वाणी, निश्छल प्रेम से हम वंचित होने वाले थे। विहार तो निश्चित ही होना है। आखिर मन को समझाते हुए एक दृढ़ संकल्प किया कि जब तक हमें ये सौभाग्य प्राप्त न हो कि हम पद विहारी बनकर वीर पथ में आगे बढ़ें, तब तक गुरूदेव के बताये दिशा-निर्देश अनुसार प्रतिदिन स्वाध्याय करते रहेंगे। आपके प्रवचनों के सार का आचरण करते हुए क्रमशः कर्म-निर्जरा करते हुए अन्तिम मंजिल मोक्ष पथ पर निरंतर आगे बढ़ते रहेंगे। हम आपको याद करें, यह कोई बड़ी बात नहीं। आपके विशाल हृदय में हमारे लिये भी एक छोटा स्थान हो। आप हमें कभी नहीं भूलें। आपका असीम वात्सल्य, निश्छल प्रेम, कृपादृष्टि निरंतर हम पर बनी रहे। यह हमारे लिये अमूल्य बात है।

प.पू. मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी ने चार महीने निरन्तर दोपहर में शिविर चलाकर ज्ञान की अलख जगाई। हमारे अन्धकारमय जीवन में प्रकाश की छटा बिखेरी। अब हमें उनके बताये मार्ग के अनुसार जीवन का निर्माण करना है। जीवनचर्या, आहार कैसा हो, यह सब बातें आचरण में लाकर आप का उपकार याद रखना है।

अन्त में, प.पू. उपाध्याय भगवन्त, श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा के कारण ही यह चातुर्मास स्वर्णिम रहा। उनका उपकार जिन्दगी भर चुकाया नहीं जा सकता।

स्वर्णिम चातुर्मास
इचलकरंजी २०१४
पर अभिनंदन

With Best Compliments from

M. RAMESH TEXFAB (INDIA) LLP

MFG & SUPPLIERS OF EXPORT QUALITY FABRICS

Head Office :

174-176, Kalbadevi Road, 2nd Floor,
Opp. Cohon Exchang Building
MUMBAI - 400 002
Tel. : (022) 22401573
Ramesh Bahi : 093240-01573

Branch Office :

18/198/1 M. R. House,
Near Hotel Manas
ICHALKARANJI - 416115
Dist. : Kolhapur
Tel. : (0230) 2435097, 2437235
Ashok Kumar : 094224-13445, 093251-13445

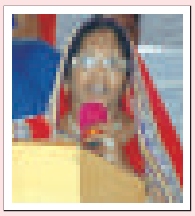

डॉ. प्रेमलता बाबूलाल ललवानी

वीराने में बहार

ज्ञान की पीयूष वर्षा लिए 2014 का चातुर्मास इचलकरंजी के लिए जैसे विराने में बहार लेकर आया। हम अपने भाग्य की सराहना किए बिना नहीं रह सकते।

लेखनी उठाई तो जैसे चातुर्मास का प्रत्येक दिन, प्रत्येक क्षण मेरी ऑखों के समक्ष आने लगा। अब तो उन दिनों की यादें ही हमारा मार्ग प्रशस्त करती है। चातुर्मास का हर दिन अपने आप में वैशिष्ट्य समेटे हुआ था।

जटाशंकर के प्रणेता जन-जन के हृदय सम्राट् बन बैठे। सुख सागर प्रवचन हॉल मे जनमेदिनी में जटाशंकर का प्रवेश होते ही शान्त वातावरण हास्य से सरोबार हो उठता। गंभीर से गंभीर विषय भी सरलता से जीवन-दशा को परिवर्तन करने में सक्षम होता था। जटाशंकर का आगमन हर रविवार को सामाजिक व पारिवारिक ज्वलन्त विषयों पर गहरा चिन्तन व समाधान किया जाता।

नैतिक आचरण ही धर्म का प्रथम सोपान है। परिवार को सुखी बनाने व रिश्तों में मधुरता बनाए रखने के सिद्धहस्त फार्मूले बताये जिससे जीवन मे नया उजियारा आया, हमारे सुप्त चेतन को जगाया। जैन अजैन सभी गुरूदेव के मुखारविंद से जिनवाणी सुनने को आतुर रहते थे।

गुरूदेव ने धार्मिक, सामजिक, राजनैतिक, गणित, भूगोल, ज्ञान, विज्ञान, ज्योतिष आदि जीवन के सभी विषयो पर चिन्तन मनन कर जिज्ञासाओं का समाधान किया। मुझे आज भी याद है वह दृश्य, जब आगम वांचना के दौरान जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति में काल गणना के समय सभी की आंखें स्तब्ध व मुंह खुले के खुले रह गये। मलयासुन्दरी की कहानी में प्रखर प्रवचन शैली द्वारा कल्पनाएं जैसे जीवन्त हो उठती। ज्ञान की अरूणिमा से जन मानस लाभान्वित हो गया।

अठारह पापस्थानक व संयम उपकरणावली का अनूठा नियोजन कर इचलकरंजजी में नया इतिहास रचा गया। उनके द्वारा पायी हुई हित शिक्षा समय-समय पर मेरा मार्ग दर्शन करती रहती है। गुरूदेव मणिप्रभसागरजी म.सा. की प्रवचन प्रखरता, मनितप्रभसागरजी म.सा. की मुस्कान व नीलांजनाश्रीजी म.सा. की वत्सलता ने मेरे और मेरे परिवार के जीवन मे पोजिटिव बदलाव अवश्य लाया है। इस चातुर्मास में सिर्फ खरतरगच्छ ही नहीं अपितु समाज का हर बच्चा, बुढा और युवा सभी के जीवन के मार्ग प्रशान्त हुए है।

गुरूदेव बौद्धिक क्षमता के शिल्पी है। इस चातुर्मास ने मेरे जीवन की दिशा ही बदल दी। यह सत्य है जिन कि वाणी को टेपरिकार्ड की भांति बार-बार सुनो ताकि वो हमारे जीवन का विषय ही बन जाए। वैसे तो जीवन के सफर में कई घटनाएं होती है, केई लोग मिलते है लेकिन कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते है जिनकी छवी हमारे मनस पटल पर अंकित हो जाते है। गुरूदेव व गुरूवर्या श्री की सानिध्यता ने हमारे जीवन को नई सोच दी है, और इनकी प्रेरणादायी मधुर वाणी और अमर कृतियां समय को चुनौती देकर माइलस्टोन के रूप में मुझे और मेरे परिवार को हर घडी हर पल मार्ग प्रशस्त करती रहेगी।

श्री पार्श्वमणि पार्श्वनाथाय नमः

पूज्य आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः

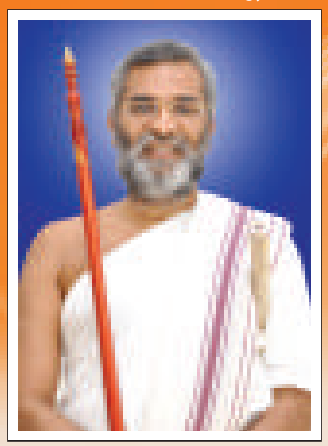

परम पूज्य आस्था केन्द्र,
वात्सल्य वारिधि, गच्छाधीपती मरूधर मणि
उपाध्याय भगवंत

गुरूदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

का

43 वां दीक्षा दिवस आषाढ वदि सप्तमी (7)
दिनांक 9 जून 2015

एवं

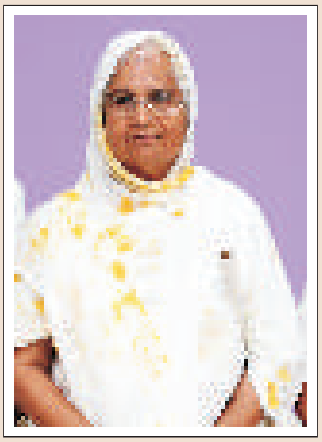

सुलोचना श्रीजी म.सा.

परम पूज्या पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका,
गणरत्ना दक्षिण प्रभाविका गुरूवर्या

श्री सुलोचना श्रीजी म.सा.

के दीक्षा के 53 वें वर्ष पूर्ण एवं 54 वें वर्ष में
प्रवेश पर आषाढ वदि षष्ठी (6)
दिनांक 8 जून 2015

हार्दिक अभिवंदना - अभिनन्दना

भाव सहित अर्चना

चिन्मय ज्योतिर्मय आपका, जीवन अमरता का संगीत ।
क्षमाशील करूणारस भावित, मानवता का मधुमय मीत ।।
संयम का सौन्दर्य कण-कण में उल्लास बिखेरता है।
गुरूदेव का मंगल सानिध्य ज्ञान चेतना को अलंकृत करता है।।

सादर समर्पित गुरू भक्त

पारसमल सौ. रतनाबाई गुलेच्छा

C/o आर. पारसमल जैन

4/30 बाजार स्ट्रीट, पोस्ट विंरचीपुरम - 632104
जिला वैलूर (तमिलनाडू) फोन : 0416-2272358 मोबाइल : 9486051597

Prof. Shweta prerak Lalwani

The turning point of my life

In the whirlpool of emotions,in the ocean of expectations we are struck with imperfect. relationship,indifferent,surroundings,

Clashes of ego,undefined future,mess of thoughts and untidy jumbled mind,I had been just 'surviving' instead of 'living'.

In such challenging and juncture of life,the 'chaturmas 2014',the 4 divine months,with the blessings of spritual role model,the divine Gurudev updhaya Shri Maniprabsagarji M.s & all his disciples came as a "mirror",which reflected light,depicted truth and showed me the right path.Not that I did not know how to walk,but I lacked the sense of right direction & control of my own speed.All these years I thought my education had helped me to know the world…only this chaturmas all this events whether it was pravachans,teachings through cibirs or simply discussions & small talks with Gurudev or may be with manitprabhasagarji M.s or Dr.Neelanjanashiriji M.s, every second, every minute, every moment spent made me realize that "knowledge was more to do with connection of thyself & innerself. I was drawn magnetically towards a never ending inner journey , real meaning to life , I am sure not only me , this chaturmas had a great impact on each and every body whether youth , the old or kids and everyone belives that our personality & well being are directly proportional to our deeds . If we incorporate small small teachings of our Dharma into our behaviour & action then surely they will turn into success vitamins for great life ahead .

This " Jeevan Dhara " of 4 months was a real awakening for all of us which actually ignited our thoughts in the minds & value to them . I am sure everyone has incorporated a " Fear for doing wrong things."I don't say wrong things have vanished but we all think why ? When we do something wrong may be anger or when we utter a lie, while cheating others or when wasting food or while having roots and food after sunset. Thus this chaturmas has become "Golden chaturmas " added value in our thoughts , actions ,speech & made us understand life in a better perspective opened the door which can heal all areas right from physical to emotional, spiritual to light & wrong behaviour , it has aroused a great curiosity towards our Jain dharma & it's ethics & bridged the gap between outer life & innerself .

In short "SUPER HIT FORMULAE " for maintaining " Healthy relationships " & living HAPPY & PURE LIFE.

This chaturmas was a real turn in my life & if I learn from this turning point , surely my life is going to be glorious & meaningful .

स्वर्णिम चातुर्मास
इचलकरंजी २०१४

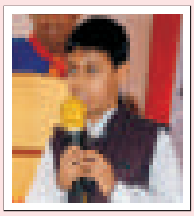

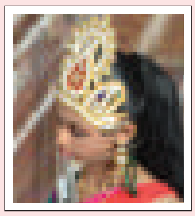

मनन लुंकड़ मेहा लुंकड़

स्वर्णिम चातुर्मास की स्वर्णिम झलकियाँ

1. पूज्य गुरूदेव श्री एवं गुरूवर्या श्री का भव्य चातुर्मासिक प्रवेश हुआ; जिसमें अन्य नगरों से करीब 700-800 गुरूभक्तों का पदार्पण।
2. भव्य चातुर्मासिक प्रवेश में सभी गच्छ व संप्रदाय के साधर्मिक बंधुओं का आगमन व सहयोग।
3. चातुर्मासिक प्रवेश के अभिनंदन समारोह में 4.00 बजे तक सभी की उपस्थिति।
4. चार महीनों तक अखण्ड प्रवचन श्रृंखला।
5. पयुर्षण महापर्व तक धर्मबिंदु प्रकरण पर प्रवचन।
6. 45 आगमों की अमृत वाणी।
7. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी द्वारा 18 पापस्थानकों की सामूहिक आलोचना कार्यक्रम।
8. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी द्वारा संयम उपकरण वंदनावलि कार्यक्रम एवं उपकरणों को प्राप्त करने के ऐतिहासिक चढ़ावे।
9. सभी गच्छों एवं सम्प्रदायों के प्रति समन्वय व अपनत्व भाव से पूज्य गुरूदेव श्री की हृदयस्पर्शी प्रवचन धारा।
10. प्रतिदिन शिविर- मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. एवं डॉ. नीलांजना श्रीजी म.सा. द्वारा युवकों का जीवविचार प्रकरण, जैन जीवन शैली, नवतत्व प्रकरण, दण्डक प्रकरण, प्रथम कर्मग्रन्थ का सरल व सहज भाषा में शिक्षण-प्रशिक्षण।
11. साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. द्वारा प्रतिक्रमण अर्थ एवं द्वितीय कर्मग्रंथ की क्लास तथा श्री विभांजना श्रीजी द्वारा बालकों के रविवारीय शिविर।
12. चातुर्मास दरम्यान गांव के किसी भी परिवार में खलल / दुखद घटना अथवा शोक का वातावरण नहीं बना।
13. पर्युषण महापर्व आराधना, साधना, उपासना, तप-त्याग-पौषध के साथ संपन्न।
14. तपश्चर्या में मासक्षमण, सिद्धितप, क्षीर समुद्र, सामूहिक अठाई, चिंतामणि तप, वीशस्थानक तप, सामूहिक अखण्ड तेले तथा सामूहिक अठाईयां दो भागों में बड़ी संख्या में हुईं।
15. चातुर्मास दरम्यान 10 दीक्षाओं के मुहूर्त प्रदान।
16. चातुर्मास दरम्यान हुबली, कन्याकुमारी, तिरपुर, कोयम्बतूर, इरोड, चैन्नई आदि स्थानों के प्रतिष्ठा मुहूर्त प्रदान।
17. ओलीजी में श्रीपाल-मयणासुंदरी की नाटिका।
18. दादा श्री जिनदत्तसूरि के जीवन पर आधारित नाटिका। चौथे दादागुरूदेव के जीवन पर 'आमावस को चांद उगायो' नाटिका।
19. प्रवचनों में जैनेतर लोगों का भी प्रतिदिन प्रवचन श्रवण हेतु आना व जीवन में परिवर्तन।
20. दादा गुरूदेव महापूजन का ऐतिहसिक आयोजन।
21. इचलकरंजी में प्रथम बार नाकोड़ा भैरव महापूजन का ऐतिहासिक आयोजन।
22. पंचाह्निका महोत्सव में विमल भाई कड़ी वालों द्वारा वर्धमान शक्रस्तव महापूजन एवं अर्हद अभिषेक का शास्त्रीय संगीत के साथ अलौकिक आयोजन।
23. अपेक्षा से ज्यादा करीब 70-80 संघों का बड़ी संख्या में आगमन।
24. अपेक्षा से ज्यादा करीब 16-17 हजार गुरूभक्तों का पदार्पण।
25. कार्तिक पूर्णिमा को सिद्धाचल की अनुपम भाव-यात्रा।
26. प्रवचनों में शनिवारीय-शंका समाधान।
27. रविवारीय-परिवार बने मधुबन, विषयों पर प्रवचन।
28. दीपावली व नववर्ष की अभूतपूर्व मांगलिक।
29. पूज्य गुरूदेव श्री के चातुर्मास से इचलकरंजी को भारत

के मानचित्र में स्थान मिला व नयी पहचान बनी। पूज्य गुरूदेव श्री व गुरूवर्या श्री के प्रेम, अपनत्व, वात्सल्य से ही यह चातुर्मास स्वर्णिम बना।

30. पिस्तादेवी छगनराजजी छाजेड़ परिवार द्वारा चतु:दिवसीय छ:री पालित संघ का अनुपम आयोजन।

31. साहित्य की अनेकविध योजनाएं एवं उसमें संघ का हार्दिक सहयोग।

32. मुनि श्री मतिनप्रभजी म.सा. द्वारा लिखित प्रत्याख्यान भाष्य विवेचन-प्रश्नोत्तरी पर ऑपन बुक एक्जाम।

भावसार परिवार द्वारा यात्रा संघ का आयोजन

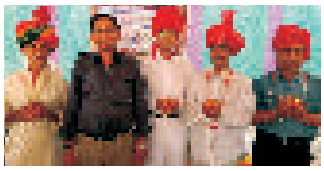

पालीताणा स्थित श्री जिन हरि विहार धर्मशाला में पूज्य गणाधीश उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. आदि ठाणा की निश्रा में एवं पूज्या खानदेश शिरोमणि साध्वी दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा व साध्वी प्रियदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा के सान्निध्य में दि. 17 मई को बडौदा निवासी श्रीमति गुणवंताबेन बालुभाई भावसार परिवार का बडौदा से श्री सिद्धाचल महातीर्थ का यात्रा संघ आयोजन करने पर हरि विहार के महामंत्री श्री बाबुलालजी लुणिया द्वारा अभिनंदन किया गया।

इस पावन अवसर पर मुनि मेहुलप्रभसागरजी म. एवं पूज्या खानदेश शिरोमणि साध्वी दिव्यप्रभाश्रीजी म. आशीर्वचन फरमायें। पूज्या साध्वी दक्षगुणाश्रीजी म. ने तीर्थ-भक्ति गीतिका गायी। आयोजक संघपति परिवार ने पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंतों को कामली अर्पण कर गुरुभक्ति की। भावसार समाज द्वारा आयोजक परिवार का अभिनंदन किया गया। सभा का संचालन रोहित भाई भावसार ने किया। आभार संघपति श्री नरेश भाई भावसार ने व्यक्त किया।

स्वर्णिम चातुर्मास
इचलकरंजी २०१४
पर अभिनंदन

With Best Compliments from

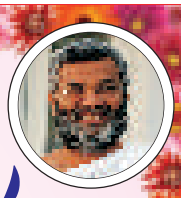

(Dhariwal Group)

M. SampatRaj & Co.

12/806, Dr. R. P. Road
ICHALKARANJI
Tel. : (0230) 2434359
Cell : 094224 12381

VEER PRABHU PRODUCT
MALGAON

पूज्य आचार्यश्री का नाकोडाजी में स्वर्गवास

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनकैलाशसागरसूरिजी म. का 82 वर्ष की उम्र में श्री नाकोडाजी तीर्थ पर ता. 23 मई 2015 ज्येष्ठ सुदि दूसरी पंचमी को स्वर्गवास हो गया।

पूज्यश्री का जन्म नागोर जिले के रूण गांव में वि. सं. 1990 वैशाख सुदि 3 को श्री चतुर्भुजजी - सौ. श्रीमती दाखीबाई कटारिया के घर हुआ था। आपके पिताश्री चतुर्भुजजी ने पूज्य आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरिजी म. के पास संयम ग्रहण कर तीर्थसागरजी म. नाम प्राप्त किया था। पिताजी के ही पदचिह्नों पर चलते हुए 25 वर्ष की युवा उम्र में वि. 2015 आषाढ सुदि 2 को संयम ग्रहण कर पूज्य आचार्य श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरिजी म. का शिष्यत्व प्राप्त किया। मुख्यत: राजस्थान में आपका विचरण रहा। नागोर दादावाडी के निर्माण में आपकी प्रेरणा रही।

पूज्य आचार्य श्री जिनमहोदयसागरसूरिजी म. के स्वर्गवास के पश्चात् आपने खरतरगच्छ गणाधीश पद प्राप्त कर गच्छाधिपति का दायित्व निभाया। वि. 2054 माघ सुदि 6 को नाकोडा तीर्थ में आपको उपाध्याय पद से विभूषित किया गया। वि. सं. 2063 में माघ सुदि 13 को पालीताना में आपको आचार्य पद से विभूषित किया गया।

पिछले लम्बे समय से अस्वस्थता के कारण आपश्री नाकोडाजी तीर्थ पर बिराजमान थे। आपके स्वर्गवास से गच्छ व समुदाय को बडी क्षति हुई है। श्री नाकोडाजी तीर्थ पर स्वतंत्र भूमि लेकर उनके पार्थिव शरीर का अग्निसंस्कार किया गया। अग्नि संस्कार के अवसर पर देश के विभिन्न संघों की उपस्थिति रही। उस अवसर पर पूज्य उपाध्यायश्री द्वारा प्रेषित सकल श्री संघ के नाम संदेश का वांचन किया गया। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

गुणानुवाद सभा का आयोजन

पूज्य आचार्य श्री के स्वर्गवास के समाचार सुनते ही पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. आदि मुनि मंडल एवं पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल ने बडे देववंदन कर कायोत्सर्ग किया। तत्पश्चात् गुणानुवाद करते हुए पूज्यश्री ने कहा- पूज्य आचार्य श्री की यह पुण्याई है कि उनके गुरु भगवंत कवि सम्राट्जी का स्वर्गवास भी सुदि पंचमी को हुआ था। और आपने भी उसी तिथि को स्वर्गलोक की ओर प्रयाण किया। हम हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करते हैं। और कामना करते हैं कि उनकी आत्मा क्रमश: मोक्ष पद को प्राप्त करे। भारत भर में स्थान स्थान पर गुणानुवाद सभाओं का आयोजन किया गया। पूजाऐं पढाई गई।

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित

श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित

श्री जिनकुशल हेम विहारधाम

जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।

निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार

संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

खरतरगच्छ के 82वें गणाधीश पद का चादर समारोह संपन्न

पूज्य प्रज्ञापुरूष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के प्रधान शिष्य रत्न पूज्य गुरुदेव मरूधर मणि उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. को सिंधनूर नगर की पावन धरा पर वीर संवत् 2541 ज्येष्ठ शुक्ल 11 शुक्रवार 29 मई 2015 को खरतरगच्छ के 82वें गणाधीश के रूप में प्रतिष्ठित किया गया।

इस कार्यक्रम में पूज्य प्रवर के शिष्य पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गण रत्ना श्री सुलोचनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रीतियशाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन उपस्थिति रही। इस समारोह में सम्मिलित होने के लिये विशेष रूप से उग्र विहार कर श्रमण संघीय उपप्रवर्तक श्री नरेशमुनिजी म.सा. श्री शालिभद्रमुनिजी म. पधारे।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने गणाधीश के रूप में अपने प्रथम संबोधन में गच्छ के इतिहास की चर्चा करते हुए इसके सुनहरे अतीत का वर्णन किया। तथा बताया कि हमें बहुत जल्दी तैयारियां करनी है कि हम गच्छ का सहस्राब्दी समारोह रचनात्मक कार्यों के साथ मना सके। इसके लिये हमें पारस्परिक मतभेदों को भुलाना होगा। मेरा सभी साधु साध्वीजी म. एवं श्रावक श्राविकाओं से नम्र अनुरोध है कि हम सभी संपूर्ण रूप से एक होकर गच्छ व समुदाय को प्रगति के मार्ग पर ले जाने का पुरूषार्थ करें। इसके लिये मैं चाहता हूँ कि हमारे सुखसागरजी महाराज के समुदाय के समस्त साधु साध्वीजी म. का सम्मेलन शीघ्र आयोजित किया जाये। इस लिये मैं यह घोषणा करता हूँ कि यह सम्मेलन इस चातुर्मास के तीन-साढे तीन महिने बाद आयोजित किया जायेगा। स्थान व समय की घोषणा रायपुर चातुर्मास प्रवेश के अवसर पर की जायेगी। सकल संघ ने इस घोषणा को जय जयकारों से बधाया।

पूज्यश्री ने सर्वप्रथम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी म., पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. को प्रणाम किया। पू. बहिन म. का स्मरण करते हुए आज के दिन उनकी अनुपस्थिति के लिये दर्द प्रकट किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. ने कहा- आज के समारोह को देखने के लिये हजार हजार आंखें जैसे आनंद से पुलकित हो रही है, हजार हजार हृदय प्रसन्नता से सराबोर होकर नृत्य कर रहे हैं। इस दुनिया के अन्दर शिखर के कंगूरे को प्रणाम करने वाले हजारों लोग मिलते हैं, परन्तु वे भूल जाते हैं कि यह शिखर जिस नींव पर खडा है, उस नींव का अपना बहुत बडा बलिदान है। आज मैं शिखर को बधाई देने से पहले नींव के उन दो पत्थरों को बधाई देना चाहूँगा, जिन पर यह आलीशान प्रासाद खडा हुआ है। उन्होंने कहा- मैं सबसे पहली बधाई उस रत्नगर्भा धर्ममाता संघमाता गणाधीश माता को देना चाहूँगा जिनकी कुक्षि से हमारे संघ और गच्छ को एक मणि के रूप में कोहिनूर प्राप्त हुआ है। न करती वो माता अपने पुत्र के प्रति ममता का बलिदान तो आज हमें जो व्यक्तित्व सामने दिखाई दे रहा है, वह न होता। दूसरी बधाई मैं पूज्यश्री के गुरुदेव को देना चाहूँगा कि जिनके हाथों से तराशा गया एक सामान्य प्रस्तर आज जिन शासन की दैदीप्यमान मणि के रूप में चमक रहा है। उन्होंने तीसरी बधाई पूज्यश्री को प्रदान की। इस अवसर पर पूजनीया माताजी महाराज आदरणीया बहिन म.सा. की उपस्थिति होती तो इस कार्यक्रम में और अधिक चमक दमक आती। उनकी कमी को पूज्यश्री एवं हम सभी लगातार महसूस कर रहे हैं। और ऐसा कहते हुए वे भावुक हो उठे।

इस अवसर पर श्रमणसंघीय उपप्रवर्तक प्रवर श्री नरेशमुनिजी म. ने पूज्यश्री को बधाई एवं शुभकामना देते हुए कहा- एक योग्य व्यक्तित्व के हाथ में जब शासन की बागडोर आती है तब वह शासन-बाग वैसे ही खिल उठता है, जैसे एक योग्य माली के हाथ में कोई उपवन आता है।

पूज्यश्री का मेरा बहुत पुराना परिचय है। परिचय के साथ साथ प्रेम भी है। उनमें गंभीरता, उदारता, मधुरता, समन्वयता, सौजन्यशीलता जैसे अनेकानेक गुणों का अनुभव किया है। पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. ने कहा- आज हम अत्यन्त प्रसन्न हैं कि आज हमारे समुदाय को एक समुन्नत व्यक्तित्व प्राप्त हुआ है। पूज्यश्री अत्यन्त निर्लिप्तता के साथ जो जीवन जीते हैं, उस निर्लिप्तता का स्पर्श करके हम गुणों को प्राप्त कर सकते हैं।

साध्वी श्री प्रीतियशाश्रीजी म. ने भी अपने विचार व्यक्त किये। अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महासंघ के कोषाध्यक्ष बाबुलालजी छाजेड ने अपनी ओर से एवं महासंघ की ओर से, संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा ने, श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी की ओर से, बिलाडा दादावाडी के अध्यक्ष श्री भूरचंदजी जीरावला एवं सिंधनूर जैन संघ की ओर से श्री गौतमचंदजी बम्ब ने शुभकामना व्यक्त की। पट्ट परम्परा का उल्लेख करते हुए खरतरगच्छ श्री सुखसागरजी महाराज के समुदाय के वरिष्ठ मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म., गणिवर्य श्री पूर्णानंदसागरजी म. आदि समस्त साधु साध्वियों की ओर से शुभ मुहूर्त्त में गणाधीश की चादर पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी आदि साधु मंडल ने पूज्यश्री को ओढाई। उस समय सारा वातावरण खुशियों से नाच उठा। नूतन गणाधीश की जय जयकार से पूरा पाण्डाल गूंज उठा। पूज्यश्री को अभिनंदन पत्र प्रदान किया गया।

इस अवसर पर पार्श्व मणि तीर्थ, कुशल वाटिका बाडमेर, गज मंदिर केशरियाजी, जहाज मंदिर मांडवला, जिन हरि विहार पालीताना, कैवल्यधाम रायपुर, चम्पावाडी सिवाना, अ.भा. हाला संघ के पदाधिकारी उपस्थित थे। साथ साथ चेन्नई, बैंगलोर, हैदराबाद, सिकन्द्राबाद, मुंबई, इचलकरंजी, अहमदाबाद, रायपुर, जोधपुर, हॉस्पेट, बल्लारी, गदग, हुबली, कम्पली, हुविनहडगली, कोट्टूर, मानवी, रायचूर, आदोनी, पूना, सिवाना, मोकलसर, तिरपुर, तिरूनेलवेली, तिरूपातुर, जालना, गंगावती, कारटगी, सोलापुर, सांचोर, हगरीबोम्मनहल्ली, पादरू, धोरीमन्ना, मैसूर, अक्कलकुआं, नन्दुरबार, कोप्पल आदि कई संघों के आगेवान बडी संख्या में उपस्थित थे। समस्त संघों ने कामली ओढा कर पूज्यश्री का अभिनंदन किया। समय की अल्पता के कारण दूर सुदूर क्षेत्रों के संघ जो नहीं पहुँच पाये, उन्होंने संचार माध्यम से पूज्यश्री का वर्धापना के साथ अभिनंदन किया। संगीतकार अंकित लोढा रायपुर व अरविन्द चौरडिया इन्दौर ने संगीत की स्वर लहरियों के माध्यम से वातावरण को संगीतमय बनाया।

एक दिन पूर्व ता. 28 मई को गुरू गुण वंदनावली का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने संचालन किया। इसमें मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म., साध्वी श्री प्रियलताश्रीजी म., साध्वी श्री प्रियकल्पनाश्रीजी म., साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म., साध्वी श्री प्रियश्रेयांजनाश्रीजी म., साध्वी श्री प्रियश्रुतांजनाश्रीजी म., साध्वी श्री प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म., साध्वी श्री प्रियमेघांजनाश्रीजी म., साध्वी श्री प्रियशैलांजनाश्रीजी म. ने पूज्यश्री के गुणानुवाद करते हुए उनको गणाधीश बनने पर हार्दिक बधाई प्रस्तुत की।

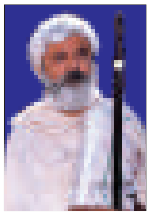

फलोदी में चातुर्मास प्रवेश 22 जुलाई 2015 को

प.पू. गणाधीश उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के निश्रावर्ती पू. मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पू. मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. आदि ठाणा का जोधपुर जिले के फलोदी नगर में 22 जुलाई 2015 द्वितीय आषाढ़ सुदि 6 वार बुधवार को भव्य चातुर्मास प्रवेश होगा।

सिंधनूर में भागवती दीक्षा संपन्न

कर्णाटक प्रान्त के सिंधनूर नगर में पूज्य गुरुदेव खरतरगणाधिपति उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. पूज्य बाल मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ठाणा 6 एवं पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणरत्ना श्री सुलोचनाश्रीजी म. पू. प्रीतियशाश्रीजी म. पू. प्रियस्मिताश्रीजी म. पू. प्रियलताश्रीजी म. पू. प्रियवंदनाश्रीजी म. पू. प्रियकल्पनाश्रीजी म. पू. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. पू. प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. पू. प्रियप्रेक्षांजनाश्रीजी म. पू. प्रियश्रेयांजनाश्रीजी म. पू. प्रियश्रुतांजनाश्रीजी म. पू. प्रियदर्शांजनाश्रीजी म. पू. प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म. पू. प्रियमेघांजनाश्रीजी म. पू. प्रियविनयांजनाश्रीजी म. पू. प्रियकृतांजनाश्रीजी म. पू. प्रियचैत्यांजनाश्रीजी म. पू. प्रियशैलांजनाश्रीजी म. पू. प्रियमुद्रांजनाश्रीजी म. पू. प्रियमंत्रांजनाश्रीजी म. ठाणा 20 की पावन निश्रा में सिंधनूर निवासी कुमारी शिल्पा महावीरचंदजी नाहर की भागवती दीक्षा ता. 29 मई 2015 को अत्यन्त उल्लास भरे वातावरण में संपन्न हुई। इस अवसर पर सोने में सुहागा श्रमण संघ के उपप्रवर्तक श्री नरेश मुनिजी म. पू. शालिभद्रमुनिजी म. उग्र विहार कर पधारे। उनका सानिध्य प्राप्त होने से सकल संघ में उल्लास का वातावरण छा गया।

दीक्षा निमित्त पूज्यश्री एवं साध्वी मंडल चेन्नई से उग्र विहार कर सिंधनूर पधारे। ता. 27 मई को पूज्यवरों का मंगल प्रवेश हुआ। ता. 28 को वर्षीदान का भव्य वरघोडा संपन्न हुआ। रात्रि को विदाई समारोह का भव्य आयोजन हुआ। जिसमें मुंबई से पधारे संजय भाई भाऊ ने अपनी प्रस्तुति दी। दीक्षा के अवसर पर कुमारी शिल्पा ने अपने हृदय में संयम कैसे प्रकट हुआ, का विवेचन किया। उसने अपनी मां का स्मरण किया। जब

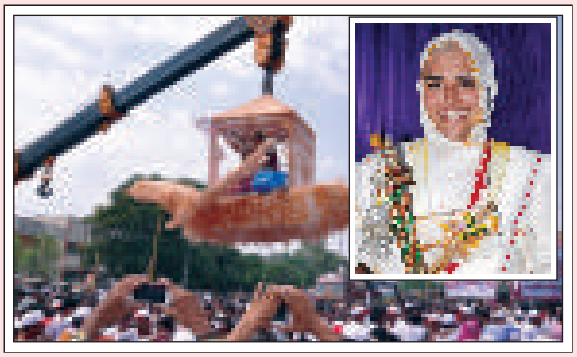

पूज्यश्री का धोबी पेठ में पदार्पण

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं पू. साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री विराग-विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा का 15 अप्रेल को चेन्नई महानगर के धोबी पेठ में मंगल प्रवेश हुआ। धोबी पेठ संघ की ओर से वरघोडे के साथ भावभीना मंगल प्रवेश करवाया गया। धोबी पेठ संघ कन्याकुमारी प्रतिष्ठा के समय से ही पूज्यश्री के प्रवास की प्रार्थना कर रहा था। दादावाडी से विहार कर पूज्यश्री एस. आर. मंदिर पधारे, जहाँ सकल श्री संघ का धोबी पेठ संघ की ओर से नाश्ते का आयोजन किया गया।

श्री शांतिनाथ मंदिर एवं दादावाडी के दर्शन कर पूज्यश्री पाण्डाल पधारे। जहाँ पूज्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ। पूज्यश्री ने अपने प्रवचन में धोबी पेठ संघ की एकता, भावना, उल्लास की महिमा करते हुए कहा- ऐसा लगता है जैसे आज चातुर्मास का प्रवेश हुआ हो। इतनी तैयारी के पीछे एक मात्र समर्पण और भक्ति की भावना है। इस भावना की जितनी अनुमोदना की जाये, कम है। पूज्यश्री ने कई उदाहरणों से श्री संघ की महिमा समझाई। इस अवसर पर पू. साध्वी श्री मधुस्मिताश्रीजी म., पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. ने भी अपने विचार रखे। पू. विश्वज्योतिश्रीजी म. ने कहा- चेन्नई मेरी जन्मभूमि है। दीक्षा के पश्चात् पहली बार जन्मभूमि में मेरा आगमन हुआ है। यह मेरे लिये परम सौभाग्य की बात है कि पूज्यश्री की निश्रा में हमारा आना हुआ है। जन्मभूमि की ओर से पूज्यश्री का हार्दिक अभिनंदन है। समारोह में मुमुक्षु जयादेवी सेठिया एवं संयम कुमार सेठिया का श्री संघ की ओर से बहुमान किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में धोबी पेठ श्री संघ के आगेवान श्री केवलचंदजी राठौड, शांतिलालजी लूंकड, श्री प्रकाशजी पारख, ललित सुन्देशा, तिलोकजी भंसाली, रमेशजी पारख, शांतिलालजी गुलेच्छा, मोहनलालजी गुलेच्छा, गौतमजी सेठिया आदि श्रावकों व श्री शांतिनाथ जैन मंडल तथा महिला मंडल का बहुत पुरूषार्थ रहा। समारोह के पश्चात् सकल संघ का स्वामिवात्सल्य धोबी पेठ श्री जैन श्री संघ की ओर से रखा गया। मात्र एक दिन का प्रवास धोबी पेठ संघ के लिये ऐतिहासिक व अविस्मरणीय बन गया।

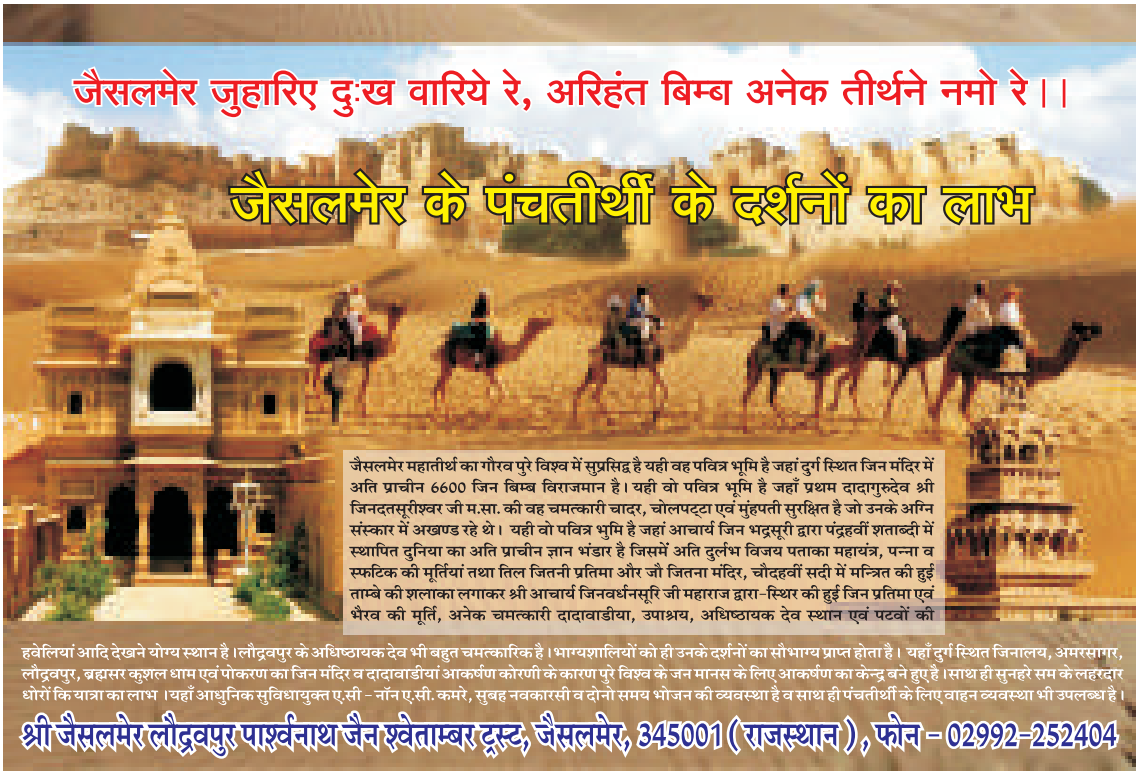

शुभ मुहूर्त्त में पूज्यश्री ने उसके हाथों में रजोहरण सौंपा तो तालियों की गडगडाहट से जनसमूह ने उसके त्याग को बधाया। उन्हें पूजनीया साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया तपोरत्ना श्री सुलक्षणाश्रीजी म. की शिष्या घोषित करते हुए पू. प्रियसूत्रांजनाश्रीजी नाम दिया। यह ज्ञातव्य है कि श्री सुलोचनाश्रीजी म. सा. के पास इनकी सांसारिक तीन भुआजी म. पू. प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. पू. प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म. पू. प्रियकृतांजनाश्रीजी म. पूर्व में दीक्षित हैं। दीक्षा के साथ तीन साध्वीजी म. की बडी दीक्षा भी आज संपन्न हुई। बल्लारी में दीक्षित पू. प्रियशैलांजनाश्रीजी म. चेन्नई में दीक्षित पू. प्रिय मुद्रांजनाश्रीजी म. व प्रिय मंत्रांजनाश्रीजी म. को बडी दीक्षा प्रदान की गई। इस समारोह की सबसे बडी विशेषता यह रही कि समारोह में तीन बज गये पर पाण्डाल वैसा का वैसा भरा रहा। इस अवसर पर पूज्यश्री का गुरुपूजन किया गया। जिसका लाभ चेन्नई निवासी एक गुरु भक्त परिवार की ओर से लिया गया।

सिंधनूर में दादावाडी बनेगी

सिंधनूर में दादावाडी बनने के लिये भूमि का क्रय कर लिया गया है। लगभग 2 एकड से अधिक भूमि श्री संघ द्वारा खरीदी गई है। पूजनीया साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. सा. की प्रेरणा से बनने वाली इस दादावाडी का कार्य शीघ्र ही प्रारंभ किया जायेगा।

सिंधनूर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न

सिंधनूर नगर के चौमुख मंदिर की पुनः प्रतिष्ठा अंजनशलाका पूज्य गुरुदेव उपाध्याय गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. आदि विशाल साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में ता. 31 मई 2015 रविवार को संपन्न हुई। कारणवश समस्त प्रतिमाओं का उत्थापन किया गया था। जिसकी पुनः प्रतिष्ठा 31 मई को संपन्न हुई। विधिविधान कराने संगीतकार व विधिकारक श्री अरविन्दभाई चौरडिया का आगमन हुआ था।

'प्रत्याख्यान भाष्य' open book exam का परिणाम

पूज्य गुरूदेव उपाध्यायप्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. के शिष्य पूज्य मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा विवेचित प्रत्याख्यान भाष्य की पुस्तक पर ऑपन बुक एक्जाम का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी जिनचंद्रसूरि दादावाडी संघ इचलकरंजी के तत्त्वावधान मे लिया गया जिसमें 195 प्रतियोगियों ने भाग लिया। इस परीक्षा के पुरस्कार प्रायोजक नेमीचंदजी-राणामलजी छाजेड (हरसाणी-इचलकरंजी) थे। प्रस्तुत कार्य में मुमुक्ष रजत सेठिया, चौहटन का विशेष योगदान रहा। प्रश्न पत्र कुल 250 अंको का था तथा इसमें सभी ने अच्छे अंक प्राप्त किये।

1. प्रथम स्थान-भारती बोथरा-जियागंज-248
2. द्वितीय स्थान- हनुमानचंद छाजेड- इचलकरंजी -247
3. तृतीय स्थान-प्रमिला कीमती-इन्दौर-246

सात अभिनंदन पुरस्कार

4. प्रतिभा गांधी-पुना-245
5. सरस्वती छाजेड़ - इचलकरंजी- 245
6. प्रिया चोपडा-इन्दौर- 245
7. सिम्मी मेहता-अहमदाबाद- 245
8. सरोज गोलछा-राजनांदगॉव-245
9. कुसुम फोफलिया-जयपुर- 244
10. लीना मेहता-विजयपुर- 243
11. शैलेष ललवाणी-इचलकरंजी- 242
12. नितू सुराणा- कडूर- 242
13. सुनीता दुसाज- जयपुर- 242
14. पिस्ता गोलेच्छा- जयपुर- 242
15. शशी पिंचा- धमतरी- 242
16. शारदा ओसवाल-बिजापुर-242
17. सुभाष संकलेचा- जालना 241
18. मंजूला शाह- बिजापुर- 240
19. सुनीता चौपड़ा- बिजापुर- 240
20. पुनम गोलेच्छा-अक्कलकुँवा- 240
21. सुमन भण्डारी- ब्यावर- 240
22. प्रिती मण्डलेचा- मलाड़- 240
23. स्वाति बोहरा- ब्यावर- 240
24. राजमल वेदमुथा-इचलकरंजी-239
25. मधुदेवी लुंकड-इचलकरंजी- 239
26. मनीला पारख- जयपुर- 239
27. वर्षा पोरवाल- बिजापुर- 239
28. दिव्या शाह- बिजापुर- 238
29. श्वेता मेहता- बिजापुर- 238
30. प्रियंका बालड-हैदराबाद-238
31. सुनिता लुणिया- सातारा-238
32. दिक्षा वड़ेरा-विजयवाड़ा-238
33. रेणु चौपड़ा- ब्यावर- 238
34. सविता नाहार-इचलकरंजी-237
35. सुलोचना चौपड़ा-ब्यावर-237
36. विनिता जैन- ब्यावर- 237
37. सुशीला भंडारी-कोटा-237
38. झलक जैन- ब्यावर- 237
39. मनोहरलाल झाबख-कोटा-237
40. सारिका जैन-दादर-236
41. पुष्पा खटोड़-ब्यावर- 236
42. सुशीला रांका-जलगांव- 236
43. संतोष जैन-विजयवाड़ा- 236
44. सुशीला डागा-पाली- 236
45. राजुलबेन शहा-बिजापुर-236
46. विद्यादेवी पोरवाल-बिजापुर-235
47. मंजुला जैन- जयपुर- 234
48. सायर संचेती- जयपुर- 234
49. रेखा खटोड़-जयपुर- 233
50. भाग्यश्री पोलडिया-जलगांव-233
51. देवबाला नहार-इचलकरंजी-232
52. चंदनबाला जैन- कोटा- 232
53. शीतल जैन- चैन्नई- 232
54. इन्दुबेन जैन- बिजापुर- 231
55. शर्मिला ओसवाल-कोल्हापुर-231
56. डीम्पल छाजेड़- पाली- 231
57. अमिता तांबी- जयपुर- 231
58. नीतू मेहता- बिजापुर- 231
59. मधु जैन- पाली- 231
60. नीरू जैन- जयपुर- 230
61. चेतना डोशी- जलगांव- 230
62. ज्योति शाह- जलगांव- 229
63. सीमा भंडारी- ब्यावर- 229
64. तारादेवी रूनीवाल-जयपुर-229
65. इन्दु डागा- जयपुर- 228
66. मोहना जैन- कोटा- 227
67. निर्मला डागा- पुदुचेरी- 227
68. निर्मला लुणिया-इचलकरंजी-227
69. नेहा जैन- जयपुर- 227
70. अंशुल जैन- जयपुर- 227
71. निर्मला बाफना-नंदूरबार-226
72. मधुबाला बेन शहा-इचलकरंजी-226
73. सपना बेन शहा-जलगांव-226
74. नेहा जैन- बिजापुर- 226
75. आशीष जैन- जयपुर- 225
76. मंजू गांधी- जयपूर- 225
77. हर्षिका कटारिया- पाली- 225
78. भूरचन्द मालू- जोधपुर- 224
79. प्रज्ञा बेन शाह- जलगांव- 224
80. शशी बोहरा- पुडुचेरी- 224
81. मेघना शहा-इचलकरंजी- 224
82. हाडु बोहरा- पुडुचेरी- 223
83. मीना बैद-इंदौर- 223

84. सरिता कोचर- पुडुचेरी- 223
85. सुशीला बोहरा-इचलकरंजी- 223
86. लताबेन सांखला-बिजापुर-222
87. ललीता लुंकड़- बल्लारी-222
88. भारती शाह- जलगांव- 222
89. ममता कोचर- पुडुचेरी- 222
90. जवाहरलाल जैन-शिरपुर-222
91. बदामीदेवी चौपड़ा-बिजापुर-222
92. भाग्यवंतीबेन तातेड़-नंदूरबार- 221
93. प्रदीपकुमार शाह-भिलाई- 221
94. हर्षाबेन दोशी- जलगांव- 220
95. पारसबाई डागा-अक्कलकुवा- 220
96. कुसुम जैन-भिलाई-219
97. ताराबेन ओस्तवाल-इचलकरंजी-219
98. रेणुका जैन-अक्कलकुवा- 218
99. कविताश्रीश्रीमाल-अक्कलकुवा-218
100. सरोज जैन- पुडुचेरी- 217
101. राजेश्वरी संकलेचा- अमलीपदर-217
102. अनिता गोलेच्छा-अक्कलकुवा-217
103. सारिका शाह-जलगांव- 216
104. शकुन्तला बोहरा-दिल्ली-216
105. पायल मेहता-इचलकरंजी-216
106. अमीत जैन- गदग- 215
107. अंजु जैन- जयपुर- 214
108. शोभा बच्छावत-फलोदी-214
109. खुशबु संकलेचा-बिजापुर-213
110. ममता देसर्डा- नंदूरबार- 213
111. सोनल कोचर-अक्कलकुवा- 213
112. सविता बोथरा- इन्दौर- 213
113. वैशाली शाह-बारामती- 213
114. पुखराजजी ललवानी-कोल्हापुर-212
115. प्रिती दोशी- बारामती- 212
116. प्रिती श्रीश्रीमाल-बिजापुर-211
117. चंदनबाला बाफना-नंदूरबार- 210
118. आयुषी कोचर-नंदूरबार- 210
119. भावना सालेचा-नंदूरबार-209
120. मनीषा चौपड़ा-बिजापुर-209
121. शोभा गोलेच्छा- अक्कलकुवा-209
122. हंजा बेन सुराणा-जलगांव-209
123. नीतू तातेड़- नंदूरबार- 208
124. मोना डागा-अक्कलकुवा-208
125. दिप्ती चोरड़िया-इचलकरंजी- 208
126. धनश्री लुंकड-जलगांव- 208
127. भावना लुंकड-इचलकरंजी- 208
128. प्रिया जैन-अक्कलकुवा- 207
129. सिद्धि गोलेच्छा-अक्कलकुवा- 206
130. शीला कोचर- पुडुचेरी- 205
131. पुखराजजी ललवानी-इचलकरंजी-205
132. भावना गोलेच्छा-अक्कलकुवा-204
133. ज्योति बोहरा-अहमदनगर - 204
134. रूपाली नाहटा- शहादा- 204
135. नूतन बोहरा- इचलकरंजी- 204
136. सुरेखा दोशी- जलगांव- 203
137. मेघा जैन-अक्कलकुवा- 203
138. किरण लुणावत-नंदूरबार- 202
139. खुशबु ओस्तवाल-गदग- 202
140. प्रतिभा बुरड़-वाण्याविहार- 202
141. सुंदरदेवी कानूंगा-इचलकरंजी-202
142. सुशीला कोचर-अक्कलकुवा- 202
143. सुनीता बलाई- पाली- 201
144. रूचिका भंसाली-सांचोर-200
145. रेखा काठोड़- ब्यावर- 200
146. वनिता बोथरा-अहमदाबाद- 200
147. मंजू कोठारी-अमलनेर- 200
148. पूजा रांका- चौहटन- 200
149. श्वेता ललवानी-धुलिया-200
150. प्रियंका गोलेच्छा-खापर- 199
151. महेश सिंघवी- बाड़मेर- 199
152. निर्मला जैन- नंदूरबार- 198
153. ज्योति लोढ़ा-सारंगखेड़ा-198
154. रत्ना कोठारी-अमलनेर- 198
155. पुष्पा नाहटा- शहादा- 198
156. पुष्पा डोशी- ब्यावर- 197
157. नीतू सिंघवी- बाड़मेर- 197
158.भंवरलाल संकलेचा- अक्कलकुवा-197
159. पुखराजजी ललवानी-पाली- 196
160. वर्षा काठेड़-अक्कलकुवा- 196
161. उषा जैन- ब्यावर- 195
162. दिव्या बोथरा-इचलकरंजी- 193
163. रमेश डागा-अक्कलकुवा- 193
164. ललिता बोथरा-खापर- 193
165. निता कोचर- नंदूरबार- 192
166. मंजू सोलंकी- ब्यावर- 192
167. मंजूलता मालू-चौहटन- 192
168. तारा बोथरा- इन्दौर- 192
169. कविता बुरड़-वाण्याविहिर- 191
170. शिल्पा रायसोनी-नंदूरबार- 191
171. स्मिता शाहा-बिजयापुर- 188
172. शर्मिला बैद-कडलूर- 188
173. उषा संचेती- पाली- 187
174. वर्षा टाटीया- जलगांव- 187
175. कोमल जैन- वमणिया- 186
176. रींकू गोल- सेलम- 183
177. फाल्गुनी शाहा-बिजापुर-181
178. सुरभी जैन- जोधपुर- 177
179. इन्द्रा संकलेचा-हैदराबाद- 176
180. कविता बालर-इचलकरंजी- 176
181. पुष्पादेवी नाहटा- इचलकरंजी- 174
182. विमलादेवी गोठी-इचलकरंजी- 173
183. अनिता पोरवाल-विजयपुर- 171
184. कृति जैन- जोधपुर- 167
185. राजेन्द्र गॉधी- यादगीरी- 166
186. पुखराजजी एस ललवानी-इचलकरंजी-166
187. अंजलीजैन-बैंगलोर- 162
188. पुष्पादेवी मेहता-इचलकरंजी- 159
189. ज्योती नाहटा- शाहदा- 158
190. दमयंती गोसर-जलगांव- 157
191. रसीलाबेन दोशी-जलगांव- 156
192. मंजू सिंघवी-इचलकरंजी- 149
193. संगीता श्रीश्रीमाल- इचलकरंजी-131
94. अरविंद सी मोदी-जालौर-131
195. विमला बागरेचा-इचलकरंजी- 129

चैन्नई दीक्षा की झलकियाँ

भव्य दीक्षा महोत्सव शंखेश्वर तीर्थ

श्री शंखेश्वर महातीर्थ की पुण्यधरा पर श्री आदिनाथ जिनालय एवं जिनकुशल सूरि दादावाड़ी परिसर में बाड़मेर निवासी मुमुक्षु कु. मीना छाजेड़ और मुमुक्षु श्रीमती गीता बोथरा की भव्यातिभव्य दिक्षा प.पू. गणाधीश उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के निश्रावर्ती पू. मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पू. मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. के वरदहस्त से सानंद संपन्न हुई। दीक्षा समारोह का प्रारंभ प्रात: 9 बजे से दोपहर 2.30 बजे तक चला। लगभग 1200-1300 लोगों की विशाल उपस्थिति दीक्षा विधान के अंत समय तक बनी रही।

दीक्षा महोत्सव में पूज्या साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा एवं पूज्या साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म.सा आदि ठाणा की सानिध्यता प्राप्त हुयी।

मुमुक्षु बहिनों का 26 मई को सांय शंखेश्वर प्रभु के दरबार होते हुए जिन कुशल दादावाड़ी गाजे बाजे सहित मंगल प्रवेश हुआ।

27 मई को मुमुक्षु गीता व मीना का डोरा बंधन हुआ। दादावाड़ी प्रांगण में बाड़मेर, सुरत, नवसारी आदि के उपस्थित संघ दोनों बहिनों का अभिनंदन कर रहे थे। डोरा बंधन के पश्चात मुमुक्षुओं ने पू. साधु भगवंत व पू. साध्वीजी भगवंत को केसर के छांटणा करके अपने हर्ष की अभिव्यक्ति दी।

प्रात: भव्य वर्षीदान वरघोडा का आयोजन हुआ। वरघोड़े में हजार लोगों की उपस्थिति व उनका उल्लास इतनी गर्मी में देखने लायक मनमोहक दृश्य था। साज-बाज के साथ बग्घी में बैठकर सांसारिक वस्तुओं को दान में दिया।

कार्यक्रम की शोभा में अभिवृद्धि के लिए भारत भर के कई गणमान्य नागरिक पधारे थे। आगमवेत्ता डॉ. सागरमलजी जैन ने दोपहर की धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि दिक्षा शब्द अपने आप में अभिनंदनीय है। चैन्नई के मोहनजी मनोजजी ने जिनशासन का महत्व, सयंम जीवन का महत्व और आज के विषम युग में साधु साध्वी किस तरह अपने लक्ष्य की ओर निर्विघ्न बढते है, वह बताया। तो बेंगलोर से पधारे अरविंदजी कोठारी ने धर्मसभा का संचालन करते हुए संयम के महत्व पर प्रकाश डाला। पू. मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. व मनीषप्रभसागरजी म.सा. ने दीक्षा पांडाल में बड़े ही स्पष्ट शब्दों में क्रिया-विधी करवाते हुये दीक्षा के महत्व को परिभाषित किया। उन्होंने कहा कि रियल लाइफ तो दीक्षा की ही है। और रॉल लाइफ संसार की। अपने जीवन को धर्ममय बनाने का पुरूषार्थ करना चाहिये। वह घर भाग्यशाली है। जिस घर में संयमी आत्मा का जन्म होता है। पूज्यश्री ने दोनों दीक्षार्थियों को रजोहरण शुभ मुर्हूत में प्रदान किया गया। इससे पूर्व दिक्षार्थियों के परिवार जन ने विदाई तिलक आदि के भावभीने दृश्य देख सभी की आंखें नत होकर नम हुयी।

संयम वेश धारण करने के पश्चात जब पांडाल में पुन: प्रवेश हुआ तो नूतन दिक्षार्थी अमर रहो की उद्घोषणा के साथ जयकारा किया गया। उन्हें आजीवन सावद्य क्रिया के त्याग का प्रत्याख्यान दिया गया। तथा क्रमश: मुमुक्षु मीना का साध्वी मननप्रियाश्री मुमुक्षु गीता का साध्वी परमप्रियाश्री नाम रखा गया। वे प.पू. कल्पलताश्रीजी म. की शिष्या घोषित की गयी। दीक्षार्थी कु. मीना छाजेड़ के धर्म माता पिता बनने का लाभ श्रीमान बंशीलालजी पुष्पादेवी श्रीश्रीमाल बाड़मेर हाल नवसारी ने व दीक्षार्थी गीता बोथरा के धर्म माता पिता बनने का लाभ श्रीमान बंशीलाल जी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला देवी सिंघवी बाड़मेर हाल ऊंझा वालों ने लिया। इस पावन अवसर पर दिल्ली, मुंबई, कलकता, चेन्नई, इचलकरंजी, बाड़मेर, सुरत, अहमदाबाद, चौहटन, गदग, हैदराबाद, इंदोर, उज्जैन, शाजापुर, महिदपुर, पाली, जोधपुर, ब्यावर, बेंगलोर, नागौर, फलोदी, गांधीधाम, धोरीमना, सांचौर, सिवाना, मोकलसर, बीकानेर आदि विविध स्थानों से गुरू भक्त पधारे।

जटाशंकर

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

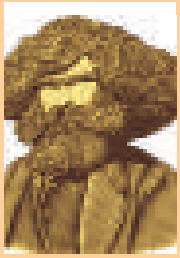

जटाशंकर सामान का थैला लेकर जा रहा था कि सामने से उसे अपना दोस्त घटाशंकर दिखाई दिया। उसने आवाज लगाकर उन्हें रोका और दौड कर उनके पास पहुँचा।

जटाशंकर थोडा हंसी मजाक के मूड में था। उसके मन में आया- आज मैं अपने दोस्त घटाशंकर की परीक्षा कर लेता हूँ।

उसने कहा- आज कुछ परीक्षा वरीक्षा हो जाये। मैं कुछ सवाल करूँगा, उसका जवाब तुझे देना है।

घटाशंकर ने अपनी मूंछों पर ताव दिया और कहा- पूछ ले, जो भी पूछना है।

जटाशंकर ने पूछा- यदि तुम यह बता दो कि मेरे इस थैले में क्या है, तो मैं तुझे इस थैले में रखे टमाटरों में से एक टमाटर भेंट दे दूं।

सुन कर घटाशंकर अपना माथा खुजाने लगा। उसने सोचा- इस बंद थैले को देख कर यह अनुमान कैसे लगाया जा सकता है कि इसमें क्या है! वह सोच में पडा। जवाब देते नहीं बना।

तभी जटाशंकर ने दूसरा सवाल किया- यदि तुम यह बता दो कि मेरे थैले में कितने टमाटर हैं तो मैं इस थैले में पडे सोलह टमाटरों में से पांच टमाटर तुझे इनाम में दे दूं।

यह सवाल सुनकर तो घटाशंकर विचारों में खो गया। तीन मिनट के गहन चिंतन के पश्चात् उसने उत्तर दिया- भाई! जब तक थैले में अन्दर झांक कर देख न लूं तब तक मैं बता नहीं सकता कि इसमें क्या है! और जब तक थैला किसी थाली में खाली न कर दूं और खाली करके अच्छी तरह गिन न लूं, तब तक संख्या का सही पता कैसे लग सकता है!

ऐसे सवालों के जवाब जटाशंकर भले न दे पाया हो, पर अन्य किसी को उत्तर देने में देर नहीं हो सकती। क्योंकि सवाल का जवाब सवाल में छिपा है। सच तो यह है कि जिन्दगी के समस्त सवालों के जवाब भी सवालों में छिपे रहते हैं। पर उसे पढ पाता है कोई कोई... जान पाता है कोई कोई... जान कर समझ पाता है कोई कोई... और समझ कर अपने हृदय में उतार पाता है कोई कोई...!

पालीताणा में दीक्षा दिवस मनाया

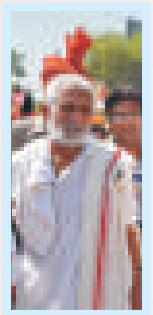

पालीताणा स्थित श्री जिन हरि विहार धर्मशाला में पूज्य गणाधीश उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के शिष्य मुनि मयंकप्रभसागरजी म. मुनि मेहुलप्रभसागरजी म. आदि ठाणा के सानिध्य में दि. 31 मई को पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक श्री मनोज्ञसागरजी म. के शिष्य मुनि कल्पज्ञसागरजी म. के संयम जीवन के चतुर्थ वर्ष प्रवेश पर अभिनंदन किया गया।

संयम जीवन के चतुर्थ वर्ष प्रवेश के उपलक्ष में दुर्ग निवासी श्रीमति शांतिदेवी छाजेड परिवार की ओर से श्री आदिनाथ मंदिर में आदिनाथ पंचकल्याणक पूजा का आयोजन किया गया। जिसमें मिनेश जैन सी.ए., कंचन बाफना, लक्ष्मी गोलछा, नीता बाफना आदि ने उत्साह से भाग लिया।

पूज्य श्री कल्पज्ञसागरजी म. को सभी साधु एवं साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ने संयम जीवन की शुभकामनाएं प्रदान की व दादा गुरुदेव से चारित्र भावों के अभिवृद्धि की कामना की।

गच्छाधिपति चादर समारोह की सुनहरी झलकियाँ

सम्मेलन की घोषणा करते हुए
पूज्य गणाधीशजी म.

मंच संचालन करते हुए
पू. मणिप्रभश्रीजी म.

'गच्छाधिपति' की चादर ओढ़ाते मणिप्रभजी आदि मुनि मंडल

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/3625/2015-2017 Date of Posting 7th

प्रवचन का संग बदला जीवन-रंग

विशेषांक सहयोगी

श्रीजैन श्वेताम्बर मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट, इचलकरंजी

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,

जहाज मन्दिर, मालपुरा - 303042, जिला - जयपुर (राजस्थान)
फोन : 01973-266187 / 266193 फैक्स : 01973-266040, 09414648481

e-mail: jahaj_mandir@yahoo.co.in

www. jahajmandir.com

www.jahajmandir.org